ईकाई –1
संस्कृत भाषा शिक्षण

संस्कृत एक आयातयाम भाषा है। यह भाषा राष्ट्रीय एकता, अखण्डता, नैतिकता, एवं आध्यात्मिकता के महत्व को निरूपित करती हैं। भारतीय संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन हेतु संस्कृत भाषा का ज्ञान परम आवश्यक है। अतः विद्यालयीन कक्षा के पाठयक्रम में संस्कृत भाषा का ज्ञान अपरिहार्य है। वैदिक वाड्.मय से लेकर अद्यतन साहित्य में अनेक विधाओं पर रचना हो रही है। संस्कृत भाषा अपनी प्रा†जलता से अन्य भाषाओं को पुष्ट ही नहीं करती प्रत्युत ललाम बन जाती है।

1. संस्कृत शिक्षण की आवश्यकताएँ

1. संस्कृत की भाषा सरल एवं सरस हो।
2. भाषाई कौशलों का विकास हो।
3. संवाद वाक्य बच्चों के समझ के अनुरूप हो।
4. राष्ट्र के प्रति, संस्कृति के प्रति समादर व भावात्मक एकता का विकास हो।
5. भाषिक तत्वों की प्रयोगात्मक क्षमता बढ़े।
6. नैतिक मूल्यों का विकास हो।
7. संस्कृत में वार्तालाप करने की क्षमता का विकास हो।
8. रोचक कथाओं को पढ़कर घटना क्रम को जोड़ने की क्षमता विकसित हो।
9. अध्यापन बिदुओं पर आधारित रोचक एवं ज्ञानवर्धक अभ्यास हो।
10. प्रश्न निर्माण करने की क्षमता का विकास हो।

2. संस्कृत भाषा शिक्षण के उद्‌देश्य

1. विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा का सामान्य ज्ञान हो ।
2. बोधपूर्वक संस्कृत सुनने, बोलने, पढ़ने व लिखने की क्षमता का विकास हो।
3. संस्कृत भाषा व साहित्य के प्रति अभिरूचि उत्पन्न हो ।
4. विद्यार्थियों का नैतिक, सामाजिक, एवं राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति रूझान बने ।
5. मातृभाषा में संस्कृत शब्दों की पहचान हो सके।

3. संस्कृत भाषा शिक्षण के विशिष्ट उद्‌देश्य

1. संस्कृत की ध्वनियों (वर्ण, पद) का शुद्ध उच्चारण करने की योग्यता उत्पन्न करना।
2. संस्कृत में सरल वाक्य समझने व बोलने की क्षमता विकसित करना ।
3. अर्थबोध के साथ संस्कृत गद्यांश को पढ़ने की क्षमता विकसित करना ।
4. संस्कृत श्लोकों के सस्वर वाचन की योग्यता उत्पन्न करना ।

5. संस्कृत भाषा एवं साहित्य के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करना ।

6. कविता में लय का बोध एवं सराहने की क्षमता विकसित करना ।

7. विद्यार्थियों में सौंदर्य बोध, कल्पनाशीलता तथा चिन्तनशीलता का विकास करना ।

कौशलपरक दक्षताएँ

1. श्रवणम्   2. भाषणम्   3. वाचनम्   4. लेखनम्   5. भाषिकतत्वम्

1. श्रवणम्

कक्षा 8 : 1. विद्यार्थी संस्कृत की विशिष्ट ध्वनियों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे–यथा रामःहरिः

2. रेफ युक्त शब्द का ज्ञान – कृतिः, कर्म क्रमः

3. अनुस्वार, एवं अनुनासिक ध्वनियाँ यथा संस्कारः सङ्.गीतम् ।

4. संयुक्ताक्षर – द्य, द्ध, ध्व, द्धा,. त्र, ज्ञ आदि

5. ऊष्म ध्वनियाँ श, ष, स, ह ।

कक्षा 7 :6. सरल गद्यों एवं पद्यों को सुनकर अर्थ समझ सकेगा तथा संस्कृत कथनों को सुनकर तदनुसार कार्य कर सकेगा ।

कक्षा 8 :7. पूछे गये प्रश्नों का उत्तर संस्कृत में दे सकेगा । नाट्कों और कथाओं को सुनकर भाव ग्रहण कर सकेगा ।

2. भाषणम्

कक्षा 6: 1. संस्कृत के पदों का शुद्ध उच्चारण कर सकेगा, सुभाषित श्लोकों को कंठस्थ कर सुना सकेगा तथा संस्कृत में छोटे–छोटे सरल प्रश्नों का उत्तर दे सकेगा ।

कक्षा 7 : 1. संस्कृत के सरल प्रश्नों का उत्तर दे सकेगा ।

कक्षा 8 : 1. पाठ्यपुस्तक के पठित अंशों का उत्तर संस्कृत में दे सकेगा तथा अपने सहपाठियों से छोटे एवं सरल प्रश्न संस्कृत में पूछ सकेगा ।

2. लघुकथाओं का सारांश संस्कृत में सुना सकेगा तथा छोटे–छोटे संस्कृत संवादों का अभिनय कर सकेगा ।

3. वाचनम्

कक्षा 6 : 1. संस्कृत के सरल गद्यांशों का शुद्ध वाचन कर सकेगा, सुभाषितों का शुद्ध वाचन तथा सरल संस्कृत वाक्यों को पढ़कर प्रश्नों का उत्तर दे सकेगा ।

कक्षा 7 : 1. संस्कृत वाक्य एवं लघु कथाओं का शुद्ध वाचन कर सकेगा तथा संस्कृत के पद्यों का उचित लय के साथ पाठ कर सकेगा।

कक्षा 8 : 1. शुद्ध उच्चारण सहित संस्कृत गद्यांशों का वाचन कर सकेगा तथा विघटित श्लोकों का सस्वर वाचन कर सकेगा ।

4. लेखनम्

कक्षा 6 : 1. पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त प्रश्नों के शब्दों के शुद्ध वर्तनी में तथा संस्कृत के सरल वाक्यों को सुनकर शुद्ध लिख सकेगा ।

कक्षा 7 : 1. संस्कृत में पूछे गये प्रश्नों का उत्तर संस्कृत भाषा में लिख सकेगा तथा चित्र देखकर सरल संस्कृत वाक्य बना सकेगा ।

कक्षा 8 : 1. संकेतों के आधार पर अनुच्छेदों की लघु कथा लिख सकेगा कण्ठस्थ सूक्तियों, श्लोकों, तथा घटनाक्रम के आधार पर वाक्यों को सही क्रम में लिख सकेगा ।

5. भाषिक तत्वम्

कक्षा 6 : 1. संज्ञा व सर्वनाम के साथ क्रिया पदों का सही प्रयोग कर सकेगा, वाक्य में विशेषता के साथ विशेषण का अन्वय कर सकेगा संस्कृत के सरल छोटे छोटे वाक्यों का निर्माण कर सकेगा ।

कक्षा 7 : 1. पठित विषय पर संस्कृत में पॉच वाक्य लिख सकेगा, तथा संज्ञा व क्रियापद में वचन परिवर्तन कर सकेगा ।

कक्षा 8 : 1. संज्ञा व विशेषण के साथ विभक्तियों का प्रयोग कर सकेगा, संज्ञा व विशेषण आदि का प्रयोग करते हुए वाक्य रचना कर सकेगा, वाक्य में कर्तृ पद के अनुसार पाँच लकारों में क्रिया का प्रयोग कर सकेगा। संधि युक्त पदों का संधि विच्छेद कर सकेगा तथा धातुओं के साथ पूर्वकालिक कृदन्त का प्रयोग कर दो वाक्यों को जोड़ सकेगा।

(4) संस्कृत शिक्षण की प्रविधियाँ

1. स्वरोच्चारण विधि
2. अनुकरण विधि
3. ध्वनि साम्य विधि
4. सुनो और बोलो विधि
5. अभ्यास विधि
6. अनुवाद विधि
7. समवाय विधि
8. चित्रवर्णन विधि
9. कहानी कथन विधि
10. शब्दपूर्ति विधि

(1) स्वरोच्चारण विधि :–

1. इस विधि के द्वारा छात्रों में स्वर उच्चारण करने की आदत पैदा होती है ।
2. इस विधि के द्वारा छात्रों में भाषा सीखने की प्रवृत्ति बढ़ती है ।
3. छात्र संस्कृत भाषा के प्रति आकर्षित होते हैं ।
4. छात्रों को वर्णमाला की जानकारी प्राप्त होती है ।
5. इस विधि द्वारा संस्कृत व्याकरण की जानकारी प्राप्त होती है ।

(2) अभ्यास विधि –

1. इस विधि द्वारा छात्रों में लेखन के प्रति रूचि पैदा होती है ।
2. छात्रों की सुलेख के प्रति रूचि बढ़ती है ।
3. यह विधि छात्रों की लिखने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है ।
4. छात्र संस्कृत के कठिन शब्दों को लिखना सीख जाता है ।

(3) ध्वनि साम्य विधि – संस्कृत भाषा की अपनी लय और ध्वनि होती है। भावाभिव्यक्ति को प्रभावपूर्ण बनाने में विराम चिन्हों के उपयोग द्वारा विभिन्न स्थलों पर, उतार चढ़ाव पर बल दिया जाता है। इस विधि में ध्वनियॉ समान होती है । यथा गजेन्द्रः सुरेन्द्रः महेन्द्रः आदि।

ध्वनि साम्य विधि के गुण –

1. इस विधि से संस्कृत भाषा को प्रभावी ढंग से सीखा जा सकता है ।
2. छात्रों को उतार चढ़ाव के साथ भाषा सीखने में सहायता मिलती है ।
3. इस विधि द्वारा छात्रों की भावाभिव्यक्ति सक्षम हो जाती है ।
4. संस्कृत के शब्दों का उचित उच्चारण भी इस विधि के द्वारा पैदा होता हैं।

(4) सुनो और बोलो विधि –

1. इस विधि द्वारा श्रवण कौशल का विकास होता है ।
2. छात्रों के मौखिक अभिव्यक्ति का विकास होता है ।
3. इस विधि द्वारा व्याकरण सम्मत भाषा प्रयोग करने की क्षमता बढ़ती है ।
4. इस विधि के अभ्यास से बोलने के दोष समाप्त हो जाते है ।

(5) अभ्यास विधि – संस्कृत शिक्षण में चाहे नाटक, कविता, गद्य, कहानी, निबंध व्याकरण आदि कोई भी विषय हो उसका सम्यक् ज्ञान छात्रों को हुआ है, या नहीं, इसकी जांच और अभ्यास पर इस विधि में बल दिया जाता है । इसमें कक्षा कार्य व गृह कार्य सम्मिलित हैं।

अभ्यास विधि के गुण –

1. इस विधि द्वारा साहित्य की विभिन्न विधाओं का सम्यक् ज्ञान होता है ।
2. परीक्षण और अभ्यास पर बल दिया जाता है
3. छात्रों में अभ्यास के प्रश्नों को हल करने की प्रवृत्ति बढ़ती है ।
4. कक्षा कार्य व गृह कार्य करने की आदत पुष्ट होती है ।

(6) अनुवाद विधि–संस्कृत शिक्षण की इस विधि में हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद किया जाता है। निम्नलिखित बातें ध्यान रखनी चाहिए :–

1. कारक या विभक्ति के अनुसार संज्ञा, सर्वनाम, एवं विशेषण शब्दों के रूप लिखे जाए।
2. संज्ञा और सर्वनाम के पुरूष, लिंग एवं वचन के अनुसार ही क्रिया का प्रयोग किया जाए।
3. क्रिया का प्रयोग धातु रूपों के अनुसार संबंधित लिंग, वचन एवं पुरूष के अनुसार किया जाए।
4. विशिष्ट अव्यय एवं धातुओं के अनुसार ही विभक्ति एवं कारक का प्रयोग हो ।

(7). समवाय विधि – इस विधि द्वारा संस्कृत के शिक्षण में हिन्दी भाषा का प्रयोग करने से संस्कृत शिक्षण सुगम और सरल हो जाता है । यथा

''गणेशो मXलो, देवो, मXलं तस्यदर्शनम् ।

मXलं स्मरणं ध्यानं, मXलं तस्य पूजनम् ।।

हिन्दी अनुवाद – भगवान श्री गणेश मंगल प्रदान करने वाले हैं उनका दर्शन करना मंगलकारी होता है, तथा उनका पूजन करना अत्यंत मंगलकारी होता है ।

समवाय विधि के गुण –

1. इस विधि द्वारा कई विषयों की जानकारी प्राप्त हो जाती है ।
2. इसके द्वारा समय की बचत होती है ।
3. व्यावहारिक विषयों की सामूहिक शिक्षा दी जाती है ।
4. छात्रों के दृष्टिकोण का सम्यक् विकास होता है ।
5. संस्कृत की शिक्षा सुगम और सरल रूप से दी जाती है ।

(8) चित्र वर्णन विधि – संस्कृत भाषा को विभिन्न सहज सजीव तथा रोचक बनाने के लिए अब निश्चित आधार से पृथक कल्पना की बात करने का अवसर दिया जाता है। इसमें किसी प्रश्न को प्रस्तुत कर स्वतंत्र विचार व्यक्त करने को कहा जाता है । वर्णनात्मक अभिव्यक्ति को सुखद बनाने हेतु चित्र वर्णन का विशेष महत्व है ।

(10) शब्द पूर्ति विधि–

चित्र वर्णन के गुण–

1. छात्रों को संस्कृत में रूचि पैदा होगी ।
2. छात्रों की मानसिक शक्ति का विकास होगा ।
3. छात्रों को चित्रों की सहायता से सार समझ आयेगा। इस विधि से चिन्तन शक्ति, बुद्धि व कौशलों का विकास होगा ।
4. इससे छात्रों का अध्ययन के प्रति उत्साह बढ़ेगा ।

(9) कहानी कथन विधि के गुण–

1. छात्रों को व्याकरण संबंधी ज्ञान प्राप्त होता है ।
2. संस्कृत के प्रति छात्रों की रूचि बढ़ती है ।
3. छात्रों में श्रवण कौशल का विकास होता है ।
4. संस्कृत के प्रति छात्रों में कहानी सुनने की जिज्ञासा बढ़ती है ।

(10) शब्द पूर्ति विधि–

1. छात्रों की मानसिक शक्ति व स्मरण शक्ति का मूल्यांकन होता है ।
2. शब्दपूर्ति द्वारा छात्रों को शब्दों का अधिक ज्ञान होता है ।
3. छात्रों को भावार्थ व सार लिखने में सहायता मिलती है ।
4. इस विधि द्वारा रचनात्मक कार्यो को करने की आदत पड़ती है ।
5. इस विधि द्वारा भाषा संबंधी कठिनाइयॉ दूर होती है ।

(5) संस्कृत भाषा की उपादेयता–

1. **सांस्कृतिक दृष्टि से**–प्रत्येक राष्ट्र की अपनी संस्कृति होती है, यह संस्कृति प्रत्येक राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधती है। भारतीय संस्कृति हमें बतलाती है कि हम एक हैं और हमारी संस्कृति एक है। इस संस्कृति का ज्ञान संस्कृत भाषा से ही संभव है । अतः संस्कृत भाषा का अध्ययन छात्रों के लिए अत्यावश्यक है ।
2. **कलात्मक दृष्टि से–**प्राचीन मूर्तिकला, संगीतकला, नृत्यकला आदि कलाओं का ज्ञान संस्कृत भाषा में उपलब्ध है। अतः विभिन्न कलाओं का ज्ञान व दक्षता हेतु संस्कृत भाषा की उपादेयता परिलक्षित होती है ।
3. **साहित्यिक दृष्टि से–**भारतीय साहित्य का विशद ज्ञान संस्कृत में निहित है अतः संस्कृत भाषा के अध्ययन से अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य का अध्ययन सुगम हो जाता है। संस्कृत भाषा के अध्ययन से छात्र साहित्यिक क्षेत्र में कुशल हो जाते हैं।
4. **भावनात्मक दृष्टि से –** संस्कृत भाषा के अध्ययन से छात्रों में भावनात्मक एकता, नैतिकता और सदाचारिता का विकास होता है । उनमें राष्ट्रीयता की भावना जागृत होती है । वे जातीयता, प्रान्तीयता और भाषावाद से बाहर उठकर भारतीयता के आराधक बन जाते हैं तथा छात्रों में मानव मात्र के कल्याण के लिए ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना जागृत होती है ।
5. **बौद्धिक विकास की दृष्टि से –** संस्कृत भाषा के अध्ययन से छात्रों में भारतीय परिवार, आर्य भाषाओं और आर्येतर द्रविड़ भाषा का ज्ञान हो जाता है। इससे उनकी विश्लेषणात्मक, विचारात्मक और स्मरण शक्ति का विकास होता है।
6. **व्यावसायिक दृष्टि से –** आयुर्वेद, संगीत, मूर्तिकला, ज्योतिष तथा शिक्षण आदि व्यवसायों के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है । आधुनिक काल में भाषा का ज्ञान प्राप्त करने पर उनकी नियुक्ति विद्यालय महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में आसानी से हो सकती है ।

   इस प्रकार संस्कृत भाषा का अध्ययन न केवल व्यक्ति के हित में है अपितु समाज और राष्ट्र के लिए भी उपयोगी है।

इकाई–2
आधार पाठ्यपुस्तक मनोरमा (संस्कृत कक्षा–8)
प्रथमः पाठः

मङ्.गलकामना

प्रभो! देश–रक्षा–बलं मे प्रयच्छ।
नमस्तेऽस्तु देवेश! बुद्धिं च यच्छ।।
सुतास्ते वयं शूर–वीराः भवामः।
गुरून् मातरं चापि तातं नमामः।।

घृणायास्तु नाशः सदैक्यस्य वासः।
भवेद् भारते स्नेहवृत्तेर्विकासः।।
प्रजातांत्रिकं राज्यमस्माकमत्र।
सदा वर्धतां मङ्.गलं यत्र तत्र।।

न कोऽपि क्षुधा–पीडितो मानवः स्यात्।
न रुग्णो न नग्नो न क्षीणश्च तस्मात्।।
न शिक्षा–विहीनञ्च पश्यामः कञ्चित्।
प्रभो! भारतस्योन्नतिःस्यात् कथञ्चित्।।

सुखैः पूर्णमेतद् भवेद् भारतं मे।
भवेदत्र नित्यं प्रभोऽनुग्रहस्ते।।
इयं कामना प्रार्थनैषा विधातः।
इमां पूरयैकाम् अये लोकमातः।।

शब्दार्थाः

मे = मेरा, मुझे। ते = तेरा, तेरे लिए। तातम् = पिता को। सुताः = पुत्र–पुत्रियाँ। स्नेहवृत्तेः = प्रेमभाव का। ऐक्यस्य = एकता का। वर्धताम् = बढ़े। प्रजातांत्रिकम् = जनता का। इयम् = यह। कथञ्च्त् = किसी तरह। लोकमातः = संसार की माता।

अर्थ

(1) हे प्रभो! मुझे देश की रक्षा करने का बल दो। हे देवेश! आपको नमस्कार है, आप मुझे बुद्धि प्रदान करें, हम सभी आपके पुत्र–पुत्रियाँ, पराक्रमी बनें। गुरु, माता और पिता को नमस्कार करते हैं।

(2) घृणा का नाश हो, हमेशा एकता का वास हो। भारत में सदा प्रेमभाव का विकास हो। हमारा यह राज्य प्रजातांत्रिक (जनता का) है। यहाँ सर्वत्र हमेशा मंगल (खुशहाली) बढ़ता रहे।

(3) यहाँ कोई भी व्यक्ति भूख से पीड़ित न हो। यहाँ कोई रोगी, वस्त्रविहीन और निर्धन न हो और कोई यहाँ निरक्षर न होवे। हे प्रभु ! किसी तरह भारत की उन्नति हो।

(4) मेरा भारत सुखों से परिपूर्ण होवे। हे प्रभु! आपकी कृपा यहाँ हमेशा होती रहे। हे विधाता आपसे यही कामना है, यही प्रार्थना है। हे लोकमाता हमारी इस कामना को पूर्ण करें।

अभ्यासप्रश्नाः

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(1) प्रथमे श्लोके कः प्रार्थ्यते?

(2) भारतं मे कीदृशं भवेत्?

(3) भारतस्य सुताः कीदृशाः भवेयुः?

(4) अस्माकं राज्यं कीदृशमस्ति?

(5) नरः कया पीडितो न भवेत्?

(2) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(1) तेरे पुत्र सदा सुखी रहें।

(2) भारत में कोई शिक्षा से रहित न हो।

(3) मनुष्य को तुम भोजन दो।

(4) हम गुरुओं को प्रणाम करें।

(5) सब सुखी हों।

(3) संधि विच्छेद कर प्रकार लिखिए—

सुतास्ते, घृणायास्तु, दीनश्च, नमस्तेऽस्तु, प्रार्थनैषा।

(4) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए—

(1) प्रभो! ....मे प्रयच्छ।

(2) सुतास्ते ....भवाम।

(3) भारते स्नेहवृत्तेः .... ।

(4) सुखैः पूर्णमेतद् ....भारतं मे।

(5) इयं...........................प्रार्थनैषा।

द्वितीयः पाठः
छत्तीसगढस्य लोकगीतानि

अस्माकं छत्तीसगढराज्यस्य लोकभाषासु गीतानाम् अविरलपरम्पराऽअस्ति। अत्र लोकगीतेषु विविधताअस्ति। अस्मिन् राज्ये लोकगीतानि लोकभाषायाम् अवलम्बितानि।

छत्तीसगढस्य लोकगीतेषु संस्कारगीतं, धार्मिकोत्सवगीतं, ऋतुगीतादीनि च प्रचलन्ति। जनाः छत्तीसगढराज्ये संस्काराणाम् अवसरेषु अनेकानि गीतानि गायन्ति। एतेषु गीतेषु सोहरविवाहे गीते च प्रमुखे स्तः। सीमन्तसंस्कारावसरे गेयगीतं 'सधौरीगीतम्' इत्युच्ये। विवाहावसरे लोकाचाराणां परिपालनार्थं गेयगीतानां परम्परा प्रचलति। यथा प्रचलितलोकगीतेषु चूलमाटीगीतं, द्वारचारगीतं, जेवनारगीतं, भाँवरगीतं, विदागीतञ्च् प्रसिद्धानि सन्ति। जनैः एतानि गीतानि छत्तीसगढलोकभाषासु गीयन्ते।

धार्मिकगीतानां विविधानि रुपाणि सन्ति। यथा शिवरामकृष्णानां विवाहगीतानि लोकप्रियाणि। भक्तिगीतेषु भजनानि प्रसिद्धानि। देव्याः जससेवागीतं प्रसिद्धम्।

ऋतुगीतेषु श्रावणभाद्रपदमासे भोजलीगीतं कार्तिकमासे शुकगीतं, गौरागीतादीनि च लोकप्रियाणि। फाल्गुने मासे च दण्डनृत्यं, फागगीतादीनि च अतीवं प्रसिद्धानि।

अस्मिन् राज्ये 'फुगडी' इति लोकक्रीडा प्रसिद्धा। इमां क्रीडां कीडन्त्यः बालिकाः 'फुगडी' इति गीतं गायन्ति।

अत्र प्रचलितं 'बांस' इति गीतं मूलतः गोपालकानां गीतमस्ति। गोचारणसंस्कृतेः अभिव्यक्तिः एतेषां गीतानां माध्यमेन प्रतीयते। 'बांस' इति एकं अद्भुतं वाद्ययन्त्रमस्ति यत् केवलं छत्तीसगढराज्ये एव प्रचलति।

राज्यस्य प्रसिद्धेषु लोकगीतेषु पंडवानीनृत्येन सह गेयपरम्परा विद्यते। अस्मात् कारणात् अस्मिन् राज्ये लोकगीतानां परम्परा वर्तते। अत्र अनेके लोककलाकाराः लोकगीतानां माध्यमेन प्रदेशस्य संस्कृतिं गौरवान्वितं कृतवन्तः। छत्तीसगढस्य जनजीवने लोकगीतानां वैशिष्ट्यम् एतत्। जनाः लोकगीतमाश्रित्य आनंदमनुभवन्ति, स्वकीयं जीवनं उत्सवमयं सृजन्तीति।

शब्दार्थाः

लोकभाषासु = लोकभाषाओं में। अविरल = अटूट/निरंतर। परम्पराअस्ति = परम्परा है। लोकगीतेषु = लोकगीतों में। लोकभाषायाम् = लोकभाषा में। अवलम्बितानि = आधारित है। प्रचलन्ति = प्रचलित हैं। गायन्ति = गाते हैं। गीतेषु = गीतों में। सीमन्त = सोलह संस्कार में से एक संस्कार। जेवनार गीतं = बरातियों के भोजन के समय गाया जाने वाला गीत। विद्यते = है। माध्यमेन = माध्यम से। कृतवन्तः = किये हैं। वैशिष्ट्यम् = विशिष्टता है। लोकगीतमाश्रित्यं = लोकगीतों का आश्रय लेकर। आनंदमनुभवन्ति = आनंद का अनुभव करते हैं। सृजन्ति = बनाते हैं।

अभ्यासप्रश्नाः

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(1) छत्तीसगढराज्ये कानि–कानि लोकगीतानि प्रचलितानि?

(2) सीमन्तसंस्कारावसरे गेयगीतं किम् उच्यते?

(3) जनाः भोजलीगीतं कस्मिन् मासे गायन्ति?

(4) गोपालकानां गीतं किमस्ति।

(5) फाल्गुनमासस्य प्रसिद्धगीतं लिखतु।

(2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(1) अस्मिन् राज्ये लोकगीतानि ....अवलम्बितानि।

(2) देव्याः जसगीतं ....च प्रसिद्धे।

(3) अस्मिन् राज्ये ....इति लोकक्रीडा प्रसिद्धा।

(4) स्वकीयं जीवनं ....सृजन्तीति।

(5) छत्तीसगढस्य जनजीवनं ....वैशिष्ट्यम्।

(3) उचित संबंध जोड़िए–

(1) सधौरीगीतम्	– फाल्गुनमासे
(2) भाँवरगीतम्	– कार्तिकमासे
(3) शुकगीतम्	– विवाहसंस्कारे
(4) फागगीतम्	– क्रीडासमये
(5) फुगड़ी गीतम्	– सीमन्तसंस्कारे

(4) संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) छत्तीसगढ़ में लोकगीतों में विविधता है।

(ख) लोकगीतों को छत्तीसगढ़ी में गाते हैं।

(ग) धार्मिक गीतों के विविध रूप हैं।

(घ) 'बांस' एक अद्भुत् वाद्ययंत्र है।

(ड.) पण्डवानी को नृत्य के साथ गाने की परम्परा है।

(5) सन्धि विच्छेद करते हुए नाम लिखिए–

(क) धार्मिकोत्सवः   (ग) विवाहावसरे

(ख) इत्युच्यते   (घ) गीतमस्ति

(ड.) ऋतुगीतञ्च

(6) इस पाठ में प्रयुक्त 'गै' धातु के रूप लट्लकार में लिखिए।

(7) इस पाठ में आये हुए इकारान्त शब्द 'संस्कृति' शब्द का रूप सभी विभक्तियों में लिखिए।

तृतीयः पाठः
अनुशासनम्

अनु उपसर्गपूर्वकं "शास्" धातोः अनुशासनम् इति शब्दः निर्मितः। अस्य अभिप्रायः शासनानुसरणम् नियमपूर्वकं कार्यं वा। अतः नियमानां पालनमेव अनुशासनम्। आत्मनियंत्रण –मेवानुशासनम्।

अनुशासनस्य द्वौ भेदौ स्तः, आंतरिकं वाह्यं च। वाह्यानुशासनं परिवारेषु विद्यालयेषु च परिलक्ष्यते। आत्मानुशासनमेव दृढम् अनुशासनमभिधीयते। आत्मानुशासितमानवः संयमशीलः भवतीति। संयमशीलः शरीरबुद्धि–मनांसि नियंत्रयति। आत्मानुशासनम् कल्याणप्रदमस्ति।

अनुशासनं बिना समाजस्य राष्ट्रस्य वा उन्नतिः न संभवति। मानवजीवने अनुशासनं महत्वपूर्णमस्ति। यथा सृष्टेः कार्यम् अनुशासनेनैव सञ्चाल्यते तथैवं जनानां जीवनं अनुशासनाद् ऋते कदापि सञ्चाचलयितुं न शक्यते। अनुशासनेनैव जीवनं सुव्यवस्थितं परिलक्ष्यते। सुव्यवस्थित–जीवनमेव विकासस्तम्भः अस्ति। अनुशासनेन कर्तव्यअधिकारयोः बोधो भवति। अतः अनुशासनम् उन्नत्याः द्वारमस्ति। अनुशासनेन व्यवहारे शीलं–सत्यं विनयच्च संवर्ध्यन्ते।

छात्रजीवने अनुशासनस्य सर्वाधिकं महत्वमस्ति। छात्रजीवने एव भविष्यमवलम्बितमस्ति। अनुशासनप्रियाः छात्राःसाफल्यं प्राप्नुवन्ति। विद्यार्थिनः गृहे–विद्यालये क्रीडाङ्.गणे च अनुशासनं गृह्णन्ति। समयानुकूल–पठनं, विद्यालयगमनं, क्रीडनं गृहकार्यच्च सम्पादितव्यम्। गुरुमातृपितृणाम् आदरः कर्तव्यः। एतेषां कर्तव्यानां पालनमेव अनुशासनम् इति। यातायातनियमपरिपालनं, विद्यालयनियमपरिपालनं, गृहनियमपरिपालनं वा अनुशासनम् एव। अनुशासितछात्राः विनयशीलाः धैर्यशीलाः, संयमशीलाश्च भवन्ति।

उच्छृङ्.खलत्वं कदापि साफल्यप्रदं न भवति।

अतएव अनुशासनं सुजीवनस्य कुञ्जिकाअस्ति। अनुशासनं व्यक्तित्वविकासस्य सशक्तसाधनमस्ति। अनुशासनेन आचरणे 'सत्यं, शिवं, सुंदरम्' इति उक्तिः चरितार्था भवति। अनुशासनस्य वैशिष्ट्यं सर्वे स्वीकुर्वन्ति। यद् अनुशासनं ऋते जीवनं शून्यमस्ति। अतएव अस्माभिः सर्वतोभावेन अनुशासनं परिपालनीयमिति।

शब्दार्थाः

अनुसरति = पीछे चलना या अनुसरण करना। आत्मनियंत्रणम् = अपने को वश में रखना। शक्यते = सकता है। विकासस्तम्भः = विकास का आधार। संचाल्यते = संचालित होता है। परिलक्ष्यते = दिखाई देता है। साफल्यम् = सफलता। क्रीडनम् = खेलना। उच्छृङ्.खलत्वम् = उद्दण्डता। स्वीकुर्वन्ति = स्वीकार करते हैं। ऋते = बिना। सर्वतोभावेन = समग्रभाव से।

अभ्यासप्रश्नाः

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(1) अनुशासनम् इति शब्दः कथं निर्मितः?

(2) आत्मानुशासितः मानवः कीदृशः भवति?

(3) अनुशासनेन किं संवर्ध्यते?

(4) अनुशसनप्रियछात्रः किं प्राप्नोति?

(5) अनुशासन इति शब्देन का उक्तिः चरितार्था?

(2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(1) अतः नियमानां ....अनुशासनम्।

(2) आत्मानुशासनम् ....भवति।

(3) अनुशासनम् उन्नत्याः ....अस्ति।

(4) उच्छृङ्.लत्वं कदापि .... न भवति।

(5) अनुशासनस्य .... सर्वे स्वीकुर्वन्ति।

(3) (अ) संधि विच्छेद कर प्रकार लिखिए–

(1) आत्मानुशासनम् (2) सर्वाधिक

(3) गृहकार्यच्च (4) पालनमेव (5) शून्यमस्ति

(ब) समास विग्रह कर समासों के नाम लिखिए–

(1) आत्मनियंत्रणम् (2) मानवजीवने

(3) शीलसत्यम् (4) समयानुकूलं

(4) संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(1) मानव जीवन में अनुशासन महत्वपूर्ण है।

(2) नियमों का पालन अनुशासन है।

(3) अनुशासन सफलता की कुंजी है।

(4) अनुशासित छात्र विनयशील होता है।

(5) हमें अनुशासन का पालन करना चाहिए।

चतुर्थः पाठः
सुभाषितानि

1. यथा खनन् खनित्रेण नरोवार्यधिगच्छति।
तथा गुरुगतां विद्यां शुश्रूषुरधिगच्छति।।

2. आचार्यों ब्रह्मणो मूर्तिः पिता मूर्तिः प्रजापतेः।
माता पृथिव्याः मूर्तिस्तु भ्राता स्वोमूर्तिरात्मनः।।

3. आदौ माता गुरोः पत्नी ब्राह्मणी राजपत्निका।
धेनुर्धात्री तथा पृथ्वी सप्तैता मातरः स्मृताः।।

4. अन्नदाता भयत्राता विद्यादाता तथैव च।
जनिता चोपनेता च पच्चैते पितरः स्मृताः।।

5. सत्यं माता–पिता ज्ञानं धर्मों भ्राता दया सखा।
शान्तिः पत्नी क्षमापुत्रः षडेते मम बान्धवाः।।

6. रुपयौवनसम्पन्ना विशालकुलसम्भवाः।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धाइव किंशुकाः।।

7. नमन्ति फलिनो वृक्षाः नमन्ति गुणिनो जनाः।
शुष्कवृक्षाश्च मूर्खाश्च न नमन्ति कदाचन।।

8. को नायाति वशं लोके मुखे पिण्डेन पूरितः।
मृदङ.गेऽपि मुख लेपेन करोति मधुरध्वनिः।।

9. पयसा कमलं कमलेन पयः, पयसा कमलेन विभाति सरः।
मणिना वलयं वलयेन मणिः, मणिना वलयेन विभाति करः।
शशिना च निशा निशया च शशी, शशिना निशया च विभाति नभः।
कविना च विभुः विभुना च कविः, कविना विभुना च विभाति सभा।

10. नरके गमनं श्रेष्ठं दावाग्नौ दहनं वरम्।
वरं प्रपतनं चाब्धौ न वरं परशासनम्।

शब्दार्थाः

1. खनन् = खोदता हुा, खनित्रेण = कुदाल से, नरोवार्यधिच्छति = (नरः+वारि+अधिगच्छति), नरः = मनुष्य, वारि = जल, अधिगच्छति = प्राप्त करना है तथा = उसी प्रकार, गुरुगताम् = गुरु में विद्यमान, शुश्रूषुः = गुरु की सेवा में लगा हुआ।
2. ब्रह्यणः = ब्रह्य का, मूर्तिः = शरीर, (स्वरुप), प्रजापतेः = ब्रह्य का, पृथिव्याः = पृथ्वी का, स्वः = अपना, (सगा)।
3. आदौमाता = सगी माँ (जिसके गर्भ से जन्म हुआ), गुरोः = गु+ की, ब्राह्यणी = ब्राह्यण की पत्नी, राजपत्निका = राजा की पत्नी धात्री = धाय माँ (दूध पिलाने वाली दाई), सप्तैता = (सप्त + ऐता) ये सात, स्मृताःकही गयी हैं।

4. अन्नदाता = अन्न या भोजन देने वाला, भयत्राता = भय से बचाने वाला, जनिता = जन्म देने वाला (सगा पिता), चोपनेता = (च+उपनेता) और उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार करने वाला।

5. बान्धवाः = परिवार,

6. विशालकुल = उत्तमकुल, सम्भवाः = उत्पन्न, निर्गन्धा = सुगंधहीन, इव = के समान, किंशुकाः = टेसू के फूल।

7. नमन्ति = झुकते हैं मूर्खाः = मूर्ख लोग, कदाचन् = कभी नहीं, शुष्क = सूखा।

8. नायाति = (न+आयाति) नहीं आता है, पिण्डेन = भोजन से, पूरितः = भर देना।

9. पयसा = जल से, विभाति = शोभा देता है, वलयम् = कंगन, विभुः = स्वामी, राजा।

10. दावाग्नौ = जंगल की आग, प्रपतनं = डूबना, परशासनम् = परतंत्रता।

अर्थ

1. कुदाल से खोदता हुआ मनुष्य जैसे जल प्राप्त करता है, उसी प्रकार गुरु की सेवा में लगा हुआ (मनुष्य) गुरु में विद्यमान विद्या प्राप्त कर लेता है।

2. आचार्य ब्रह्म का स्वरुप है। पिता ब्रह्म का स्वरुप है। माता पृथ्वी का स्वरुप है और भाई अपना ही स्वरुप है।

3. अपनी जननी, गुरु–पत्नी, ब्राह्मण–पत्नी, राजा की पत्नी, गाय, धात्री (धाय माँ) और पृथ्वी ये सात माताएँ कही गयी हैं।

4. अन्न देने वाला, भय से बचाने वाला, विद्या पढ़ाने वाला, जन्म देने वाला और यज्ञोपवीत आदि संस्कार करने वाला–ये पाँच पिता कहे गए हैं।

5. सत्य मेरी माता है ज्ञान पिता है, धर्म भाई है, दया मित्र है, शांति स्त्री है और क्षमा पुत्र है। ये छः मेरे बान्धव (परिवार) हैं।

6. जो विद्याहीन हैं, वे यदि रूप और यौवन से सम्पन्न हों तथा उच्च कुल में उत्पन्न हुए हों तो भी गंधहीन टेसू के फूल की तरह शोभा नहीं पाते।

7. फलदार वृक्ष झुक जाते हैं। गुणवान लोग झुक जाते हैं। सूखे वृक्ष और मूर्ख लोग कभी नहीं झुकते।

8. इस संसार में कौन (मुख में) भोजन देने से वश में नहीं आ जाता है क्योंकि मृदङ्. के मुख में लेप करने से वह भी मधुर ध्वनि करता है।

9. जल में कमल, कमल से जल, जल कमल से है शोभा सर की।
मणि से कंगन, कंगन से मणि, मणिकंगन से शोभा कर की।
शशि से निशा, निशा से शशि, शशि निशा से है शोभा नभ की।
कवि से राजा, राजा से कवि, कवि राजा से शोभा सभा की।

10. नरक में जाना श्रेष्ठ है, जंगल की आग में जल जाना अच्छा है, समुद्र क अगाध जल में डूब जाना भी उत्तम है किंतु परतंत्र रहना अच्छा नहीं है।

अभ्यासप्रश्नाः

(1) नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) कःगुरुगतो विद्याम् अधिगच्छति?

(ख) माता कस्याः मूर्ति?

(ग) निर्गन्धा किंशुकाः इव के न शोभन्ते?

(घ) मृदड्.गो मुखलेपेन किं करोति?

(ड.) सरः केन विभाति?

(2) उचित संबंध जोड़िए–

(1)	खनन खनित्रेण	– न वरं
(2)	सप्तैता	– गुणिनो जनाः
(3)	पितरः	– विद्याहीना
(4)	न शोभन्ते	– मातरः
(5)	परशासनम्	– वार्यधिगच्छति
(6)	नमन्ति	– विभाति नभः
(7)	शशिना निशया च	– प†चैते

(3) संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(अ) आचार्य ब्रह्म का रूप है।

(ब) विद्याहीन व्यक्ति शोभित नहीं होता।

(स) सूखे वृक्ष और मूर्ख लोग कभी नहीं झुकते।

(द) मृदड्.ग के मुख में लेप करने से वह भी मधुर ध्वनि करता है।

(इ) मणि और कंगन से हाथ शोभा देता है।

(4) (क) संधि कीजिए और संधि का नाम लिखिए–

वारि + अधिगच्छति =..................................

शुश्रूषु + अधिगच्छति =..................................

मूर्तिः + आत्मनः =..................................

(ख) संधि विच्छेद कीजिए

सप्तैता

चोपनेता

चाब्धौ

(5) निम्नलिखित धातुओं के रुप निर्देशानुसार लिखिए–

शुभ् (शोभ्)	लोट्.लकार	– उत्तम पुरुष
नम्	लट् लकार	– अन्य पुरुष
कृ	लड्.लकार	– प्रथम पुरुष

(6) श्लोक क्र. 3, 6 और 9 का अर्थ लिखिए तथा कण्ठस्थ कीजिए।

पञ्चम:पाठः

डॉ.सर्वपल्लीराधाकृष्णन्

डॉ.राधाकृष्णन् महाभागः अस्माकं देशस्य द्वितीयो राष्ट्रपतिः आसीत्। तस्य जन्म तमिलनाडु राज्ये 1888–खीस्ताब्देः सितम्बर मासस्य पच्चमदिनाक्ड्‌े. अभवत्। तस्य पिता वीरस्वामीउय्या एकः शिक्षकः आसीत्। तस्य माता अत्यन्तं धर्मपरायणा आसीत्।

राधाकृष्णन् महोदयस्य प्रारम्भिकी शिक्षा स्वग्रामे एव अभवत्। आरम्भे सः पितुः संरक्षणे निर्देशने च विद्याभ्यासम् अकरोत्। सः मद्रासस्य क्रिश्चियन कालेजनामकमहाविद्यालये उच्चशिक्षां गृहीतवान्। स तत्र एव 1911 ईशवीये स्नातकोत्तर (एम.ए.) परीक्षाम् उत्तीर्णवान्। तस्य मुख्यविषयः दर्शनशास्त्रम् आसीत्।

डॉ.राधाकृष्णन् महाभागः स्वभावेन शिक्षकः आसीत्। सः सुदीर्घकालं यावत् शिक्षणकार्यम् अकरोत्। सःशिक्षायाः उच्चपदानि अलङ्.कृतवान्। सः 1921 तमे वर्षे कोलकाताविश्वविद्यालये दर्शनविषयस्य प्राध्यापकः आसीत्। राधाकृष्णन् महाशयः 1931 ईशवीये आन्ध्रविश्वविद्यालयस्य उपकुलपतेः पदम् अलङ्.कृतवान्। ततः नववर्षाणि (1939–1948) यावत् तेन काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य कुलपतिपदं सुशोभितम्। डॉ. राधाकृष्णन् सर्वकारेण उच्चशिक्षायोगस्य अध्यक्षपदे अपि नियुक्तः।

राजनीतिक्षेत्रे अपि राधाकृष्णन् महोदयस्य महत् योगदानम् आसीत्। 1950 तमे वर्षे रूसदेशे राजदूतस्य पदे तस्य नियुक्तिः जातः। सः 1952 ईशवीये भारतस्य उपराष्ट्रपतिः जातः तत्पश्चात् तेन राष्ट्रपतेः पदम् अलङ्.कृतम्।

राधाकृष्णन् महाभागः भारतीयदर्शनस्य पाश्चात्यदर्शनस्य च महान् पण्डितः आसीत्। सः दर्शनविषयस्य अनेकानि पुस्तकानि अरचयत्। दार्शनिकरूपेण तस्य ख्यातिः विदेशेषु अपि प्रसरिता।

इत्थं राधाकृष्णन् महोदयस्य अखिलं जीवनम् एका विशाला कर्मभूमिः। सः आदर्शशिक्षकः महान् शिक्षाविद्–राजनीतिपटुः, विख्यातो दार्शनिकः विशिष्टो देशभक्तः चिन्तकश्च आसीत्। तस्य व्यक्तित्वस्य सर्वाधिकप्रशंसनीयं रूपं तस्य चतुर्दशवर्षाणां सेवां न हि कोऽपि कदापि विस्मरिष्यति। अद्यापि श्रीराधाकृष्णन् महाभागस्य जन्मदिवसम् अस्माकं कृतज्ञो देशः शिक्षकदिवसरूपेण आयोजयति। तदीयाम् असाधारणसेवां विशिष्टं व्यक्तित्वं च उपलक्ष्य भारत राष्ट्रेण सः भारतरत्नम् इति सर्वोच्चालङ्. करेण सम्मानितः।

शब्दार्थाः

धर्मपरायणा = धर्म में विश्वास करने वाली। सर्वकारेण = सरकार द्वारा। ख्याति = कीर्ति (प्रसिद्धि)। अखिलम् = सम्पूर्ण। प्रसरिता = फैली। कृतज्ञः = आभारी। गृहीतवान् = ग्रहण किया।

अभ्यासप्रश्नाः

(1) संस्कृत में उत्तर दीजिए–

(क) अस्माकं देशस्य द्वितीयो राष्ट्रपतिः कः आसीत्?

(ख) राधाकृष्णन् महोदयस्य माता कीदृशी आसीत्?

(ग) डॉ.राधाकृष्णन् भारतस्य उपराष्ट्रपतिः कदा अभवत्?

(घ) राधाकृष्णन् महाभागः भारत राष्ट्रेण केन पुरस्कारेण सम्मानितः?

(2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) सःशिक्षायाः उच्च पदानि ....।

(ख) ....अपि राधाकृष्णन् महोदयस्य महद्योगदानम् आसीत्।

(ग) दार्शनिकरूपेण तस्य ....विदेशेषु अपि प्रसृता।

(3) संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) डॉ.राधाकृष्णन् एक महान् पुरुष थे।

(ख) वे महान् दार्शनिक थे।

(ग) हम लोग उनका आदर करते हैं।

(घ) उन्होंने देश की सेवा की थी।

(4) (क) निम्नलिखित पदों की संधि कर प्रकार लिखिए–

माता+अत्यन्तम्   विषयस्य+अनेकानि

(ख) निम्नलिखित पदों का संधि–विच्छेद कीजिए–

सर्वाधिकम्, सर्वोच्च, सर्वोच्चालङ्.ाकरेण

(5) निम्नलिखित पदों लड़्कारेण वचन बताइये–

देशस्य, शिक्षकः, शिक्षायाः, पुस्तकानि, तेन।

षष्ठ:पाठः

प्राच्यनगरी सिरपुरम्

सिरपुरं दक्षिणकौशलस्य राजधानी आसीत्। पुरा अस्य नाम श्रीपुरम् इति ख्यातम्। सिरपुरम् रायपुरात् 85 (प†चाशीतिः) किलोमीटर दूरे उत्तरपूर्वदिशि महानद्यास्तीरे विद्यते। इयं नगरी पाण्डुवंशीयानां राज्ञां राजधानी आसीत्। अत्र स्थित्वा पाण्डुवंशीयनृपाः दक्षिणकौशलराज्यान्तर्गते शासति स्म। ते कौशलाधिपतिरिति उपाधिना अलड्.कृताः अभवन्।

सिरपुरे अनेकानि दर्शनीयमन्दिराणि सन्ति। तानि मन्दिराणि ख्यातिलब्धानि। महानद्याः तटे गन्धेश्वर महादेवमंदिरम् अतिरमणीयमस्ति। श्रावणमासे तीर्थयात्रिणः वहनिकायां जलं आनयन्ति। तज्जलं शिवं प्रति अर्पयन्ति पूजयन्ति च। मन्दिरस्य बाह्यभित्तेः गन्धर्वदेवीदेवानां, अप्सराणाम् अटितचित्राणि मनांसि रच्जयन्ति।

सप्तम्यां शताब्द्यां निर्मितं लक्ष्मणमन्दिरं रक्तेष्टिकयां शोभते। अत्र इष्टिकायां अपि मूर्तयः उत्कीर्णाः सन्ति एतद् मन्दिरं श्रीपुरनरेशस्यशिवगुप्तस्य मात्रा निर्मितम्। तस्याः नाम महाराज्ञी वासटा आसीत्। सा वैष्णवी आसीत्। तया इदम् मन्दिरं स्वपतेः महाराजहर्षगुप्तस्य स्मृत्यां निर्मितम्। इदं मन्दिरं विष्णुमन्दिरमासीत्। कालान्तरे तन्मन्दिरं लक्ष्मणमन्दिरस्य नाम्ना विख्यातम्। लक्ष्मणमन्दिरं निकषा राममन्दिरमस्ति। अस्य मन्दिरस्य स्वभव्यता अद्वितीयास्ति। अत्र बौद्धविहार–स्वास्तिक–विहारयोः अवशेषौ प्राप्तौ। बौद्धविहारे भगवतः बुद्धस्य विशालप्रतिमा प्रतिष्ठिता। यस्य सर्जकः भगवतः बुद्धस्य प्रियशिष्यः बौद्धभिक्षुः आनन्दप्रभुः आसीत्।

सिरपुरस्य भव्य संग्रहालयोऽपि दर्शनीयोअस्ति। संग्रहालये शैव–वैष्णव–बौद्ध –जैनसम्प्रदायानां विविधाः प्रतिमाः विद्यन्ते। हर्षवर्द्धनस्य काले चीनीयात्री ह्वेनसांग भारतं समायातः। तेन श्रीपुरस्य श्रीसमृद्धयोः वर्णनं कृतम्। एतत् छत्तीसगढस्य प्रमुखपर्यटनस्थलमस्ति।

प्रतिवर्षे अत्र बुद्धपूर्णिमावसरे सिरपुरमहोत्सवः समायोज्यते। अस्मिन् अवसरे देशविदेशानां अनेके कलानुरागिणः आयान्ति। सिरपुरं छत्तीसगढराज्यस्य प्रसिद्धं धार्मिकं ऐतिहासिक†चकेन्द्रमस्ति। ऐतिहासिकदृष्ट्या सिरपुरं छत्तीसगढराज्यस्य काशी इति अभिधीयते।

शब्दार्थाः

ख्यातः = प्रसिद्ध हुआ। शासति स्म = शासन करते थे। उपाधिना = उपाधि से। अलड्.कृताः = विभूषित हुए। ख्यातिलब्धानि = प्रसिद्ध हैं। महानद्यास्तीरे = महानदी के किनारे। वहनिकायाम् = काँवर में। आनयन्ति = लाते हैं। तज्जलम् = तत्+जलम् = उस जल को। अर्पयन्ति = अर्पित करते हैं। बाह्यभित्तेः = बाहर की दीवाल में। मनांसि = मन को। रक्तेष्टिकायाम् = लाल ईंटों में। उत्कीर्णाः = खुदे हुए। निकषा = समीप। सर्जकः = निर्माता। भव्यसड्.ग्रहालयोऽपि = विशाल सड्.ग्रहालय भी। समायातः = आया। समायोज्यते = आयोजन किया जाता है। कलानुरागिणः = कलाप्रेमी। अभिधीयते = नाम से जाना जाता है।

अभ्यासप्रश्नाः

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) सिरपुरं कस्य राजधानी आसीत्?

(ख) सिरपुरस्य पुरा नाम किम् आसीत्?

(ग) तीर्थयात्रिणः केन जलं आनयन्ति?

(घ) मन्दिरे कानि–कानि चित्राणि सन्ति?

(ङ.) महाराज्ञी वासटा कस्य माता आसीत्?

(2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) सिरपुरं रायपुरात् ....दिशि विद्यते।

(ख) सिरपुरे अनेकानि ....सन्ति।

(ग) तज्जलम् ....अर्पयन्ति।

(घ) इदम् मंदिरं ....स्मृत्यां निर्मितम्।

(ङ.) एतत् छत्तीसगढस्य ....पर्यटनस्थलमस्ति।

(3) संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) लक्ष्मण मंदिर लाल ईटों से बना है।

(ख) सिरपुर महानदी के किनारे स्थित है।

(ग) सिरपुर का संग्रहालय दर्शनीय है।

(घ) यह पहले विष्णु मंदिर था।

(ङ.) सिरपुर को छत्तीसगढ़ का काशी कहा जाता है।

(4) निम्नलिखित का संधि विच्छेद कीजिए–

तज्जलम्, संग्रहालयोऽपि, नद्यास्तटे, तन्मन्दिरम्।

(5) निम्नलिखित शब्द रुपों के विभक्ति व वचन लिखिए–

	विभक्ति	वचन
1. राज्ञाम्	....	....
2. मन्दिराणि	....	....
3. वहनिकायां	....	....
4. पत्युः	....	....
5. मन्दिरस्य	....	....
6. सङ्.ग्रहालये	....	....

सप्तमःपाठः

गीतागड्.गोदकम्

(श्री कृष्ण जी के श्रीमुख से निकली गीता एक अनुपम ग्रंथ है जिसका प्रतीक शब्द पीयूष है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए छात्रों के अध्ययनार्थ गीता के इन श्लोकों का संकलन किया गया है।)

श्लोकाः

(1) अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना।
परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन्।।

(2) पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।।

(3) अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्।।

(4) सुख दुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।।

(5) सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

(6) विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहड्.कारः स शान्तिमधिगच्छति।।

(7) कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोअभिभवत्युत।।

(8) न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत्स्वयं योगसंसिद्ध कालेनात्मनि विन्दति।।

(9) ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेअर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।।

शब्दार्थाः

(1) चेतसा = चित्त से। नान्यगामिना = (न अन्य गामिनां) दूसरी ओर न जाने वाला। अनुचिन्तयन् = निरंतर चिंतन करते हुए। याति = प्राप्त होता है। पार्थ = अर्जुन।

(2) तोयम् = जल। प्रयच्छति = अर्पण करता है, देता है। प्रयतात्मनः = सगुणरूप से प्रगट होकर। अश्नामि = खाता हूँ।

(3) समायुक्तः = संयुक्त। चतुर्विधम् = चार प्रकार के। पचामि = पचाता हूँ। वैश्वानरो = वैश्वानर अग्नि रुप।

(4) युज्यस्व = तैयार रहो, जुड़ जाओ। अवाप्स्यसि = प्राप्त करोगे।

(5) परित्यज्य = त्याग कर। शरणं व्रज = शरण में आजा। मोक्षयिष्यामि = मुक्त कर दूँगा। मा शुचः = शोक मत कर।

(6) विहाय = त्यागकर। कामान् = इच्छाओं को, कामनाओं को। निर्ममो = ममतारहित। निरहङ. कार = अहंकार रहित। अधिगच्छति = प्राप्त होता है।

(7) क्षये = नष्ट होने पर। प्रणश्यन्ति = नष्ट हो जाते हैं। कृत्स्नं = सम्पूर्ण। अभिभवति = फैल जाता है। उत = बहुत।

(8) सदृशम् = के समान। इह = संसार। योगसंसिद्धः = कर्मयोग के द्वारा पूर्ण सिद्ध किया हुआ। आत्मनि = अपने आप ही आत्मा में। विन्दति = पा लेता है।

(9) सर्वभूतानाम् = सभी प्राणियों के। हृद्देशे = हृदय प्रदेश में। तिष्ठति = स्थित है। भ्रामयन् = भ्रमण कराता हुआ। यन्त्रारूढानि = यन्त्र में आरूढ हुए।

अर्थः

(1) हे पार्थ! यह नियम है कि परमेश्वर के ध्यान के अभ्यास रूप योग से युक्त, दूसरी ओर न जाने वाले चित्त से निरंतर चिन्तन करता हुआ मनुष्य परम प्रकाश रूप दिव्य पुरुष को अर्थात् परमेश्वर को ही प्राप्त होता है।

(2) जो कोई भक्त मेरे लिये प्रेम से पत्र, पुष्प, फल, जल आदि अर्पण करता है। उस शुद्ध बुद्धि निष्काम प्रेमी भक्त का प्रेमपूर्वक अर्पण किया हुआ वह पत्र–पुष्पादि को मैं सगुण रूप से प्रगट होकर प्रीति सहित खाता हूँ।

(3) मैं ही सब प्राणियों के शरीर में स्थित रहने वाला प्राण और अपान से संयुक्त वैश्वानर अग्निरूप होकर चार (भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, चोष्य) प्रकार के अन्न को पचाता हूँ।

(4) जय–पराजय, लाभहानि, सुख–दुःख को समान समझकर, उसके बाद युद्ध के लिए तैयार हो जा, इस प्रकार युद्ध करने से तुझे पाप नहीं लगेगा।

(5) सम्पूर्ण धर्मों को अर्थात् सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मों को मुझमें त्यागकर तू केवल एक मुझे सर्वशक्तिमान्, सर्वाधार परमेश्वर की ही शरण में आजा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर।

(6) जो पुरुष सम्पूर्ण कामनाओं को त्याग कर ममता रहित, अहंकार रहित और स्पृहारहित हुआ विचरता है वह शांति प्राप्त करता है।

(7) कुल के नाश से सनातन कुल–धर्म नष्ट हो जाते हैं, धर्म के नष्ट हो जाने से सम्पूर्ण कुल में पाप भी बहुत फैल जाता है।

(8) इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है। उस ज्ञान को कितने ही काल से कर्मयोग के द्वारा शुद्धान्तःकरण हुआ मनुष्य अपने–आप ही आत्मा में पा लेता हैं।

(9) हे अर्जुन! शरीर रूप यंत्र में आरूढ़ हुए सम्पूर्ण प्राणियों को अंतर्यामी परमेश्वर अपनी माया से उसके कर्मों के अनुसार भ्रमण कराता हुआ सब प्राणियों के हृदय में स्थित है।

अभ्यासप्रश्नाः

(1) संस्कृत भाषा में निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(1) जनाः ईश्वरस्य प्राप्त्यर्थं किं कुर्वन्ति?

(2) सत्पुरुषाः सुखदुःखे किं मन्यन्ते?

(3) मुक्तेः उपायः कः?

(4) कः पुरुषः शान्तिमाधिगच्छति?

(5) धर्मे नष्टे किं भवति?

(2) निम्नांकित श्लोक के रिक्त पदों की पूर्ति कीजिए–

(अ) पत्रं पुष्पं फलं तोयं ....।
तदहं ....प्रयतात्मनः।।

(ब) ....लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युध्दाय युज्यस्व ....।।

(स) कुलक्षये प्रणश्यन्ति ....।
..................कृत्स्नमधर्मोअभिभवत्युत।।

(द) ईश्वरः सर्वभूतानां ....।
.....................यन्त्रारुढ़ानि मायया।।

(3) निम्न सामासिक पदों का विग्रह कीजिए–

जयाजयौ, देहमाश्रितः, लाभालाभौ, कुलक्षये।

(4) निम्न शब्दों के संधि विच्छेद कर प्रकार बताइये–

पचाम्यन्नम्, यन्त्रारुढ़ानि, मामेकं, पवित्रमिह

(5) विभक्ति रूप लिखिए–

शान्तिम्, युध्दाय, धर्माः कालेन

(6) निम्न पदों में धातु और प्रत्यय अलग कीजिए–

भूत्वा, विहाय, प्रयच्छति, विद्यते

(7) संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(1) सुख–दुःख समान है।

(2) ईश्वर सब के हृदय में निवास करते हैं।

(3) अन्न चार प्रकार के होते हैं।

(4) मानव शान्ति चाहता है।

(5) गीता गाने योग्य है।

(8) श्रीमद्भगवद्गीता का प्रारंभिक ज्ञान छात्रों को आरंभ में दिया जाना उचित होगा।

अष्टमः पाठः
ग्राम्यजीवनम्

ग्राम्यजीवनं सुव्यवस्थितं भवति। ग्रामे प्रायेण सर्वे स्वस्थाः भवन्ति। वनेषु नगरेषु च तथा जीवनं न भवति। वस्तुतः ग्रामाः वननगरयोः मध्ये सन्ति। ग्रामीणाः प्रायेण कृषीवलाः भवन्ति। ते च प्रातःकालात् सायं यावत् क्षेत्रेषु कर्म कुर्वन्ति। क्षेत्राणि परितः वारिणा–पूर्णाः कुल्याः भवन्ति। कृषकाः क्षेत्राणि हलेन कर्षन्ति। कुल्याजलेन तानि सिञ्चन्ति, तत्र बीजानि वपन्ति च।

ग्रामान् परितः शस्यश्यामला धरित्री राजते। परिश्रमशीलाः ग्रामीणाः धान्यादिकम् उत्पादयन्ति। वैज्ञानिकोपकरणानां साहाय्येन इदानीं कृषिव्यवसायः लाभप्रदः स†जातः।

ग्रामपथिकानां गोपालानां च सड्.गीतेन हृदयः प्रसन्नः भवति। वृक्षाः निःस्वार्थमेव फलं छायां च प्रयच्छन्ति। ग्रामे शुक–हंस–मयूर–कोकिलादयः पक्षिणः कूजन्ति। हरिण–गो–महिष–मेषादयः पशवः च चरन्ति। ग्रामेषु मनोर† जनम् अल्पव्ययसाध्यं भवति। धूलिधूसरिताः बालकाः क्रीडां कुर्वन्ति! जीवनरक्षार्थम् अत्यन्तोपयोगीनि वायुजलादीनि ग्रामेषु प्रचुराणि यथा लभ्यन्ते तथा न नगरेषु।

ग्राम्यजीवनं सदाचारसम्पन्नं धार्मिकं च भवति ग्रामवासिनां मनांसि निर्मलानि भवन्ति। तत्रत्यं वातावरणं स्वच्छं भवति। प्राचीनकाले ग्रामेषु तथाविधशिक्षालयचिकित्सा लयादीनां सौविध्यं नासीत् यथा अद्यास्ति। तथापि अधुना ग्रामेषु सफलानि साधनानि यदि उपलब्धानि भवेयुः तर्हि ग्राम्य–जीवनम् इतोऽपि सुकरं सुखकरं च भविष्यति। तदर्थं ग्राम–निवासिभिः सम्भूय प्रयत्नः विधेयः।

शब्दार्थाः

कृषीवलाः = किसान। क्षेत्रेषु = खेतो में। वारिणा = जल से। कुल्याः = नालियाँ कर्षन्ति = जोतते हैं। वपन्ति = बोते हैं। परितः = चारों ओर। प्रयच्छन्ति = देते हैं। सौविध्यम् = सुविधा। शस्यश्यामला = फलसों से हरित। कूजन्ति = कूजते हैं। सम्भूय = एक होकर। सुकरम् = सरल।

अभ्यासप्रश्नाः

(1) निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

(अ) ग्राम्यजीवनं कथं भवति?

(ब) ग्रामे प्रायेण जनाः कीदृशाः भवन्ति?

(स) क्षेत्रेषु जनाः कदा कार्यं कुर्वन्ति?

(द) कुल्यया परिवेष्टितानि कानि सन्ति?

(इ) इदानीं कृषिव्यवसायः कीदृशः अस्ति?

(फ) हृदयः केन प्रसन्नः भवति?

(ग) धूलिधूसरिताः विविधाः क्रीडाः के कुर्वन्ति?

(ह) ग्राम्यजीवनं सुखकरं कथं भवेत्?

(2) कोष्टक में दिए गए उचित क्रियापदों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) पक्षिणः ....। (कूजन्ति / कूजति)

(ख) ग्रामीणाः हलानि ....। (कर्षतः / कर्षन्ति)

(ग) मनांसि निर्मलानि ....। (भवति / भवन्ति)

(घ) सकलानि साधनानि ....। (भवेत् / भवेयुः)

(ड.) ग्राम्यजीवनं सुखकरं ....। (अभवत् / भविष्यति)

(च) ग्रामे सौविध्यं ....। (अस्ति / सन्ति)

(छ) वातावरणं स्वच्छं ....। (स्यात् / स्युः)

(3) निम्नांकित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(1) गाँव कृषि प्रधान होता है।

(2) किसान खेतों में काम करता है।

(3) किसान अन्न उगाता है।

(4) गाँवों में मनोरंजन भी सुलभ है।

(5) भारत गाँवों का देश है।

(4) निम्न पदों का समास विग्रह कीजिए—

(1) कुल्याजलेन (2) शस्यश्यामला (3) ग्राम्यजीवनम्

(4) कृषिव्यवसायः (5) शिक्षालयः (6) अल्पव्ययसाध्यम्

(5) ''ग्राम्यजीवनम्'' नामक पाठ के अंतर्गत आए संधियुक्त शब्दों का विच्छेद कर नाम लिखिए। (कम से कम पाँच)

(6) ''कृषीवलः'' अकारान्त पुल्लिंग शब्द का रूप (कारक रचना तीनों वचनों और सभी विभक्तियों में) लिखिए।

नवमः पाठः

षड्ऋतुवर्णनम्

अस्माकं देशे षड्ऋतवः भवन्ति। ते इमे–वसन्त–ग्रीष्म–वर्षा–शरद–हेमन्त – शिशिराश्च। एतेषु वसन्तः ऋतुराजः इति कथ्यते। अस्यागमः माघशुक्लप†चम्यां तिथौ भवति। अस्मिन् दिने वाग्देव्याः पूजनमपि भवति। वसन्ते समशीतोष्णवातावरणं भवति। शीतलः मन्दः सुगन्धः मलयानिलः प्रवहति। वने उपवने च विविधानि पुष्पाणि विकसन्ति। पिका कूजन्ति। वनचराः नभचराः प्रमुदिताः भवन्तिः। वृक्षाः नवपल्लवानि धारयन्ति। आम्रवृक्षाः म†जरीभिः अतीव शोभन्ते।

वसन्ते गते ग्रीष्मः आगच्छति। ग्रीष्मे प्रचण्डसूर्यातपेन धरा तपति। प्रचण्डघर्मोष्मणा रोगकारकं विषं स्वेद बिंदुरुपेण शरीरात् बहिः निर्गच्छति। हरितवर्णाम्रफलं पक्वा पीतायते। तानि पक्वानि आम्रफलानि अतीव मधुराणि भवन्ति। ग्रीष्म ऋतोः व्यतीते सति प्रचण्डः समीरः प्रवहति। स एव वर्षाऋतोः आगमनं सूचयति। वर्षाऋतौ जलदः स्वजलधाराभिः पृथिवीं पूरयति। कृषकाः कृषिभूमिं हलेन कर्षन्ति, बीजं वपन्ति च। अतिवृष्ट्या नद्यः जलेन परिपूर्णाः भवन्ति।

ततः शरद् ऋतुः आयाति। चन्द्रस्य धवलज्योत्सनया सम्पूर्णधरा जलमिव आभाति। शरदि सम्पूर्णभारतीयाः उत्सवेषु निमग्नाः प्रतीयन्ते। शरदन्ते हेमन्तः आगच्छति। हेमन्ते वयं महत् शीतमनुभवामः। जनाः ऊर्णवस्त्राणि धारयन्ति। दिवसः लघुः निशा च दीर्घा भवति। अस्मिन् काले तण्डुलयुक्ताः शालयः कनकप्रभा इव दृश्यन्ते। ततः शिशिरः आयाति। शिशिरे शीताः पवनाः वहन्ति। वृक्षाणां पत्राणि जीर्णानि भूत्वा पृथिव्यां पतन्ति। शिशिरसमापनावसरे जनाः वसन्तागमनस्य प्रफुल्लतायां पीतवस्त्राणि धारयित्वा हर्षमनुभवन्ति।

शब्दार्थाः

समशीतोष्ण = ठण्ड व गर्मी समान। मलयानिलः = मलय पर्वत से बहने वाली हवा। वनचराः = वन में विचरण करने वाले (हरिणादि पशु)। नभचराः = आकाश में विचरण करने वाले (पक्षी)। पीतायते = पीले हो जाते हैं। जलदः = जल देने वाला (बादल)। प्रमुदिताः = प्रसन्न। शालयः = धान। तण्डुल = चाँवल। पीतवस्त्राणि = पीले रंग के कपड़े। आभाति = दिखाई पड़ती है।

अभ्यासप्रश्नाः

(1) निम्न प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

(क) अस्माकं देशे कति ऋतवः भवन्ति?

(ख) वसन्तर्तुः कीदृशः भवति?

(ग) शरद् ऋतुः कदा आगमिष्यति?

(घ) हेमन्ते जनाः कीदृशानि वस्त्राणि धारयन्ति?

(ङ.) वाग्देव्याः पूजनं कदा भवति?

(2) निम्न वाक्यों का अनुवाद संस्कृत में कीजिए–

(क) वसन्त ऋतुराज कहलाता है।

(ख) रोगकारक विष शरीर से निकलते हैं।

(ग) किसान हल से खेत जोतते हैं।

(घ) पत्ते जीर्ण होकर पृथ्वी पर गिरते हैं।

(ङ.) हेमंत ऋतु में हम अधिक ठण्ड का अनुभव करते हैं।

(च) भारतीय उत्सवप्रिय होते हैं।

दशमः पाठः

राष्ट्रियः सञ्चयः

ख्यातिः – गुरो! अस्मिन् वृक्षे किं लम्बते?

शिक्षकः – ख्याते् किं त्वमेतं न जानासि? अयं मधुकोशः।

प्रत्यूशः – कस्माद् मधुकोशोऽयं निर्मितः?

शिक्षकः – प्रत्यूष! मधुमक्षिकाः शनैःशनै पुष्परसम् आहृत्य एकत्रितं कुर्वन्ति। यदि कोऽपि मधु ग्रहीतुमायाति तर्हि मक्षिकाः तं दशन्ति।

शिवाः – गुरो! शनैःशनैः पुष्परसैः कथम् एतावान् महान् मधुकोशः जायते?

शिक्षकः – शिवे! न जानासि? इदं वचनम् प्रसिद्धमस्ति–'जलबिंदुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।'

श्यामाः – आम्! ज्ञातम्! अहमपि एकैकस्य रुप्यकस्य स†चयेन शतरुप्यकाणि सि†चतवती।

शिक्षकः – त्वम् अस्य धनस्य प्रयोगं कथं करिष्यसि?

श्यामाः – गुरो! अहं भूचालेन पीडितजनानां सेवार्थं इदं धनं समर्पयिष्यामि।

शिक्षकः – बाढम्। त्वं द्वे कार्ये साधु अकरोः। प्रथमं स्वव्ययार्थं प्राप्तस्य धनस्य स†चयः, द्वितीयं च तस्य सि†चतसय धनस्य भूचालपीडितजनानां सहायतार्थं प्रदानम्।
(कक्षायाम् अन्यान् छात्रान् सम्बोध्य)

शिक्षकः – छात्राः! श्यामां पश्यन्तु। अनया स्वव्ययार्थं प्राप्तधनस्य न केवलं सञ्चयः कृतः अपितु भूचालपीडितेभ्यः प्रदाय सदुपयोगोऽपि कृतः।

पुष्करः – गुरो! धनस†चयस्तु कोषालयपत्रालयमाध्यमेन च भवति। कृपया भवान् तद्विषये अस्मान् उपदिशतु।

शिक्षकः – आम्! छात्राः! देशस्य आर्थिक, सामाजिक, औद्योगिक, विकासाय च धनमावश्यकम्।

ख्यातिः – गुरो! धनप्राप्तेः साधनानि कानि–कानि?

शिक्षकः – धनप्राप्तिसाधनेषु करग्रहणं, औद्योगिकोत्पादनं इत्यादीनि साधनानि निर्यातं कोषालय–पत्रालय–माध्यमेन च नागरिकाः राष्ट्रियस†चयोजनांतर्गतं धनस†चयं कुर्वन्ति।

शिवाः – राष्ट्रियः स†चयः योजना का?

शिक्षकः – शासनेन नगरेषु ग्रामेषु च कोषालयानां पत्रालयानां च शाखाः स्थापिताः। तेषु बालबालिकाः वयस्काश्च धनस†चयं कुर्वन्ति। तत्र पत्रालयानां सेवा विशेषरूपेण उल्लेखनं अस्ति।

श्यामाः – तत् कथम्?

शिक्षकः – पत्रालयस†चलिताः अनेकाः स†चययोजनाः सन्ति।

पुष्करः – ताःकाः?

शिक्षकः – 'स†चयपुरस्कारयोजना', 'संरक्षितस†चययोजना', 'भविष्यनिधियोजना' इत्यादयः।

श्यामाः – अहो! पत्रालयमाध्यमेन तु अनेकाः स†चययोजनाः स†चालिताः।

शिक्षकः – अथकिम्? छात्राणां लाभाय पत्रालयमाध्यमेन विद्यालयेषु स†चयिका–योजना अपि व्यवस्था अस्ति।

प्रत्यूषः – गुरो! स†चायकियोजनाविषये कि†चत कथय?

शिक्षकः – अवश्यम्! श्रृणुत! स†चयिकायोजना स†चेतुं सुविधा अस्ति। विद्यालय स†चालित–योजनायां पुरस्कारार्थं व्यवस्था अस्ति।

ख्यातिः – गुरो! यदि एवं तर्हि, वयम् अपि स्वकीयं धनं पत्रालयेषु सि†चतं करिष्यामः।

शिक्षकः – अवश्यं कुरुत। आसां सर्वासां योजनानां विषये विवरणं पत्रालयेभ्यः प्राप्तुं शक्यम् छात्राः राष्ट्रियस†जययोजना व्यक्तेः समाजस्य, देशस्य च विकासाय सहायिका। भारतसदृशविकासशीलदेशेषु तु आसां योजनानां महती उपयोगिताअस्ति। अतः अस्माभिः स†चययोजनानां प्रसाराय प्रयत्नो विधेयः। उक्तमपि–

'क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थ†चचिन्तयेत्'

शब्दार्थाः

लम्बते = लटकना। जानासि = जानते हो। मधुकोशः = मधुमक्खियों का छत्ता। मधुमक्षिकाः = मधुमक्खियाँ। आहृत्य = लाकर। ग्रहीतुमायाति = लेने के लिए आता है। दशन्ति = डस लेती है। कथम् = कैसे। जायते = होता है। निपातेन = गिरने से। पूर्यते = भरता है। घटः = घड़ा। ज्ञातम् = समझ गया। स†चयेन = सच्चय से। करिष्यसि = करोगे। जलाप्लावनाद् = बाढ़ से। साधु = अच्छा। बाढम् = अवश्य। स्वव्ययार्थं = अपने खर्च के लिए। पत्रालयः = डाकघर। कोषालयः = बैंक। उपदिशतु = उपदेश करें। श्रृणुत = सुनो। प्रसाराय = प्रसार के लिए। विधेयः = करना चाहिए। क्षणशः = क्षण–क्षण से। कणशः = कण–कण से।

अभ्यासप्रश्नाः

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

(क) वृक्षे किं लम्बते?

(ख) मधुमक्षिकाः किं कुर्वन्ति?

(ग) घटः कथं पूरितो भवति?

(घ) श्यामा किं सतिवती?

(ड.) श्यामा सि†चद्रव्यस्य उपयोगं कुत्र करिष्यति?

(2) निम्नलिखित शब्दों का सन्धि विच्छेद कर प्रकार बताइये–

एकैकेन, तत्रैव, बालिकाश्च, उल्लेखनीयाः, इत्यादयः।

(3) निम्नलिखित शब्दों का विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए–

पुष्परसम्, स्वव्ययार्थम्, सञ्चितधनस्य, मधुकोषः

(4) निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) तुम सब धन का संचय करो।

(ख) पानी के एक–एक बूंद से घड़ा भर जाता है।

(ग) मैं पीड़ितों की सहायता करूंगा।

(घ) हम सबको संचय योजना का प्रसार करना चाहिए।

(ङ.) देश के विकास के लिये धन आवश्यक है।

(5) निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(क) तत्रैव मक्षिकाः स्थित्वा मधु रक्षन्ति।

(ख) यस्य वार्षिकलाभो भवति।

(ग) जलबिन्दु निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।

(घ) पत्रालयमाध्यमेन अनेकाः सञ्चययोजनाः सञ्चालिताः सन्ति।

(ङ.) वयम् अपि धनं सञ्चितं करिष्यामः।

(6) इस पाठ में प्रयुक्त 'कृ' एवं 'भू' धातु के रूप लट्लकार (वर्तमान काल) एवं लृट्लकार (भविष्य काल) में लिखिए।

(7) पाठ में प्रयुक्त उकारान्त शब्द "गुरु" के रुप लिखिए।

एकादशः पाठः
चतुरः वानरः

एकस्मिन् नदीतीरे एकः जम्बूवृक्षः आसीत्। तस्मिन् एकः वानरः प्रतिवसति स्म। सः नित्यं तस्य फलानि खादति स्म। कश्चित् मकरोऽपि तस्यां नद्यामवसत्। वानरः प्रतिदिन् तस्मै जम्बूफलानि अयच्छत्। तेन प्रीतः मकरः तस्य वानरस्य मित्रमभवत्।

एकदा मकरः कानिचित् जम्बूफलानि पत्न्यै अपि दातुं आनयत्। तानि खादित्वा तस्य जाया अचिन्तयत् अहो! यः प्रतिदिनमीदृशानि फलानि खादति, नूनं तस्य हृदयमपि अतिमधुरं भविष्यति। अहं तदेव खादितुमिच्छामि। तस्य हृदयभक्षणाय मम बलवती स्पृहा। यदि मां जीवितां दुष्टुम् इच्छसि तर्हि शीघ्रम् आनय तस्य वानरस्य हृदयम्। पत्नयाः हठात् विवशः मकरः नदीतीरं गत्वा वानरमवदत्–'बन्धो! तव भ्रातृजाया त्वां द्रष्टुमिच्छति। अतः मम गृहमागच्छ। वानरः अपृच्छत्–कुत्र ते गृहम्? कथमहं तत्र गन्तुं शक्नोमि? 'मकरः अवदत्–अलं चिन्तया। अहं त्वां स्वपृष्ठे धृत्वा गृहं नेष्यामि।' तस्य वचनं श्रुत्वा विश्वस्तः वानरः तस्मात् वृक्षस्कन्धात् अवतीर्य मकरपृष्ठे उपाविशत्।

नदीजले वानरं विवशं मत्वा मकरः अकथयत्–मम पत्नी तव हृदयं खादितमुमिच्छति। तस्मै तव हृदयं दातुमेव त्वां नयामि। चतुरः वानरः शीघ्रमकथयत्–अरे मूर्ख! कथं न पूर्वमेव निवेदितं त्वया? मम हृदयं तु वृक्षस्य कोटरे एव निहितम्। अतः शीघ्रं तत्रैव नय अहं स्वहृदयमानीय भातृजायायै दत्त्वा तां तोषयामि इति।

मूर्खः मकरः तस्य गूढमाशयम् अबुद्ध्वा वानरं पुनस्तमेव वृक्षमनयत्। ततः वृक्षमारुह्य वानरः अवदत् धिङ्. मूर्ख! अपि हृदयं शरीरात् पृथक् तिष्ठति? अतः गच्छ सम्प्रति, त्वया सह मम मैत्री समाप्ता, सत्यमुक्तं केनचित् कविना–

विश्वासो हि ययोर्मध्ये तयोर्मध्येऽस्ति सौहृदम्।
यस्मिन्नैवास्ति विश्वासः तस्मिन् मैत्री क्व सम्भवा।।

शब्दार्थाः

दातुम् = देने के लिए। जाया = पत्नी। प्रतिदिनमीदृशानि = रोज ऐसे(इस प्रकार के)। नूनम् = निचित रुप से। स्पृहा = इच्छा, अभिलाषा। तर्हि = तो। आनय = ले आओ। विवशः = मजबूर। भ्रातृजाया = भाभी। अलम् = बस और न करना, मना करना। स्वपृष्ठे = अपनी पीठ पर। धृत्वा = धारण करके, बिठा करके। नेष्यामि = ले जाऊँगा। विश्वस्तः = विश्वास करके। कोटरे = खोखर में। उपाविशत् = बैठ गया। दातुमेव (दातुम्+एव) = देने के लिए ही। निहितम् = रखा हुआ। परितोषयामि = संतुष्ट करूंगा/प्रसन्न करूंगा। गूढम् = छिपे हुए/गुप्त। अबुद्ध्वा = न जानकर। वृक्षमारुह्य = वृक्ष पर चढकर। ययोः = जिन दो के। तयोः = उन दो के। सौहृदम् = सुहृद्भाव/मित्रता। सम्भवा = हो सकता है। नद्यामवसत् (नद्याम्+अवसत्) = नदी में रहता था। पत्न्यै = पत्नी के लिए। वृक्षस्कन्धात् = पेड़ के तने से। तत्रैव (तत्र+एव) = वहीं। अनयत् = ले गया। अतःपरम् = इसके बाद।

अभ्यासप्रश्नाः

(1) निम्न प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में एक वाक्य में लिखिए–

(क) जम्बूवृक्षः कुत्र आसीत्?

(ख) वानरः प्रतिदिनं कस्मै जम्बूफलानि अयच्छत्?

(ग) मकरः वानरं पुनः कुत्र अनयत्?

(घ) मकरः कुत्र वसति स्म?

(2) निम्न प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

(क) वानरः कुत्र प्रतिवसति स्म?

(ख) वानरस्य केन सह मैत्री अभवत्?

(ग) वानरः मकराय किम् अयच्छत्?

(घ) मकरी किं खादितुम् इच्छति स्म?

(ङ.) विश्वस्तः वानरः किम् अकरोत्?

(3) निम्न शब्दों के नपुंसकलिX

के द्विवचन एवं बहुवचन के रूप लिखिए–

(क) पत्रम् ....

(ख) गृहम् ....

(ग) ह्रदयम् ....

(घ) शरीरम् ....

(ङ.) फलम् ....

(4) कोष्टक में दिये गये शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(दातुम्, सह, अलम्, अगच्छत्, द्रष्टुम् त्वां)

(क) वानरः मकरेण ....गच्छति।

(ख) बालकः विद्यालयम् .... ।

(ग) तव ह्रदय .... एव ....नयामि।

(घ) ....कोलाहलेन।

(ङ.) अहम् तव छाया चित्रम् ....इच्छामि।

द्वादशः पाठः
महर्षिः दधीचिः

भारतीया संस्कृतिः सर्वश्रेष्ठा संस्कृतिः अस्ति। दानं, दया, समता परोपकारः इत्यादयो गुणाः भारतीयसंस्कृतेः अङ्.गानि सन्ति। स्वार्थं परित्यज्य परोपकारार्थं जीवनसमपर्णेन अनेके मुनयः महर्षयः राजानः सामान्यनागरिकाश्च भारतीयसंस्कृतिम् अरक्षन् । अतएव ते सादरं स्मर्यन्ते। अतिथिरक्षायै करस्थं स्थालं प्रयच्छन् राजर्षिरन्ति–देवः कपोतरक्षायै स्वदेहमासं ददानो महाराजः शिविः, देवरक्षायै स्वशरीरस्यास्थीनि प्रयच्छन् महर्षिदधीचिश्चेतादृशा एवं श्रद्धेयाः स्मरणीयाः महापुरुषाः सन्ति।

महर्षेः दधीचेः नाम सर्वेषु परोपकारिषु महापुरुषेषु अग्रगण्यः मन्यते। देवराजेन्द्रस्य परीक्षायामुत्तीर्णो रन्तिदेवः शिविश्च उभौ अपि अन्ते देहवन्तौ जीवितौ आस्ताम्। किन्तु दधीचिस्तु सर्वकालाय देहं विमुच्य यशशरीरो अभवत्। वस्तुतः तत्समस्त्यागी न भूतो न भविष्यति।

प्राचीनकाले कदाचिद् देवानां दानवानां च भयङ.कूरसंग्रामाऽभूत। तस्मिन् सङ्–.ग्रामे देवानां नायकः इन्द्रः दानवानां नायकश्च वृत्रासुरः आसीत्। वृत्रासुरेण सह संघर्षे देवनायकः इन्द्रः पराजितः इन्द्रस्यादेशेन पराजिताः देवाः देवरक्षकं भगवन्तं विष्णुम् उपगम्य स्वरक्षायै प्रार्थयन्। प्रार्थनां श्रुत्वा प्रसन्नो भगवान् विष्णुः अब्रवीत् यत् वरं ब्रुवत। देवाः अब्रुवन्–भगवन्! दानवानां नायको वृत्रासुरः देवराजस्य इन्द्रस्य सकलां देवसेनां पराजयत स दानवराजोस्माकं सर्वाणि शस्त्राणि अपि अनश्यत्। भवान् अस्मान् रक्षतु।

भगवान् विष्णुः उवाच भो देवाः! इदानीं महर्षिः दधीचिः सर्वेषाम् ऋषीणां शिरोमणिः वर्तते। व्रतोपवासैः तपसा च तस्य महात्मनो देहः पावनः सम्पन्नः। तस्य देहस्य अस्थिभिः यदि वज्रस्य निर्माणं भवेत्। तर्हि तेन वज्रेण वृत्रासुरस्य वधः संभवाऽस्ति। अतः सत्वरं गत्वा तं महर्षिं तद्देहं याचत। स ऋषिधर्मस्य मर्मज्ञो वर्तते। ऋषयः खलु परोपकारिणो भवन्ति। सः परोपकारार्थं अवश्यं स्वदेहं दास्यति।

भगवतो विष्णोः आदेशेन देवाः महर्षेः दधीचेः समीपं गतवन्तः। तत्र गत्वा ते वृत्रासुरस्य अत्याचारं वर्णयित्वा तद्वधाय महर्षेः देहम् अयाचन्। दधीचिः उवाच–भो देवाः! यो नरः शरीरं क्षणभङ्.गुरं मत्वा अपि सनातनस्य धर्मस्य पालनं न करोति, स सर्वदा निन्दनीयो भवति। नदी वृक्षादयो जडपदार्था अपि तं स्वार्थिनं निन्दन्ति। यः खलु प्राणिनां शोके शोकं, हर्षेहर्षं च अनुभवति स एव प्रशंसनीयो भवति। अतः देवकार्याय शरीरं मुञ्चतो लेशताऽपि व्यथा न भविष्यति।

एवमुक्त्वा महर्षिः दधीचिः भगवन्तं ध्यायन् स्वदेहम् अत्यजत्। देवशिल्पी विश्वकर्मा तैः अस्थिभिः वज्रस्य निर्माणम् अकरोत्। तेन वज्रेण देवराज इन्द्रो वृत्रासुरस्य वधं चकार। एतेन महता त्यागमहिमभ्यां महर्षिः दधीचिः अद्यापि सादरं सम्मानयते, यशः शरीरेण च अद्यापि जीवति।

'परोपकाराय सतां विभूतयः'

शब्दार्थाः

स्मर्यन्ते = स्मरण करते हैं। करस्थम् = हाथ में स्थित। स्थालम् = थाली को। ददानो = देते हुए। देहवन्तौ = शरीरधारी। विमुच्य = छोड़कर। उपगम्य = पास जाकर। सकलाम् = समस्त। अनश्यत् = नष्ट कर दिया। शिरोमणि = श्रेष्ठ या प्रमुख। वज्र = कठोर (अस्त्र का नाम)। तर्हि = तो। मर्मज्ञ = विशेषज्ञ या मर्म को जानने वाला। अयाचन् = मांगे। क्षणभङ्.रम् = नाशवान। मुञ्चतो = छोड़ते हुए। लेशतोऽपि = थोड़ा भी व्यथा। चकार = किया।

अभ्यासप्रश्नाः

(1) संस्कृत में उत्तर दीजिए—

(क) परोपकारेषु कस्य नाम अग्रगण्यं मन्यते?

(ख) दानवानां नायकः कः आसीत्?

(ग) इन्द्रस्यादेशेन देवाः किम् अकुर्वन्?

(घ) केन वज्रः निर्मितः?

(2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) प्राचीनकाले देवानां दानवानां ....अभूत्।

(ख) प्रार्थनां श्रुत्वा प्रसन्नो .... अब्रवीत्।

(ग) ऋषयः खलु .... भवन्ति।

(घ) तेन .... वृत्रासुरस्य वधः संभवोअस्ति।

(3) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(1) देवों और दानवों का संग्राम हुआ।

(2) भगवन्! आप हमारी रक्षा करें।

(3) परोपकार सज्जनों का धन है।

(4) इन्द्र ने वृत्रासुर का वध किया।

(4) सन्धि कर प्रकार लिखिए—

(1) परोपकारः (2) शिविश्च (3) व्रतोपवासैः (4) एवमुक्त्वा (5) महर्षिः

(5) समास विग्रह कीजिए—

(1) कपोतरक्षायै (2) देवनायकः (3) वज्रनिर्माणम्

(6) (1) देव अकारान्त पुल्लिंग एवं महर्षि इकारान्त पुल्लिंग की कारक रचना सभी विभक्तियों में लिखिए।

(2) भू—धातु के लङ्.लकार में धातुरूप लिखिए।

(3) दा धातु के लृट्लकार में धातुरूप लिखिए।

त्रयोदशः पाठः
रामगिरिः रामगढम्

छत्तीसगढ़प्रदेशस्य उत्तरस्यां दिशि मुकुटमिव सरगुजामण्डलं स्थितमस्ति। रत्नगर्भः भूभागोऽयं वन्यशोभामपि धारयति। अत्र अनेकानि ऐतिहासिक–पुरातात्विक स्थलानि सन्ति, तेषु अन्यतमः–रामगिरिः (रामगढम्)।

इदं स्थानम् अम्बिकापुरात् पञ्चत्वारिंशत् कि.मी. दूरे दक्षिणदिशि वर्तते। रामगढपर्वते–हस्तिपोलः (हाथीपोल) सीतावेंगरा, जोगीमाड़ा, लक्ष्मणवेंगरा इत्येतानि महत्वपूर्णस्थानानि सन्ति।

हस्तिपोलेति 180 फुट परिमिता प्राकृतिकसुरडि.गका अस्ति। अस्य अन्तर्भागे स्रोतः प्रवहति। अत्रैव एकं शीतलं जलकुण्डं वर्तते यत् सीताकुण्डमिति कथ्यते। अत्र श्रीरामः वनवासकाले किचिंत्कालं न्यवसत्। विश्वकविः कालिदासः अत्रैव निवसन् 'मेघदूतम्' इति काव्यस्य रचनामकरोत् तेन दूतकाव्ये सीतायाः स्नानेन अत्रत्यजलानि पुण्यानि, तरवः स्निग्धच्छाया इति रामगिरेः वर्णन कृतम्।

हस्तिपोलसुरड्.गस्योपरि एका नाट्यशाला अस्ति। जनाः यां 'सीतावेंगरा' इति कथयन्ति। पुरातत्वविदः सीतावेंगरागुहां खीस्ताब्दात् द्वितीया तृतीया वा शताब्दिपूर्वा प्राचीनतमा नाट्यशाला इति मन्यन्ते। इयं नाट्यशाला वृहत्शिलां कर्तयित्वा निर्मिता। अस्याः रुपाड्कनं भरतमुनिनानाट्यशास्त्रं कृतम्। इयं नाट्यशाला आयताकारा, अनुमानतः आयामः (लम्बाई) 44.00 (फुट) विस्तारः (चौड़ाई) 15 (फुट) इति क्षेत्रे परिमिता। अस्याः भित्तयः सरलाः, द्वारं गोलाकारं, अन्तर्भागे प्रस्तर–आसनानि सन्ति। अस्याः उपयोगः नाट्यस्य कृते अभवत्। ब्राह्मीलिप्यामुत्कीर्णः एकः शिलालेखोऽस्ति। अयं भारतस्य इतिहासे अद्वितीयः अस्ति। अस्याः अनुसन्धानं 1848 खीस्ताब्दे कर्नल आउस्ले इति महाभागेन कृतम्।

सीतावेंगरा गुहायाः पार्श्वे अन्या गुहा 'जोगीमाडा' अस्ति। अस्याः भित्तयः वज्रलेपेन प्रलिप्त्यः सन्ति। छदि भित्तिषु च पत्र–पुष्प, पशु–पक्षी, नर–नारी, देव–दानव, योद्ध–हस्तिनां चित्राणि सन्ति। एषां भित्तिचित्राणां विशिष्टमहत्वमस्ति। भित्तिचित्राणां प्रकाशनं 1904 ईशवीये डॉ.ब्लाश भारतीय चित्रकलायाःविज्ञः आर.ए.अग्रवाल महाभागः च अकुरुताम्। अस्यां पालिभाषायां एकः शिलालेखः उत्कीर्णः। शिलालेखेरुपदक्षदेवदीनस्य देवदासीसुतनुजायाः प्रणयगाथा वर्णिता अस्ति।

जोगीमाड़ा गुहायाः अग्रभागे अपरा लक्ष्मणवेंगरा गुहा अस्ति। पर्वतस्योपरि एकं सिंहद्वारमस्ति द्वारस्य प्रस्तरः वृहदाकारोऽस्ति। तत्र मूर्तिमन्दिरतडागावशेषाः प्रमाणयन्ति यत् इदं क्षेत्रम् पुरा दुर्गम् आसीत्।

रामगिरिः वनदेव्याः ललितपुरेतिहासस्य संधाता संस्कृतभाषायाश्च स्वर्णिमकालदृष्टा अस्ति। अत्र आषाढमासस्य प्रथमदिवसे छत्तीसगढसंस्कृत–अकादम्याः गरिमामयः सांस्कृतिककार्यक्रमः विचारगोष्ठी च आयोज्यते। आयोजने संस्कृतभाषायाः विद्वांसः इतिहासविदः पुरातत्वविदः जनान् उद्बोधयन्ति। तर्कयन्ति, विचारयन्ति अनन्योऽयम् यत् राजगिरिरित्येव।

शब्दार्थाः

मण्डलम् = जिला। अन्यतमः = बहुत में से एक। वेंगरा = अतिथि कक्ष (सरगुजिया बोली में) स्रोतः = सोता, झरना। निवसन् = निवास करते हए्। स्निग्धच्छाया = घनी छाया। नाट्यशाला = रंगमंच, नाटक खेलने का घर। खीस्ताब्दात् = ईसवी सन् से। वृहत्शिलाम् = बड़ी चट्टान को। कर्तयित्वा = काटकर। प्रस्तरआसनानि = बैठने के लिए पत्थर के आसन। नाट्यस्य = नृत्य, गीत, और वाद्य का। उत्कीर्णम् = खुदा हुआ। अनुसन्धानम् = खोज। पार्श्वे = बगल में। छदि = छत में। वज्रलेपेन = एक प्रकार का मसाला या लेप जो मजबूती के लिए दीवार पर लगाया जाता है। भित्तिषु = दीवारों में। विज्ञः = जानकार। पालिभाषायाम् = पाली भाषा में (इस भाषा का प्रयोग बौद्धसाहित्य एवं अशोक के शिला लेखों में हुआ है)। जोगीमाड़ा = जोगियों के रहने की गुफा (सरगुजिहा बोली में)। रूपदक्षदेवदीनस्य = नाटकों के रूप में।

सन्धि

भूभागोऽयम् – भूभागः + अयम – (विसर्ग सन्धि)। इत्येतानि – इति + एतानि – (यण् सन्धि)। कंचित् – कम् + चित् – (व्यंजन सन्धि)। अत्रैव – अत्र + एव – वृद्धि सन्धि। पर्वतस्योपरि – पर्वतस्य + उपरि – (गुण सन्धि)। वृहदाकाराः – वृहत् + अकाराः(व्यंजन संधि)। पुरेतिहासस्य – पुरा + इतिहासस्य – (गुण स्वर संधि)। रामगिरिरिति – रामगिरिः + इति **(विसर्ग संधि)**

प्रत्यय

1–तद्धित

ऐतिहासिक–इतिहास+ठक्+इक (संबंधी तद्धित प्रत्यय)। अन्यतम्–अन्य+तमप् (अतिशय बोधक तद्धित प्रत्यय)। प्राचीनतमा–प्राचीन+तमप् (अतिशय बोधक तद्धित प्रत्यय)।

2–कृदन्त

निवसन्–नि+वस्+शतृ(अत्) (वर्तमानकालिक कृदन्त)। अनु–सम्+धा+ल्युट् (अन)– अनुसन्धानम्।

समास

सीताकुण्डम्–सीतायाः कुण्डम् षष्ठीतत्पुरूष। स्निग्धच्छाया–स्निग्धा छाया (कर्मधारय)। नाट्यशाला–नाट्यस्यशाला (तत्पुरूष समास)। अनन्यः–न अन्यः (नज् तत्पुरूष समास)

अभ्यासप्रश्नाः

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

(क) सरगुजामण्डलं कुत्र स्थितम् अस्ति?

(ख) रामगिरिः कस्मिन् मण्डले स्थितः अस्ति?

(ग) शीतलं जलकुण्डं किं कथ्यते?

(घ) कां गुहां प्राचीनतमा नाट्यशाला मन्यन्ते?

(ङ.) पर्वतस्य उपरि किम् अस्ति?

(2) सन्धि विच्छेद कर प्रकार लिखिए–

भूभागोऽयम्, इत्येतानि, वृहदाकाराः, पुरेतिहासस्य, रामगिरिरिति।

(3) नीचे लिखे विग्रहयुक्त पदों के सामासिक पद बनाईये।

वनवासस्य काले

सीतायाः कुण्डम्

स्निग्धा छाया

नाट्यस्य शाला

विशिष्टं महत्वम्

(4) नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) मैं छत्तीसगढ़ प्रदेश में रहता हूँ।

(ख) पर्वत से झरना निकलता है।

(ग) श्री राम ने यहां पर कुछ समय तक निवास किया था।

(घ) छत्तीसगढ़ में 36 गढ़ थे।

(ङ.) मुझे संस्कृत भाषा अच्छी लगती है।

(5) निम्नलिखित पदों में से उपयुक्त पद रिक्त स्थान में लिखिए–

"प्राचीनतमा, कच्चित्कालम्, मुकुटमिव, अनन्यः, पालिभाषायाम्"

1. उत्तरस्यां दिशि .... सरगुजा मण्डलं स्थितमस्ति।
2. सीतावेंगरा गुहा ....नाट्यशाला अस्ति।
3. अस्यां .... एकः शिलालेखः उत्कीर्णः।
4. अत्र श्रीरामः वनवासकाले .... न्यवसत्।
5. .... अयं रामगिरिः।

1. इन्हें हम यह भी कह सकते हैं–

1. गिरिः, सानुः .... ।
2. रामः, राघव : .... ।
3. सीता, जानकी .... ।
4. जलम्, नीरम् .... ।

2. विरूद्धार्थी शब्द लिखिए–

1. शीतलम् .... ।
2. दिनम् .... ।
3. नरः .... ।

3. युगल पद– (सामासिक पद बनावें)

1. सीता–रामः .... ।
2. माता–पिता .... ।
3. बालिका–बालकः .... ।
4. पत्रम्–पुष्पम् .... ।
5. देवः–दानवः .... ।

4. पद प्रहेलिका (पद पूर्ण करें)

शि	ला			म्
	ची	न	त	मा
में	घ			म्

गो		का	र
दे		दा	सी
	रं	गि	का

5. अर्थ प्रहेलिका (हिन्दी में अर्थ लिखिए)

1. नाट्यशाला .... ।
2. अवशेषा :.......................... ।
3. दुर्गः .... ।

चतुर्दशः पाठः
नीतिनवनीतम्

1. यस्मिन् जीवति जीवन्ति बहवः सः तु जीवति।
कुरुते किं न काकोऽपि च†चवा स्वोदरपूरणम् ।।
2. यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवते।
ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अध्रुवं नष्टमेव हि।।
3. जननी जन्मभूमिश्च जाह्न्वी व जनार्दनः।
जनकः प†चमश्चैव जकाराः प†चदुर्लभाः।।
4. अहिं नृपं च शार्दूलं किटिञ्च बालकं तथा।
परश्वानं च मूर्खं च सप्त सुप्तान् न बोधयेत्।।
5. विद्यार्थी सेवकः पान्थः क्षुधार्तो भयकातरः।
भण्डारी प्रतिहारी च सप्त सुप्तान् प्रबोधयेत्।।
6. कामं क्रोधं तथा लोभं स्वादं श्रृंड्.गारं कौतुकं।
अति निद्राम् अति सेवां च विद्यार्थीह्यष्ट वर्जयेत्।।
7. वरं प्राणपरित्यागो मानभड्.गेन जीवनात्।
प्राण त्यागे क्षणं दुःखं मानभडे. दिने–दिने।।
8. प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात्तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता।।
9. दुष्टा भार्या शठं मित्रं भृत्यश्चोत्तरदायकः।
ससर्पे च गृहे वासो मृत्युरेव न संशयः।।
10. मूलं भुजड्गैः शिखरं प्लवड्गैः
शखा विहड्गैः कुसुमानि भृड्गैः।
आसेव्यते दुष्टजनैः समस्तैर्न
चन्दनं मु†चति शीतलत्वम्।।

शब्दार्थाः

1. यस्मिन् = जिसके, जीवति = जीवित रहने पर, बहवः = बहुत से, जीवन्ति = जीते हैं, सःतु जीवति = वहजो जीता है, काकाऽपि = (काकः+अपि) कौआ भी, किम् = क्या, चच्चवा = चोंच से, स्वोदर = (स्व+उदर) अपना पेट, पूरणम् = पूर्ति (भरना), न = नहीं, कुरुते = करता है।

2. ध्रुवाणि = स्थिर या निश्चित वस्तुओं को, परित्यज्य = छोड़कर, अध्रुवाणि = अस्थिर या अनिश्चित वस्तुओं को, निषेवते = सेवन करता है, नश्यन्ति = नष्ट हो जाते हैं, अध्रुवम् = अनिश्चित, नष्टमेव = नष्ट ही है।

3. जननी = माता, जाह्नवी = गङ्.गा, जनार्दन = ईश्वर, जनकः = पिता, पञ्चमश्चैव = (पञ्चमः+च+एव) = ये पाँचों, जकाराः = 'ज' वर्ण से प्रारंभ होने वाल शब्द, दुर्लभाः = दुर्लभ हैं।

4. अहि = सर्प, शार्दूल = सिंह, किटिञ्च = बर्र (मधुमक्खी), बालकम् = शिशु परश्वानं = दूसरे का कुत्ता, सुप्तान् = सोते हुए, न = नहीं, बोधयेत् = जगाना चाहिए।

5. विद्यार्थी = विद्या अर्जन करने वाला, सेवकः = सेवा करने वाला, पान्थः = पथिक, राहगीर, क्षुधार्तः = भूखा व्यक्ति, भयकातरः = डरा हुआ, भण्डारी = भण्डार गृह का रक्षक, प्रतिहारी = द्वारपाल, प्रबोधयेत् = जगा देना चाहिए।

6. श्रृंगार = सजना, कौतुक = खेल, अतिसेवा = अति आनन्द,

7. वरम् = श्रेष्ठ, प्राणपरित्यागे = मृत्यु, मानभङ्.गेन = अपमानित, जीवनात् = जीवन से,

8. प्रियवाक्य = मधुर वचन, तुष्यन्ति = प्रसन्न होते हैं, जन्तवः = प्राणी, दरिद्रता = गरीबी।

9. दुष्टभार्या = दुराचारिणी स्त्री, शठं मित्रम् = दुष्ट मित्र, भृत्यश्चोत्तरदायकः = (भृत्यः + च + उत्तरदायकः) जवाब देने वाला नौकर, ससर्पे = सर्पयुक्त।

10. मूलम् = जड़, भुजडै.ग = सर्पों से, शिखरम् = चोटी, प्लवङ्.गै = बन्दरों से,शाखा = डाल, विहङ्.गै = पक्षियों से, भृङ्गैः = भ्रमरों से, आसेव्यते = सेवित होता है (आश्रय लिया जाता है) दुष्ट जनैः = दुष्ट जनों से, मु†चति = छोड़ता है, शीतलत्वम् = शीतलता को।

अर्थ

1. जिसके जीवित रहने पर बहुत से प्राणी जीते हैं, उसी का जीना सार्थक है अन्यथा क्या कौआ भी चोंच से अपने उदर की पूर्ति नहीं करता है ?

2. जो निश्चित वस्तुओं को छोड़कर अनिश्चित वस्तुओं को अपनाता है उसकी निश्चित वस्तु भी नष्ट हो जाती है। अनिश्चित तो स्वयं ही नाशवान है।

3. जननी, जन्मभूमि, जाह्नवी (गड.गा) जनार्दन (ईश्वर) और जनक (पिता) ये 'ज' अक्षर से प्रारंभ होने वाले पाँचों दुर्लभ हैं।

4. सर्प, राजा, सिंह, बर्र (मक्खी), शिशु दूसरे का कुत्ता और मूर्ख से सातों सोते हो तो नहीं जगाना चाहिए।

5. विद्यार्थी, सेवक, राहगीर, भूखा व्यक्ति, डरा हुआ, भण्डारी और द्वारपाल ये सातों सोते हों तो इन्हें जगा देना चाहिए।

6. काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, श्रृंगार, खेल, अतिनिद्रा और अति आनंद ये आठों विद्याध्ययन के शत्रु हैं, अतः विद्यार्थी को इन्हें छोड़ देना चाहिए।

7. अपमानित होकर जीने से मृत्यु श्रेष्ठ है। मृत्यु में एक बार दुःख होता है किंतु मान हानि से हमेशा दुःख होता रहता है।

8. मधुर वचन से सब जीव संतुष्ट होते हैं इसलिए वैसा ही बोलना चाहिए वचन में क्या दरिद्रता है?

9. जिस घर में दुष्टास्त्री, कपटी मित्र, जवाब देने वाला नौकर और साँप का वास हो वहाँ मृत्यु निश्चित है।

10. चन्दन के मूल में सर्प रहते हैं, शिखर पर बन्दर रहते हैं शाखाओं पर पक्षी तथा पुष्पों पर भ्रमर रहते हैं इस प्रकार समस्त दुष्ट प्राणियों से सेवित होने पर भी चन्दन अपनी शीतलता को नहीं छोड़ता है।

अभ्यासप्रश्नाः

(1) प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

(क) कः वस्तुतः जीवति?

(ख) कान् सुप्तान् प्रबोधयेत्?

(ग) के पच्चदुर्लभाः?

(घ) कस्य ध्रुवाणि नश्यन्ति?

(ङ.) प्रियवाक्यं किमर्थं वक्तव्यम्?

(च) विद्यार्थिभिः कति दोषाः त्याज्याः?

(2) श्लोक के पद मेल कीजिए?

(क) कुरुते किं न काकोऽपि	–	सप्तसुप्तान् प्रबोधयेत्।
(ख) जननी जन्मभूमिश्च	–	सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
(ग) भण्डारी प्रतिहारी च	–	च†चवा स्वोदरपूरणम्।
(घ) प्राणत्यागे क्षणं दुःखं	–	जाह्नवी च जनार्दनः।
(ङ.) प्रियवाक्यप्रदानेन	–	मानभङ्.ग दिने–दिने।

(3) नीचे लिखे वाक्यों के सामने सही–गलत लिखिए–

(क) काकः च†चवां उदरं पूरयति।

(ख) अध्रुवाणि सेवनीयः।

(ग) प†चजकाराः दुर्लभाः।

(घ) विद्यार्थिना अतिनिद्रा कर्तव्या।

(4) संस्कृत भाषा में लिखिए–

(क) उसी का जीवित रहना जीवन है जिसके जीने से बहुत से लोग जीवित रहते हैं।

(ख) उनका निश्चित भी नष्ट हो जाता है अनिश्चित तो नष्ट होता ही है।

(ग) सोये हुए शिशु को नहीं जगाना चाहिए।

(घ) मधुर वचन से सभी प्रसन्न होते हैं।

(ङ.) उत्तर देने वाला नौकर अच्छा नहीं होता।

(च) समस्त दुष्ट जनों से सेवित होने पर भी चन्दन शीतलता नहीं त्यागता।

(5) सन्धि कीजिए और नाम लिखिए–

(क) काकः+अपि = ...

(ख) स्व+उदरः = ...

(ग) पञ्चमः+च+एव = ...

(6) संधि विच्छेद कर प्रकार बताइए–

(क) क्षुधार्तः .... + ...

(ख) तस्मात्तदेव ....+ ....

(ग) भृत्यश्चोत्तरदायकः .... + ...+ ....

(7) निम्न शब्दों के कारक रूप पहचान कर लिखिए।

शब्दरूप	मूलशब्द	विभक्ति	वचन
यस्मिन्	यत्	सप्तमी	एकवचन
ध्रुवाणि	....	....	....
जन्तवः	....	....	....
भृत्यः	....	....	....
गृहे	....	....	....
तस्मात्	....	....	....

(8) श्लोक क्र. 3,6 और 9 कण्ठस्थ कर कक्षा में सुनाइए।

पञ्चदशः पाठः

प्रकृतिवेदना

(प्रस्तुत पाठ पर्यावरण सुधार को लक्ष्य कर लिखा गया एक संवादपरक पाठ है। इसमें नदी और वृक्ष के परस्पर वार्तालाप द्वारा यह बताने का प्रयास किया गया है कि नदियाँ रासायनिक तत्वों से किस सीमा तक प्रदूषित हो रही हैं, तथा निरंतर काटे जाने से वृक्षों का कैसा विनाश हो रहा है पाठ का प्रारंभ गर्मी से व्याकुल चार मित्रों के वार्तालाप से होता है। नदी में स्नान करते समय उन्हें प्रकृति (नदी और वृक्ष) की वेदना भरी आवाज सुनाई देती है।)

(ग्रीष्मर्तौ विद्युदभावे प्रचण्डोष्मणा पीडितः मयड.क गृहात् निष्क्रम्य)

मयड्.क – उष्मणा पिडितोअस्मि् शरीरात् स्वेदधाराः प्रस्रवन्ति। अये! मित्राणि इत आगच्छ।

शशांक – (आगत्य) वयस्य! घर्मोष्मणा व्याकुलोऽहम्।

मयड्.क – अहमपि तथैव। आगच्छ खारुननदीतीरं गच्छामः। (ते सर्वे नदीतीरं गच्छन्ति। मार्गे एकं सरः दृष्ट्वा)

संस्कारः – मयड.क! पश्य, अस्मिन् सरसि कानिचन् विकसितानि अन्यानि निमीलितानि पुष्पाणि सन्ति। एतत् कथं सम्भवति?

मयड्.क – मित्र यानि सूर्योदये विकसन्ति तानि पदनानि यानि च चन्द्रोदये विकसन्ति तानि कुमुदिनी इति। (वार्तालापं कुर्वन्तः ते खारुननदीतीरं निमज्जन्ति)

संयोगः – हा हा हा् आनदंप्रदोऽयं जल–विहारः।

मयड्.क – आम्, सत्यमुक्तं भवता। शीतलेऽस्मिन् जले मन्देन समीरेण च मनः प्रसीदति।

शशांक – कीदृशं शोभनं दृश्यम्। मत्स्याः सरिति क्रीडन्ति। मण्डूकाः इतस्ततः प्लवन्ते। तटे समाहिताः कूर्माः जनानां सम्मर्दात् भीताः नद्याम् प्रविशन्ति। (सहसा श्रूयते विषादमयः रोदनध्वनिः)

प्रथमा – (शून्यवाणी) हा धिक्! हा धिक्! कीदृशं मम जीवनम्।

मयड्.क – (इतस्ततः अवलोक्य) नद्याः स्वर इव प्रतीयते।
(अन्यतः अप ध्वनिं श्रूयते)

द्वितीया – (शून्यवाणी) ममापि च जीवनम्अत्यन्तं कष्टप्रदं जातम्।

संस्कारः – (साश्चर्यं विलोकयन्) वृक्षस्य स्वर इव प्रतीयते।
(मित्राणि ध्यानेन परस्परमवलोकयन्ति)

नदी – तव समस्या का अस्ति? मां पश्य, जनाः रासायनिकैः अवकरैः मम जलं दूषयन्ति। कूर्माः मकराः मत्स्यादयः सर्वे जलचराः संत्रस्ताः।

वृक्षः – आम्! सत्यं तव कथनं परं मम व्यथा त्वतोऽपि अधिका। त्वं प्रवहन्ती जीविता तु असि, परं निरन्तरं कर्तनेन वयं तु समूलाः एव नष्टाः भवामः।

(नदीवृक्षयोः एतादृशं विषादं श्रुत्वा ते परस्परं वार्तालापं कुर्वन्ति)

मयङ्.क – नदी वृक्षादयः प्रकृतेः उपहाराः। किन्तु अस्माभिः एते कीदृशी दशा प्रापिताः।

संयोगः – आम्! पश्य! तटे वर्तुलाकारेण स्थितेयं वृक्षावलिःमनसि एतावती व्यथा वहन्त्योऽपि समागतेभ्यः फलानि अर्पयन्ति।

मयङ्.क – निदाघे अस्मिन् एषा नदी अपि स्वशीतलेन जलेन अस्मान् आनन्दयति।

शशांक – अहम् अनुभवामि यत् येन केन प्रकारेण वृक्षकर्तनं जलप्रदूषणं च अवरोधनीयम्। अयमेव अस्माकं सकल्पं स्यात्।

मयङ्.क – साधु! वयं मिलित्वा एतदर्थं जनजागरणाय प्रयत्नं करिष्यामः। उक्तं च–परोपकाराय सतां विभूतयः।

शब्दार्थाः

विद्युदभावे = (विद्युत्+अभावे) बिजली के अभाव में। प्रचण्डोष्मणा = (प्रचण्ड+ऊष्मणा) तेज गर्मी से। आतपकालः = ग्रीष्मऋतु। स्वेदबिन्दवः = पसीने की बूँदें। प्रस्रवन्ति = फूट रही हैं, निकल रही है। आयान्ति = आ रहे हैं। घर्मोष्मणा = धूप के ताप से। निमीलितानि = बन्द। निमज्जन्ति = डुबकी लगाते हैं/स्नान करते हैं। वयस्य = मित्र। समीरेण = हवा से। सरिति = नदी में (सप्तमी एकवचन)। प्लवन्ते = तैरते हैं। सम्मर्दात् = दबने से। विषादमयः = दुःखभरी। त्वत्तोऽपि = तुम्हारे से भी। प्रवहन्ती = बहती हुई। कर्तनेन = काटने से। प्रापिताः = पहुँचा दी गई है। वर्तुलाकारेण = गोलाकार। वृक्षावलिःपेड़ों की पंक्ति। व्यथा = कष्ट, पीड़ा। निदाघे = भीषण गर्मी में। अवकरैः = कूड़े–कचरे से। संत्रस्ता = परेशान (दुःखी)।

अभ्यासप्रश्नाः

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए–

(क) मयङ्.कस्य मनः कथं प्रसीदति?

(ख) जनाः नद्याः जलं कथं दूषयन्ति?

(ग) वृक्षाः समागतेभ्यः किं यच्छन्ति?

(घ) चतुर्णां मित्राणां के सङ.कल्पाः?

(2) निम्नलिखित कथन कौन किससे कहता है–

(क) वयस्य! घर्मोष्मणा व्याकुलोऽहम् ....

(ख) नद्याः स्वर इव प्रतीयते ....

(ग) मम व्यथा तु त्वत्तोऽपि अधिका ....

(घ) प्रकृतेः उपहाराः अस्माभिः अद्य कीदृशी दशा प्रापिताः ....

(3) कोष्टक से विशेषण पदों को छाँटकर विशेष्य पदों के सम्मुख लिखिए–

(भीताः, विषादमयः, कीदृशीम्, शीतले, वर्तुलाकारा)

विशेषणपदानि		विशेष्यपदानि
(क)	....	जले
(ख)	....	कूर्माः
(ग)	....	रोदनध्वनिः
(घ)	....	वृक्षावलिः
(ङ.)	....	व्यथाम्

(4) निम्नलिखित शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) इतस्ततः ....

(ख) शरीरात् ....

(ग) ऊष्मणः ....

(घ) एकतः ....

(ङ.) अन्यतः ....

(च) सम्मर्दात् ....

(छ) त्वत्तोऽपि ....

षोडशः पाठः
मित्रं प्रति पत्रम्

प्रिय मित्र राहुल!

रायपुरनगरात्

सस्नेहं नमस्कारः। दिनांक 5.12.05

तव पत्रं प्राप्य परमं प्रासीदम्। त्वं रायपुरनगरस्य दीपावल्याः शोभावर्णनम् अपृच्छः। अतः अत्रत्यां शोभां वर्णयामि।

अस्मिन् वर्षे नवम्बर मासस्य चतुर्दशतारिकायां दीपावल्याः उत्सवः अतीव आह्त्मादेन जनैः सम्पादितः। सर्वे जनाः स्वगृहाणि आपणान् च सुधया अलिम्पन्। क्रीडनकैः चित्रैश्च अलङ्.कुर्वन्। आपणे नानाप्रकाराणि मिष्टान्नानि सज्जितानि आसन्। रात्रौ भवनेषु विद्युद्दीपपकङ्.कतयः तैलदीपपकङ्.क्तयश्च नगरस्य शोभां वर्धयन्ति स्म। सर्वत्र महान् जनसम्मर्दः आसीत्। अहं वारं–वारं त्वाम् अस्मरम्। अस्तु।

त्वमपि स्वनगरस्य कस्यचिद् उत्सवस्य विषये लिखित्वा मम औत्सुक्यं तोषय। स्वपित्रोः चरणेषु सादरं मम प्रणामान् कथय।

तवाभिन्नं मित्रम्

सूरजः

अष्टम् श्रेणीस्थः

शब्दार्थाः

सस्नेहम् = प्रेम सहित। तव = तुम्हारा। प्रासीदम् = प्रसन्न हुआ। अपृच्छः = पूछा है। अस्मिन् = इसमें। चतुर्दशतारिकायाम् = 14वीं तिथि में। अतीव = अधिक। आह्लादेन = खुशी से, आनन्द से। जनैः = मनुष्यों द्वारा। सम्पादितः = मनाया गया। स्वगृहाणि = अपने घरों को। आपणान् = दुकानों को। सुधया = चूने से। अलिम्पन = पुताई किए। अलङ्.कुर्वन्–सजाया। वर्धयन्ति = वृद्धि करते हैं, बढ़ाते हैं। जनसम्मर्दः = लोगों की भीड़। उत्सवस्य = किसी उत्सव के। औत्सुक्यम् = उत्सुकता को। तोषय = सन्तुष्ट करो। कथय = कहो।

(1) निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(अ) अस्मिन् पत्रे कस्य शोभावर्णनं वर्तते?

(ब) राहुलः कस्मिन् नगरे निवसति?

(स) दीपावल्याः उत्सवः कदा भवति?

(द) जनाः स्वगृहाणि आपणान् च केन माध्यमेन अलङ्.कुर्वन्ति?

(इ) आपणे नानाप्रकाराणि कानि सज्जितानि आसन्?

(2) निम्नांकित शब्दों का सन्धि विच्छेद कर नाम लिखिए—

चित्रैश्च, अलङ्.कुर्वन्, दीपावल्याः, नमस्कारः, त्वमपि।

(3) दिए हुए शब्दों को उचित रिक्त स्थानों में भरिए—

(जनाः, सर्वत्र, त्वाम्, वर्णयामि, परमम्)

(1) ....महान् जनसम्मर्दः आसीत्।

(2) अतः अत्रत्यां शोभां ....।

(3) सर्वे .... स्वगृहाणि सुधया अलिम्पन्।

(4) अहं वारं—वारं ....अस्मरम्।

(5) तव पत्रं प्राप्य .... प्रासीदम्।

(4) निम्नांकित शब्दों के विभक्ति और वचन लिखिए—

अस्मिन्, दीपावल्याः, पित्रोः, आह्लादेन, जनैः।

(5) ''दीपावलि'' इकारान्त स्त्रीलिंग शब्द की कारक रचना लिखिए।

सप्तदशः पाठः

अन्तरिक्षज्ञानम्

अन्तरिक्षम् अनन्तम् असीमं चास्ति। अस्मिन् अनन्ते अन्तरिक्षे अनन्तानि नक्षत्राणि सन्ति, यथा हि पुच्छलताराः ग्रहाः, उपग्रहाः आदित्याः, चन्द्रमाः सप्तर्षयः ध्रुवप्रभृतयः।

अस्मिन् सौरमण्डले एकः आदित्यः, नवग्रहाः अनेके उपग्रहाः च सन्ति। सूर्यः अतीवविशालः पृथिव्या त्रयोदशलक्षगुणितः अस्ति। अयं पृथिवीतः त्रिंशल्लक्षाधि कनकोटिमीलपरिमिते दूरे स्थितः अस्ति।

चन्द्रोऽपि सूर्य इव दृश्यते, परम् अयं पृथिव्याः अपि लघुः अस्ति। चन्द्रमाः पृथिवीतः लक्षद्वयमीलपरिमिते दूरे वसति। सर्वेषु नक्षत्रेषु एकः अयमेव धरायाः समीपवर्ती अस्ति। अयं पृथिवीं परितः अष्टाविंशतितमे दिवसे परिक्रमां पूरयति। अस्माकं पृथिवी पञ्चषष्टिअधिकंत्रिशत्दिनेषु सूर्यं परिभ्रमति। आकाशे सहस्त्रं धूमकेतवः, अनेकाः उल्काः अपि प्राप्यन्ते। धूमकेतवः ग्रहेभ्यः उपग्रहेभ्यः च भिन्नाः भवन्ति। अस्य पुच्छम् अतिविशालं स्वल्पेनैव वाष्पेण निर्मित भवति। धूमकेतुः सौरमण्डलस्य बहिरेव इतस्ततः परिभ्रमति। जनाः एनम् अपशकुनस्यापि द्योतकं मन्यन्ते।

उल्काः आकारे अत्यन्तः लघवः सन्ति। गहने तिमिरे, निर्मले गनने, सकलं नभः विभाजयन् तीव्रेण वेगेन उल्कापिण्डः्मन दूरं गत्वा लुप्तो भवति। एषा सामाजिकमान्यता अस्ति यत् उल्कापिण्डस्य पतनात् धरायाः विनाशः भवति। अतएव जनाः पञ्चपुष्पाणां नामोच्चारणेन अशुभनिवारणं कुर्वन्ति।

आधुनिक वैज्ञानिकाः बुध–शुक्र–पृथिवी–मडंगल–वृहस्पति–शनि–यूरेनस (अरुण)–नेपच्यून(वरूण)–प्लूटो (यम) इति नवग्रहान् वर्णयन्ति। चन्द्रः पृथिव्योपग्रहः इति कथ्यते। परं भारतीयाः ज्योतिर्विदः सूर्य–चन्द्र–मंगल–बुध–बृहस्पति, शुक्र–शनि–राहु–केतून् नवग्रहान् निर्दिशन्ति। यद्यपि अन्तरिक्षविषयकाणि अनेकानि तथ्यानि वैज्ञानिकैः घोषितकृतानि तथापि अद्यपि ते अधिकाधिक् ज्ञातुं प्रयत्नशीलाः एव सन्ति। अन्तरिक्षविज्ञानम् अतीव रोचकम् अस्ति। अस्माभिः विषयोऽय ज्ञातव्यः।

शब्दार्थाः

अनन्तम् = जिसका अन्त न हो। असीमम् = जिसकी सीमा न हो। आदित्यः = सूर्य। नक्षत्राणि = तारागण। सौरमण्डले = सौरमण्डल में। अष्टाविंशतिः = अट्ठाइस। अतीव = अत्यधिक। त्रयोदशः = तेरह। लक्षगुणितः = लाखगुणा। त्रिंशत् = तीस। कोटिः = करोड़। लघुः = छोटा। लक्षद्वयम् = दो लाख। पूरयति = पूर्ण करता है। धरा = धरती, पृथ्वी। परितः = चारों ओर। परिक्रमा = चारों ओर घूमना। सहस्त्रम् = एक हजार। भिन्न = अलग। पुच्छम् = पूंछ। स्वल्पना = थोड़ा।

निर्मितम् = बना हुआ। बहिः = बाहर। इतस्ततः = इधर–उधर। परिभ्रमति = घूमते हैं। द्योतकः = सूचक। सहस्त्र = हजारों। प्राप्यन्ते = प्राप्त कहते है। भवन्ति = होते हैं। वाष्पेण = वाष्प से। मन्यन्ते = मानते हैं। लघवः = छोटी। द्विधा = दो टुकड़ों में। विभाजयन् = बांटता हुआ। पतनात् = गिरने से। निवारणम् = रोकना। ज्योतिर्विदा = ज्योतिषशास्त्र जानने वाले (ज्योतिषी)। ज्ञातुम् = जानने के लिए। निर्दिशन्ति = निर्देश करते हैं। ज्ञातव्यः = जानना चाहिए।

अभ्यासप्रश्नाः

(1) नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(1) सौरमण्डले कति ग्रहाः सन्ति?

(2) सूर्यः पृथिवीतः कति गुणितः विस्तृतः अस्ति?

(3) धरायाः समीपवर्तिनक्षत्रं किम् अस्ति?

(4) चन्द्रः धरायाः परिक्रमां कतिदिनेषु पूरयति?

(2) निम्नलिखित संख्यावाची शब्दों से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

(एकः / अष्टाविंशतिः / सहस्त्रं / नव)

(1) सौरमण्डले .... आदित्यः अस्ति्।

(2) गगने .... धूमकेतवः सन्ति।

(3) सौरमण्डले .... उपग्रहाः सन्ति।

(4) ग्रहाः .... सन्ति।

(3) पाठ में प्रयुक्त 'चन्द्रमस्' शब्द के रूप सभी विभक्तियों में लिखिए।

(4) निम्नलिखित शब्दों का समास–विग्रह कीजिए–

(क) अनावश्यकम् (ख) अनन्तम् (ग) अनादिः

(घ) अभावः (ड.) असत्यम्।

अष्टादशःपाठः

महाकविः कालिदासः

कविकुलगुरूं कालिदासम् अस्मिन्युगे को न जानाति। विद्वद्भिः विश्वस्य साहित्यकारेषु अस्य गणना कृता। बहवः विद्वांसः उज्जयिन्यामेव अस्य जन्मभूमिं मन्यन्ते। अनेनैव हेतुना तस्य कृतिषु उज्जयिन्याः वर्णनं स† जातम्। उक्तम् च–''विक्रमादित्यस्य नवरत्नेषु कालिदासः एकः''।

कथ्यते–कालिदासः महामूर्खः आसीत्। राज्ञः शारदानन्दस्य विद्योत्तमा नाम्नी एका विदुषी कन्या आसीत्। सा स्वविद्यया अतिदर्पशीला आसीत्। सा प्रतिज्ञातवती यत् शास्त्रार्थे यः मां पराजेष्यति, तेन सह विवाहं करिष्यामीति। तां प्रतिज्ञां श्रुत्वा बहवः विद्वांसः आगच्छन् तया सह शास्त्रार्थे सर्वे पराजिताः अभवन्। ईर्ष्यावशात् ते राजकन्यायाः विवाहं महामूर्खेण सह सम्पादयितुं व्यचारयन्। ते मूर्खस्य अन्वेषणार्थं निर्गताः। सहसा कस्यचिद् वृक्षस्य शाखायां स्थित्वा तां शाखां कर्तयन्तम् एकं मूर्खम् अपश्यन्। तस्मात् वृक्षात् अधः अवतार्य ते अवदन् भो पुरुष! वयं परमसुन्दर्या राजकन्यया सह तव विवाहं कर्त्तुमिच्छामः। वयं स्वगुरुरुपेण तव परिचयं दास्यामः। परम् त्वं किमपि न वक्ष्यसि। तं मूर्खं नीत्वा विद्वांसः राजकन्यायाः समीपम् आगतवन्तः अवदन् च। एषोऽस्माकं गुरुः सकलशास्त्रपारगड्.तः विद्वान् चास्ति परन्तु सम्प्रति मौन–व्रतं धारयति। तदा राजकन्या विद्योत्तमा एकाम् अड्.गुलिकाम् उत्थाय दर्शितवती। यस्यार्थः एको ब्रह्मा द्वितीयो नास्ति। तां दृष्ट्वा महामूर्खः कालिदासः व्यचारयत्। एषा मम एकं–नेत्रं स्फोटयितुम् इच्छति अहं तु तव द्वे नेत्रे स्फोटयिष्यामि इति मत्वा स्वकीये द्वे अड्.गुलिके दर्शितवान्। अन्ते राजकन्या पराजिता सञ्जाता। पश्चात् कालिदासेन सह विद्योत्तमायाः परिणयः जातः।

एकदा रात्रौ उष्ट्रस्य ध्वनिःअभवत्। ध्वनिं श्रुत्वा तस्य भार्या अयं ध्वनिः केन कृतः इति अपृच्छत्। कालिदासेन उष्ट्रशब्दस्य स्थाने उट्र इति शब्दः उच्चारितः विद्योतमा ज्ञातवती यत् एषः मूर्खः अस्ति। सा कालिदासस्य अपमानं कृत्वा गृहात् निष्कासितवती। कालिदासः खिन्नो भूत्वा देवीम् अराधयत्। तदनुग्रहेण सः महान् विद्वान् अभवत्। यदा कालिदासः ज्ञानं प्राप्य गृहं प्रत्यावर्तत तदा द्वारं पिहितम् आसीत्। सः अकथयत्–''अनावृतकपाटं द्वारं देहि।'' भार्या अपृच्छत्–''अस्ति कश्चिद्वाग्विशेषः?'' कालिदासः स्वप्रतिभायाः पत्नीम् अतोषयत्। पत्न्याः शब्दत्रयम् आश्रित्य कालिदासः त्रयाणां–काव्यानां रचनामकरोत्।

यथा–अस्ति इति शब्देन कुमारसम्भवम्–अस्त्युतरस्यां दिशि देवतात्मा, कश्चित्इति शब्देन मेघदूतम्–''कश्चित् कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः'' तथा वाक् इति शब्देन–रघुवंश महाकाव्यम्–''वागर्थाविवसम्पृक्तौ''। तदनन्तरं कालिदासेन चतुर्णां ग्रन्थानां रचना कृता। कालिदासेन

मुख्याः सप्तग्रन्थाः विरचिताः। एतेषु द्वे महाकाव्ये रघुवंशमहाकाव्यं कुमारसम्भवञ्च, द्वे खण्डकाव्ये मेघदूतं ऋतुसंहारञ्च। त्रीणि नाटकानि अभिज्ञानशाकुन्तलं, विक्रमोर्वशीयं मालविकाग्निमित्रञ्च। तेषु अभिज्ञानशाकुन्तलं श्रेष्ठतमा रचनाअस्ति। जर्मनकविः गेटेमहोदयेन अस्य काव्यस्य प्रशंसा कृता। अस्य ग्रन्थस्य विषये एका सूक्तिः प्रचलिता

''काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला''

कालिदासस्य भाषा अलङ्.करिकी अस्ति। उपमा अलङ्.कारस्य प्रयोगे सः प्रवीणोऽस्ति। उक्तं च–''उपमा कालिदासस्य'' एतेषु काव्येषु प्रकृतेः मनोहराणि चित्राणि लक्ष्यन्ते। तस्य प्रकृतेः अनुरागः आसीत्।

कविकुलशिरोमणिमहाविकालिदासस्य काव्यरचना विश्वस्य निधिः इति मन्यन्ते जनाः। अधुना महाकविकालिदासः पार्थिवशरीरेण नास्ति तथापि यशःकायेन विद्यते। विद्वांसः कथयन्ति–

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येषा यशःकाये जरामरणजं भयम्।।

शब्दार्थाः

विद्वद्भिः = विद्वानों के द्वारा। मन्यन्ते = मानते हैं। सञ्जातम् = हुआ है। नाम्नी = नाम। स्वविद्यया = अपनी विद्या के कारण। दर्पशीला आसीत् = घमण्डी थी। विवाहं करिष्यामि = विवाह करूंगी। व्यचारयत् = विचार किया। अन्वेषणार्थं = ढूंढने के लिए। निर्गताः = निकल पड़े। स्थित्वा = बैठकर। कर्तयन्तम् = काटते हुए। अवतीर्य = उतारकर। कर्त्तुमिच्छामः = कराना चाहते हैं। वक्ष्यसि = बोलते हो। उत्थाय = उठाकर। स्फोटयितुम् = फोड़ने के लिए। उष्ट्रस्य = ऊंट की। ज्ञातवती = जान गई। खिन्नो भूत्वा = दुःखी होकर। प्रत्यावर्तत् = लौटा। पिहितम् = बन्द। अस्तिकश्चिद्वाग्विशेषः? = वाणी में कुछ विशेषता है? अस्त्युतरस्यां दिशि देवतात्मा = उत्तर दिशा में देवताओं की आत्मा है। स्वाधिकारत्प्रमत्तः = अपने काम में प्रमाद करने से। वागार्थविवसंपृक्तौ = शब्द और अर्थ के समान मिला हुआ। अलङ्.कारिकः = अलङ्कार युक्त। यशः कायेन = यश रूपी शरीर से। जयन्ति = जीवित रहते हैं। जरामरणजं = बुढ़ापां और मृत्यु।

अभ्यासप्रश्नाः

(1) संस्कृत में उत्तर लिखिए–

(क) कालिदासस्य जन्मभूमिः कुत्र अस्ति?

(ख) के मूर्खान्वेषणार्थं निर्गताः?

(ग) कया सह कालिदासस्य विवाहः जातः?

(घ) कस्या अनुग्रहेण कालिदासः विद्वान् अभवत्?

(ङ.) कालिदासेन केषां ग्रन्थानां रचना कृता?

(2) उचित संबंध जोड़िए–

(1) कालिदासस्य जन्मभूमिः – अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(2) विक्रमादित्यस्य नवरत्नेषु – मेघदूतम्

(3) विद्योत्तमायाः पिता – उज्जयिनी

(4) कालिदासस्य श्रेष्ठकृति – रघुवंशम्

(5) खण्डकाव्यम् – कालिदासः

(6) महाकाव्यम् – शारदानन्दनृपः

(3) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(अ) विक्रमादित्यस्य .... कालिदासः एकः।

(ब) शास्त्रार्थे यः मां .... तेन सह विवाहं करिष्यामि।

(स) एकदा रात्रौ .... ध्वनिम् अभवत्।

(द) जर्मनकविना .... अस्य काव्यस्य प्रशंसा कृता।

(4) सन्धि विच्छेद कर प्रकार बताइए–

तदनुग्रहेण

कश्चित्

वाग्विशेषः

रचनामकरोत्

अस्त्युत्तरस्याम्

(5) दिए गए सामासिक शब्दों के विग्रह कर नाम लिखिए–

नवरत्नम्

राजकन्या

एकोनविंशः पाठः

सूक्तयः

1. श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्— श्रद्धावान व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करता है।
2. योगः कर्मसु कौशलम्— कर्मों में कुशलता ही योग है।
3. वीरभोग्या वसुन्धरा—पृथ्वी वीरों के द्वारा भोगी जाती है।
4. महाजनो येन गतः स पन्थाः—श्रेष्ठ लोग जिधर से जाएं वही मार्ग है।
5. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः—जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं।
6. सत्यमेव जयते नानृतम्—सत्य की ही जीत होती हे, असत्य की नहीं।
7. परोपकाराय सतां विभूतयः—सज्जनों की सम्पत्ति भलाई के लिए होती है।
8. दूरतः पर्वताः रम्याः—दूर के ढोल सुहावने।
9. धर्मेण हीनाः पशुभिर्समानाः— धर्महीन (मनुष्य) पशु के समान है।
10. लोभः पापस्य कारणम्—लोभ पाप का कारण है।

शब्दार्थाः

लभते = पाता है। कर्मसु = कर्मों में। कौशलम् = कुशलता। वसुन्धरा = पृथ्वी। भोग्या = भोग के योग्य करता है। महाजनो = सज्जन, महापुरुष। अनृतम् = असत्य। सताम् = सज्जनों की। रम्याः = सुन्दर। लोभः लालच।

अभ्यासप्रश्नाः

(1) निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(अ) कः ज्ञानं लभते?

(ब) देवताः कुत्र रमन्ते?

(स) धर्मेण हीना नराः कीदृशाः भवन्ति?

(द) दूरतः पर्वताः कीदृशाः दृश्यन्ते?

(इ) पापस्य कारणं किम्?

(2) "लभ्" धातु का रूप वर्तमानकाल आत्मनेपद में तीनों पुरुषों और तीनों वचनों में

लिखिए।

(3) निम्नांकित शब्दों का सन्धि विच्छेद कर प्रकार लिखिए–

नार्यस्तु, सत्यमेव, नानृतम्।

(4) निम्न शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

ज्ञानम्, सताम्, लोभः, जयति

(5) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. श्रद्धावान् .... ज्ञानम्।
2. परोपकाराय सतां ....।
3. .... जयते नानृतम्।
4. धर्मेण .... पशुभिः समानाः।
5. दूरतः पर्वताः ....।

इकाई–3
व्याकरणिक विधाएँ
उच्चारण

ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट कृति मानव मस्तिष्क है। मानव मस्तिष्क की सम्पूर्ण गतिविधियाँ, क्रियाकलाप ही इस उत्कृष्टता को सार्थकता प्रदान करते हैं और इन सभी का आधार है भाषा! शिशु जन्म से ही माता की आवाज से ही पहचान आरंभ करता है। कल्पना कीजिये यदि ध्वनि न होती तो क्या होता? यदि भाषा न होती तो क्या होता।

सही उच्चारण के बिना भाषा अर्थ का अनर्थ कर सकती है। अतः उच्चारण ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है।

''यथा–भारं न बाधते राजन् यथा लाधति बाधते''

एक भारवाहक (मजदूर) को भार ढोते देख राजा ने प्रश्न पूछा कि 'भारं बाधति' धातु आत्मने पदी धातु है। अतः 'बाधति' प्रयोग गलत है। इसलिए मजदूर ने उत्तर दिया मुझे भार उतना पीड़ा नहीं दे रहा है राजन्! जितना 'बाधति' सुन कर पीड़ा हो रही है।

अतः भाषा की शुद्धता का ध्यान रखना प्राथमिक आवश्यकता है।

भाषा का ध्वन्यात्मक स्वरुप–भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि है। भाषा की इन ध्वनियों को लिखित रूप को वर्ण कहते हैं। इन वर्णों का प्रयोग ध्वनि और ध्वनि चिन्ह दोनों के लिए होता है। भाषा के मौखिक रूप को लिखित रूप देने में ये सहायता करते हैं। इस दृष्टि से वर्ण ध्वनियों के उच्चारित और लिखित दोनों रूप देने में ये सहायता करते हैं। इस दृष्टि से वर्ण ध्वनियों के उच्चारित और लिखित दोनों रूपों को स्थिरता प्रदान करते हैं। वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं।

किसी भी भाषा को लिखित रूप देने के लिए वर्ण व्यवस्था स्व नियमों पर आधारित होती है। वर्णमाला स्थिर करने के लिए स्वनियम स्थिर करना पड़ता है।

संस्कृत की मानक देवनागरी वर्णमाला है, इसके मुख्य भाग निम्नानुसार है–

(1) **स्वर**– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

हस्वस्वर – अ इ उ ऋ लृ

दीर्घ स्वर – आ ई ऊ ॠ

संयुक्त स्वर – ए ऐ ओ औ

कुल 13

अंतस्थ संज्ञक वर्ण य र ल व

उष्मसंज्ञक वर्ण श ष स ह

श्तालव्य ष (मूर्धन्य), स (दन्त्य) नाम से प्रसिद्ध है।

(2) व्यंजन–

क वर्ग	क ख ग घ ड.
च वर्ग	च छ ज झ ञ
ट वर्ग	ट ठ ड ढ ण
त वर्ग	त थ द ध न
प वर्ग	प फ ब भ म
अन्तस्थ	य र ल व
उष्म	श ष स ह
कुल	**33**

(3) अनुस्वार अं (–ं–)

(4) विसर्ग– कः (:)

(5) संयुक्ताक्षर – व्यंजन क्ष (क् + ष्) त्र (त् + र्)
ज्ञ (ज् + ञ्) श्र (श् + र)

व्यंजन वर्णों में कोई भी स्वर मिल जाने से ही अक्षर का निर्माण होता है–

जैसे क् + अ =क, क + आ = का आदि

अ, इ, उ स्वर ह्रस्व स्वर है। शेष सभी स्वर आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ दीर्घ हैं।

उल्लेखनीय है कि अ, इ, उ और आ, ई, ऊ में क्रमशः दीर्घता के अतिरिक्त गुणीय (स्थानगत) भेद भी है। स्वर के उच्चारण में जिव्हा के स्थान परिवर्तन से गुण भेद होता है। दीर्घता का महत्व होता है इससे अर्थ परिवर्तन भी हो जाता है।

उदाहरण– वसुदेवः वासुदेवः
मरुतः मारुतः

ऋ के दीर्घ रूप ॠ का भी प्रयोग होता है।

होतकार (हवन करने वाला) हृस्व ऋ का प्रयोग संस्कृत के तत्सम शब्दों में होता है। यथा ऋषिः, ऋतु आदि।

लृ का भी प्रयोग संस्कृत में होता है जैसे

तव् + लृकारः = तवल्कारः (तुम्हारी आकृति)

जिस प्रकार अन्य स्वरों की मात्राएँ हैं उसी प्रकार 'ऋ' का भी मात्रा रूप होता है। यथा–कृषि, कृपा, तृप्ति।

मानव मात्र के श्वास व श्वास (लेना व छोड़ना) दोनों में सतत् ध्वनि होती रहती है। यही ध्वनि भाषा के रूप में परिवर्तित होती है। शरीर के आठ स्थानों से यह ध्वनि निकलती है परा, पश्यन्ति, मध्यमा, वैखरी के रूप में।

पाणिनी शिक्षा नामक ग्रंथ में पाणिनी ने कहा है–

अष्टौ स्थानानि वर्णानामुरूः कण्ठः शिरस्तथा।

जिह्वामूलं च दन्ताश्च नासिकौष्ठौ च तालु च।।

अनुनासि क–मुखं और नासिका से उच्चरित होने वाले वर्ण अनुनासिक कहलाते हैं। अनुनासिक वर्ण का उच्चारण अर्धमात्रिक होता है। यथामुजगं, तुरङ्गं, चञ्चलः, परायणात्, नयनम्, मड्.गलम्

वाक्य में प्रयोग– सः चटकः च† चलः। अहं जलं आनयानि।

प्रश्नः

(1) भाषायाः ध्वन्यात्मकं स्वरूपं बोधयन्तु।

(2) स्वर व्यज्जनयोः परिभाषा ददातु तथा हस्वदीर्घवर्णश्च बोधयन्तु।

(3) अनुस्वार विसर्ग/संयुक्ताक्षरवर्णानां एकैकं उदाहरणं दीयन्ताम्।

(4) य्, र्, ल् व इति अन्तस्थ वर्णस्य उच्चारण स्थानं लिखन्तु।

(5) श्, ष्, स् ह इति उष्म वर्णस्य उच्चारण स्थानं बोधयन्तु।

(6) क्ष्, त्र्, ज्ञ इति संयुक्त वर्णस्य भिन्नं कुर्वन्तु।

रेफयुक्त शब्द/संयुक्ताक्षर

बालक अपने जीवन में आने वाले शब्द अपने माता–पिता तथा बड़ों से सीखता है। एक बड़ी मात्रा में वह सामान्य शब्दावली का प्रयोग करता है जिसको वह परम्परा से प्राप्त करता है। परम्परा से प्राप्त शब्दावली ही उसकी निजी विरासत है जिसमें वह निरन्तर वृद्धि करता रहता है।

भाषा की लघुतम इकाई, अर्थ के स्तर पर शब्द है। शब्द सार्थक होता है, ''शब्द'' स्वतंत्र होता है, प्रयोग और अर्थ दोनों दृष्टियों से स्वावलम्बी होता है।

किसी भी भाषा को लिखित रूप देने के लिए वर्ण व्यवस्था स्वनियमों पर आधारित होती है। प्राचीन भारतीय भाषा शास्त्र में यही वर्ण विज्ञान माना गया। इस वर्ण माला में स्वर, व्यंजन, अनुस्वार, विसर्ग, संयुक्ताक्षर, रेफयुक्त शब्द आदि गुम्फित है।

रेफयुक्त शब्द

''जलतुम्बिका न्यायेन रेफस्य उर्ध्वगमनम्''

जैसे सूखे तुमा को जल में डाल देने से वह ऊपर हो जाता है वैसे ही व्यंजन अक्षर के ऊपर रेफ चला जाता है। वस्तुतः रेफ स्वर रहित होता है–

यथा– निरजन–निर्जन, दुरदशा–दुर्दशा

परदर्शन–प्रदर्शन, परसाद–प्रसाद

संयुक्ताक्षर–दो स्वरों या दो व्यंजन वर्णों के योग से बने होते हैं। संयुक्त स्वर व संयुक्त व्यंजन दोनों ही होते हैं। संयुक्त स्वर चार ही होते हैं।

अ + इ = ए

अ + उ = ओ

अ + ए = ऐ

अ + ओ = औ

संयुक्त व्यंजन

क् + ष = क्ष

त् + र = त्र

ज् + ञ = ज्ञ

श् + र = श्र

अभ्यासप्रश्नाः

1. रेफयुक्त शब्दस्य सूचीं निर्माणं कुर्वन्तु ?
2. अधोरकारस्य सूचीं कल्पयन्तु।
3. संयुक्ताक्षर वर्णानां अन्वेषयन्तु।
4. संयुक्त व्यंजन वर्णानां सूचीं निर्मियन्तु।

सन्धि

जिस प्रकार हमारे शरीर में संधियाँ जोड़ हैं, उसी प्रकार शब्द मानव में भी संधियाँ होती हैं। जिस प्रकार संधि के बिना हमारा शरीर क्रिया संचालन में कठिनाई का अनुभव करता है उसी प्रकार शब्द भी संधि के बिना अपूर्ण ही है।

व्याकरण के नियमों के अनुसार स्वर, व्यंजन तथा विसर्गों के विकास युक्त मेल को संधि कहते हैं।

यथा– सु+आगतम् = स्वागतम्

इस प्रकार से संधि करने से कहीं पर दो अक्षरों के बीच में एक नया अक्षर आ जाता है।

संधि के भेद–सामान्यतया संधि के तीन भेद होते हैं–

1. स्वर संधि या अच् संधि
2. व्यंजन संधि या हल् संधि
3. विसर्ग संधि

1. स्वर सन्धि – दो स्वरों के बीच होने वाली संधि को स्वर संधि कहते हैं।

प्रकार– स्वर संधि के आठ प्रकार होते हैं।

2. दीर्घ स्वर संधि–अकः सवर्णे दीर्घः

जब ह्रस्व या दीर्घ स्वर (अ, इ, उ, ऋ) के बाद समान सजातीय स्वर आये तब दोनों के स्थान में एक दीर्घ स्वर हो जाता है–

यथा–

परम	+ अर्थः	= परमार्थ	(अ + आ = आ)
देव	+ आलयः	= देवालयः	(अ + आ = आ)
विद्या	+ अभ्यासः	= विद्याभ्यासः	(अ + आ = आ)
विद्या	+ आलयः	= विद्यालयः	(अ + आ = आ)
कवि	+ इन्द्र	= कवीन्द्र	(इ + इ = ई)
कवि	+ ईश्वरः	= कवीश्वरः	(इ + इ = ई)
मही	+ इन्द्रः	= महीन्द्रः	(ई + इ = ई)
लक्ष्मी	+ ईश्वरः	= लक्ष्मीश्वरः	(ई + ई = ई)
सु	+ उक्तिः	= सूक्तिः	(उ + उ = ऊ)
विष्णु	+ उदयः	= विष्णूदयः	(उ + उ = ऊ)
पितृ	+ ऋणम्	= पितृणम्	(ऋ + ऋ = ऋ)

गुण सन्धि– (ए, ओ, अर, अल्)

यदि अ/आ के बाद इ/ई हो तो दोनों मिलकर ए
अ/आ के बाद उ/ऊ हो तो दोनों मिलकर ओ
अ/आ के बाद ऋ हो तो दोनों मिलकर अर्
अ/आ के बाद लृ हो तो दोनों मिलकर अल् हो जाता है।

यथा–

देव + इन्द्रः	= देवेन्द्रः	(अ + इ = ए)
गण + ईशः	= गणेशः	(अ + ई = ए)
महा + इन्द्रः	= महेन्द्रः	(आ + इ = ए)
महा + ईशः	= महेशः	(आ + ई = ए)
सूर्य + उदयः	= सूर्योदयः	(अ + उ = ओ)
महा + उत्सवः	= महोत्सवः	(आ + उ = ओ)
एक + ऊनविंशति	= एकोनविंशतिः	(अ + ऊ = ओ)
महा + ऊर्मि	= महोर्मिः	(अ + ऊ = ओ)
महा + ऋषिः	= महर्षिः	(अ + ऋ = अर्)
तव + लृकारः	= तवल्कारः	(अ + लृ = अल्)

3. वृद्धि सन्धि – वृद्धिरेचि

अ/आ के बाद यदि ए/ऐ आए तो दोनों मिलकर 'ऐ'

अ/आ के बाद ओ/औ आए तो दोनों मिलकर 'औ' हो जाते हैं।

यथा— एक + एकम् = एकैकम् (अ + ए = ऐ)

मत + ऐक्यम् = मतैक्यम् (अ + ऐ = ऐ)

सदा + एव = सदैव (आ + ए = ऐ)

महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम् (आ + ए = ऐ)

परम + ओषधिः = परमौषधिः (अ + ओ = औ)

गड.ग + ओधः = गड्.गौघः (आ + ओ = औ)

दिव्य + ओषधम् = दिव्यौषधम् (अ + ओ = औ)

महा + औत्सुक्यम्= महौत्सुक्यम् (आ + औ = औ)

यण् स्वर संधि–'इकोयणचि' (य्, व्, र्, ल्)

ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, लृ के बाद किसी असवर्ण (असमान) स्वर के आने पर इ का य् उ का व् ऋ का र् तथा लृ का ल् हो जाता है।

यथा— यदि + अपि = यद्यपि (इ + अ = य)

इति + अदि = इत्यादि (इ + आ = या)

प्रति + एकम् = प्रत्येकम् (इ + ए = ये)

अनु + अयः = अन्वयः (उ + अ = व)

अनु + एषणम्= अन्वेषणम् (उ + ए = वे)

मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा (ऋ + आ = रा)

लृ + आकृतिः = लाकृतिः (लृ + आ = ला)

5. अयादि स्वर संधि–''एचोअयवायावः''

(अय्, आय्, अव्, आव्)

यदि ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई स्वर हो तो

ए – का अय्

ऐ – का आय्

ओ – को अव्

औ – को आव्

हो जाता है।

यथा– ने + अनम् = नयनम् (ए + अ = अय)

नै + अकः = नायकः (ऐ + अ = आय)

भो + अनम् = भवनम् (ओ + अ = अव्)

पौ + अकः = पावकः (औ + अ = आव्)

पूर्वरूप संधिः पदान्त ए/ओ के बाद यदि अ हो तो दोनों मिलकर पूर्वरूप अर्थात् ए/ओ हो जाते हैं। यह संधि अवग्रह द्वारा ( ) सूचित होती है।

वृक्षे + अपि = वृक्षेऽपि

ते + अपि = तेऽपि

हरे + अत्र = हरेऽत्र

रामो + अपि = रामोऽपि

को + अयम् = कोऽयम्

पररूप संधिः अकारान्त उपसर्ग के बाद ए/ओ से प्रारंभ होने वाली धातु हो तो दोनों मिलकर पररूप अर्थात् ए/ओ हो जाते हैं।

उदाहरण– प्र + एजते = प्रेजते (अ + ए = ए)

उप + ओषधि = उपोषति (अ + ओ=ओ)

प्रकृतिभाव संधिः (ईद्‌देद्‌द्विवचनं प्रगृह्यम्)

द्विवचन में रहने वाले इकारान्त तथा एकरान्त शब्दों के बाद यदि कोई स्वर आते तो उनमें संधि नहीं होती ।

यथा– हरी + इमौ = हरी इमौ

भानू + उमौ = भानू उमौ

माले + एते = माले एते

माले + इति = माले इति

व्यंजन संधि

जब संधि के कारण व्यंजनों में परिवर्तन होता है तो उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

जैसे– (1) श्चुत्व व्यंजन संधि– सकार और त वर्ग (त, थ, द, ध, न) का शकार या च वर्ग के साथ योग होने (आगे या पीछे) पर स्–श् में और त वर्ग–च वर्ग में परिवर्तित हो जाता है।

यथा– (1) स = श्

रामस्+शेते = रामश्शेते (स+श् =श्श्)

(2) त वर्ग = च वर्ग

यज्+नः = यज्ञः (ज्+न् = ज्ञ्)

सद्+जनः =सज्जनः (द्+ज् =ज्ज्)

(2) ष्टुत्व (स–ष्, त वर्ग– ट वर्ग)

नियम–सकार या त वर्ग का यदि षकार या ट वर्ग के साथ (आगे या पीछे) योग हो तो स के स्थान में ष् और त वर्ग के स्थान में ट वर्ग हो जाता है।

(1) स् – ष

हरिस् + टीकते = हरिष्टीकते (स् + ट् =ष्ट्)

(2) त वर्ग = ट वर्ग

इसः + तः = इस्टः (ष् + त् =ष्ट्)

षष् + थः = षष्ठः (ष् + थ् =ष्थ्)

(3) जशत्व–पदान्त, क्, च्, ट्, त्, प् के बाद यदि कोई स्वर वर्ण हो अथवा कोई व्यंजन (वर्णों के तृतीय, चतुर्थ, पंचम, वर्ण तथा य्, र्, ल्, व्, ह्) हो तो क्, च्, ट्, त्, ् क्रमशः ग्, ज्, ड्, द्, ब् में बदल जाते हैं।

यथा–(1) प्रथम वर्ण + स्वर = तृतीय वर्ण + स्वर

वाक् + ईशः = वागीशः (क् + ई =गी)

जगत् + ईशः = जगदीशः (त् + ई =दी)

(4) चर्त्व (ग्, ज्, ड्, द्, ब् = क्, च्, ट्, त्, प्)

नियम– वर्गों के तृतीय वर्ण के बाद यदि कोई अघोष वर्ण (वर्ग का प्रथम, द्वितीय वर्ण एवं श, ष, स) हो तो तृतीय वर्ण अपने वर्ग का प्रथम वर्ण हो जाता है।

उदाहरण– दिग् + पालः = दिक्पालः (ग् + प् =क्प्)

विपद् + कालः = विपत्कालः (द् + क् =त्क्)

(5) अनुस्वार–(म् + न् – ं)

नियम– (1) म के बाद यदि कोई व्यंजन वर्ण आए तो म् के स्थान में अनुसार हो जाता है।

यथा– हरिम् + वन्दे = हरिंवन्दे

किम् + वा = किं वा

सम् + हारः = संहारः

नियम–(2) (न् – ं)

अपदान्त न् के बाद यदि अन्तः स्थ तथा अनुनासिक को छोड़कर कोई अन्य व्यंजन वर्ण आता है तो न् के स्थान में अनुस्वार हो जाता है।

यथा– यशान् + सि = यशांसि

(6) परस्वर्ण– (अनुस्वार–पञ्चम वर्ण)

नियम–अनुस्वार के बाद यदि कोई वर्ण स्पर्श हो तो अनुस्वार के स्थान में उसके आगे वाले वर्ण के वर्ग का पच्चम वर्ण हो जाता है।

यथा– शां+तः = शान्तः (ं + त् = न्त्)

सं+तोषः = संतोषः (ं + त् = न्त्)

(7) लत्व– (त वर्ग– ल्)

नियम– त वर्ग के बाद ल् आए तो त वर्ग का ल् हो जाता है किंतु न् के बाद ल् के आने पर सानुनासिक लकार (लं) होता है जैसे

यथा– तत्+लीनः = तल्लीनः (त्+ल् = ल्ल्)

(8) च का आगम

नियम– ह्रस्व के बाद यदि द् आए तो द् के पहले एक त् का आगम होकर उसे श्चुत्व (च) होता है। किंतु पदान्त दीर्घ स्वर के बाद छ् के आने पर विकल्प से त् (च्) का आगम होता है।

यथा– तरु+छाया = तरुच्छाया

अनु+छेदः = अनुच्छेदः

(9) र् का लोप और पूर्व स्वर का दीर्घत्व

नियम– र् के बाद यदि र् हो तो पहले र् का लोप हो जाता है और उसके पूर्ववर्ती स्वर का दीर्घ हो जाता है।

यथा– निर्+रसः = नीरसः

(10) ह्–चतुर्थ वर्ण

नियम–वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ वर्ण के उपरान्त यदि ह् आए तो वह विकल्प से अपने पूर्ववर्ती वर्ण के वर्ग का चतुर्थ वर्ण हो जाता है।

यथा–वाक्+हरिः = वाग्घरिः या वाग्हरिः

(11) षत्व विधान

नियम–इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ तथा क वर्ग के बाद आदेश एवं प्रत्यय के स् को ष् हो जाता है।

यथा– रामे + सुप् (सु) = रामेषु

साधु+सुप् (सु) = साधुषु

वाक्+सुप् (सु) = वाक्षु

विसर्ग संधि

विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन की संधि विसर्ग संधि कहलाती है। प्रमुख प्रकार है–

1. सत्व (ः–श्, ष्, स्)

नियम–(1) विसर्ग (ः) के बाद यदि च् या द् हो तो विसर्ग का श्, ट् या ढ् हो तो ष् ? त् या थ् हो तो स् हो जाता है।

यथा– निः + चल = निश्चलः (ः+च् =श्च्)

नमः+ ते = नमस्ते (ः+त् =स्त्)

इतः+ततः = इतस्ततः (ः+त् =स्त्)

(2) विसर्ग के बाद यदि श्, ष् या स् आए तो विसर्ग का क्रमशः श्, ष्, या स् हो जाता है या विसर्ग ही रह जाता है।

यथा– हरिः + शेते = हरिश्शेते (ः + श् + श्श्) या हरिःशेते

निः + संदेह = निःसंदेहःया निस्सन्देहः

(3) विसर्ग के पहले यदि इ या उ हों और बाद में क्, ख् या प्, फ् में से कोई वर्ण हों तो विसर्ग के स्थान में ष् हो जाता है।

यथा– निः + कपटः = निष्कपटः

दुः + कर्म = दुष्कर्म

निः + फलः = निष्फलः

2. उत्व (ः – उ)

नियम–(1) विसर्ग के पहले यदि अ हो और विसर्ग के बाद भी अ हो तो विसर्ग के स्थान में उ होता है। इसके बाद गुण तथा पूर्वरूप हो जाता है।

यथा– नृपः + अवदत् = नृपोऽवदत्

(2) विसर्ग के पहले यदि अ हो और बाद में कोई घोष व्यंजन (वर्गों के तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम वर्ण य, थ, र, ल, व) हो तो विसर्ग के स्थान में उ हो जाता है।

यथा– तपः + वनम् = तपोवनम् (अः + व = अ + उ + व् =ओव्)

मनः + रथः = मनोरथः (अः + र् = अ + उ + र् = ओर्)

3. रुत्व (ः – र्)

नियम–यदि विसर्ग के पहले अ, आ को छोड़ कोई अन्य स्वर हो तथा बाद में कोई स्वर या घोष व्यंजन हो तो विसर्ग के स्थान में र् हो जाता है।

यथा– मुनिः + अयम्= मुनिरयम् (इः + अ=इर् + अ)

पितुः + इच्छा = पितुरिच्छा (उः + इ=उर् + इ)

4. लोप (ः – लोप)

नियम–(1) यदि विसर्ग के पहले अ हो और बाद में अ को छोड़ कोई अन्य स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। और पुनः वहाँ कोई संधि नहीं होती।

यथा– सः + पठति = स पठति

सः + करोति = स करोति

एषः + हरिः = एष हरिः

सः + उवाच = स उवाच

(2) यदि विसर्ग के पहले आ हो और विसर्ग के बाद घोष व्यंजन या कोई स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

यथा– छात्राः + आगच्छन्ति = छात्रा आगच्छन्ति

देवाः + रक्षन्तु = देवा रक्षन्तु

अभ्यासप्रश्नाः

1. संधिः काअस्ति। संधेः प्रकारान् बोधयन्तु।
2. स्वरसंघेः कति प्रकाराः भवन्ति।
3. दीर्घस्वर संधिं सोदाहरणं प्रदशर्यन्तु।
4. अयादि संधिं सोदाहरणं वर्णयन्तु।
5. पूर्वरुपसंधि बोधयन्तु सोदाहरणम्।
6. प्रकृति भावसंधिं सोदाहरणम् लिखन्तु।
7. व्यंजनसंघेः किमपि पञ्च उदाहरणं वर्णयन्तु।
8. विसर्ग संधि सोदाहरणं बोधयन्तु।

समास

परिभाषा– "समसनं इति समासः"

शब्दों के संक्षिप्तीकरण को समास कहते हैं।

यथा– 1. पितरौ–माता च पिता च

2. शरदशिशिर –वसन्तौशरदः च शिशिरः च वसन्तः च

प्रकार

1. अव्ययी भाव समास– जिसका पहला पद अव्यय हो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।

यथा– 1. अधिहरिः –हरौ इति

2. यथाशक्तिः– शक्तिम् अनतिक्रम्यं

3. उपकृष्णम् –कृष्णस्य समीपम्

4. प्रतिगृहम् –गृहम् गृहम् प्रति

2. तत्पुरुष समास– जिसके पदों के मध्य द्वितीया से सप्तमी तक कोई न कोई संबंध वाचक अव्यय होता है उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

(उत्तर पदप्रधानः तत्पुरुषः)

अर्थात् जिसका पहला शब्द दूसरे शब्द के अर्थ को निश्चित करें।

यथा– 1. ग्रामगतः – ग्रामं गतः – द्वितीया तत्पुरुष

2. बाणहतः – बाणेन हतः – तृतीया तत्पुरुष

3. दीनदानम् – दीनाय दानम् – चतुर्थी तत्पुरुष

4. वृक्षपतितः – वृक्षात् पतितः – पंचमी तत्पुरुष

5. राजपुत्रः – राज्ञः पुत्रः – षष्ठी तत्पुरुष

3. द्विगु समास– संख्यावाचक शब्द पहले रहने वा तत्पुरुष समास की द्विगु संज्ञा होती है। (संख्या पूर्वो द्विगुः)

यथा– 1. पञ्चवटी – पञ्चानां वटानां समाहारः
2. नवरात्रि – नवानां रात्रीणां समाहारः
3. त्रिवेदी – त्रयाणां वेदानां समाहारः
4. सप्तर्षि – सप्तानां ऋषीणां समाहारः

इसी प्रकार द्विगु समास से संबंधित सामासिक पदों की रचना कर उनका वाक्यों में प्रयोग करो।

4. कर्मधारय समास– जिसमें पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य हो उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

यथा– 1. नीलकमलम्– नीलं कमलम्
2. पीताम्बरम् – पीतं अम्बरम्
3. घनश्यामः – घनः इव श्यामः
4. लम्बोदरम् – लम्बं उदरम्

कर्मधारय समास के चार अन्य पदों का चयन कर वाक्य प्रयोग कीजिए।

5. द्वन्द समास– इसमें दो या दो से अधिक समानाधिकरण शब्द होते हैं जिसका 'च' से संबंध बनाया जाता है। (उभय पदप्रधानो द्वन्द्वः)

यथा– 1. रावणविभिषणौ – रावणश्च विभिषणश्च
2. रामलक्ष्मणौ – रामः च लक्ष्मणः च
3. भीमार्जुनौ – भीमः च अर्जुनः च

6. बहुब्रीहिः समास– जहाँ अन्य पद के अर्थ की प्रधानता होती है उसे बहुब्रीहिः समास कहते हैं। (अन्य पदार्थ प्रधानः बहुब्रीहिः)

यथा– 1. पीताम्बरः – पीतम् अम्बरम् यस्य सः (विष्णुः)
2. दशाननः – दश आननानि यस्य सः (रावणः)
3. वीणापाणिः – वीणा पाणौ यस्याः सा (सरस्वती)
4. चन्द्रशेखरः – चन्द्रःशेखरे यस्य सः (चन्द्रशेखरः)

अभ्यासप्रश्नाः

1. समासस्य परिभाषा सोदाहरणं ददतु।
2. तत्पुरुष समासस्य परिभाषा सोदाहरणं वर्णयन्तु।
3. द्विगुसमासः + बहुब्रीहिसमासश्च भेदसहितं बोधयन्तु।
4. द्वन्द्व समासस्य परिभाषा ददतु तथा द्वन्दसमासस्य उदाहरणत्रयं वर्णयन्तु।
5. द्विगु बहुब्रीहि समासयोः भेदं सोदाहरणं कर्वन्तु।

कारक

आपने कभी सोचा होगा—भाषा प्रयोग में कारक का कितना महत्व है। कारक के अभाव में वाक्य रचना की परिकल्पना कीजिए। कैसे किस तरह के वाक्य बनेंगे? शायद सार्थक वाक्य बनना संभव भी नहीं होगा? अतएव कारक प्रकरण की सही समझ बच्चों में स्थापित करना आवश्यक है।

आप जानते हैं कि क्रिया के साथ जिसका सीधा संबंध होता है, उसे कारक कहते हैं। संस्कृत में छः कारक होते हैं जबकि हिन्दी में संबंध और संबोधन को मिलाकर आठ कारक माने जाते हैं।

आइए, इस अनुच्छेद से कारकों की पहचान करते हैं—

(हितोपदेश/पंचतंत्र की कहानी का एक अंश रखा जाता है। पाठ्यपुस्तक से भी सामग्री ली जा सकती है।)

क्रियाकलाप

उपर्युक्त अनुच्छेद के प्रत्येक वाक्यों का अनुशीलन करके देखें। कारकों का किस तरह प्रयोग किया गया है—

क्र.	शब्द	कारक/विभक्ति	प्रयोग के नियम

अब आप जान गए होंगे कि इन वाक्यों में क्रिया से किस तरह संबंध बिठाया गया है। बहुत ही साधारण से वाक्य लेते हैं जैसे—

1. रामः रावणं बाणेन हन्ति।
2. बालकः कलमेन् पत्रं लिखति।

अब प्रश्न उठता है—

कः हन्ति/लिखति।

किम् हन्ति/लिखति (पत्रं/रावणं)

केन? बाणेन/कलमेन्।

इस तरह आप सभी कारकों को समझने के लिए क्रिया कर सकते हैं। आइए, कारकों के बारे में संक्षिप्त में जानकारी प्राप्त करें—

(1) कर्ताकारक— क्रिया के पहले 'कः' लगाकर प्रश्न करने से जो उत्तर आता है वह कर्ता होता है। जैसे— रामः फलं खादति। प्रश्न— कः खादति? उत्तर है रामः। अतः यहां रामः कर्ताकारक है।

(2) कर्मकारक— क्रिया के पहले 'किम्' या कम् लगाकर प्रश्न करने से जो उत्तर आता है उसे कर्मकारक कहते हैं। जैसे—बालकः पुस्तकं पठति। किम् पठति। 'पुस्तकम्' अतः यहां पर 'पुस्तकम्' कर्मकारक है।

(3) करण कारक—क्रिया के पहले कि 'केन्' लगाकर प्रश्न करने से जो उत्तर आता है, वह करण कारक कहलाता है। जैसे— बालकः कलमेन् पत्रं लिखति। प्रश्न बालकः केन लिखति? उत्तर—कलमेन अतः यहां पर कलमेन करण कारक है।

(4) सम्प्रदान कारक–क्रिया से पहले 'कस्मै' जोड़कर प्रश्न करने से जो उत्तर आता है उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। मोहनः भोजनाय आगच्छति। प्रश्न मोहनः कस्मै आगच्छति। उत्तर–भोजनाय। अतः यहां भोजनाय सम्प्रदान कारक है।

(5) अपादान कारक– क्रिया के पहले 'कस्मात्' जोड़कर प्रश्न करने से जो उत्तर आता है उसे अपादान कारक कहते हैं। प्रश्न कस्मात् पतति? उत्तर–अश्वात्। अतः यहां पर अश्वात् अपादान कारक है।

(6) संबंध कारक–संस्कृत में संबंध को कारक की श्रेणी में नहीं रखा गया है क्योंकि इसका क्रिया से सीधा संबंध नहीं होता है, जो संबंध है वह परम्परागत है। फिर भी क्रिया के पहले 'कस्य' लगाकर प्रश्न करने से जो उत्तर आता है उसे संबंधकारक कहते हैं। जैसे–रामस्य पुस्तकम्। प्रश्न कस्य पुस्तकम्। उत्तर–'रामस्य' अतः यहां पर 'रामस्य' संबंधकारक है।

(7) अधिकरण कारक–इस कारक में क्रिया से पहले 'कस्मिन्' जोड़कर प्रश्न करने से जो उत्तर आता है उसे अधिकरण कारक कहते हैं। जैसे–खगाः वृक्षे तिष्ठन्ति। प्रश्न कस्मिन् तिष्ठन्ति? उत्तर–वृक्षे। यहां पर वृक्षे अधिकरण कारक है।

विद्यार्थियों को कारक एवं विभक्तियों का ज्ञान निम्नांकित तालिका के माध्यम से देवें तथा इसके साथ कुछ प्रयोग कराएं–

कारक	**विभक्ति**	**चिहन**
कर्ता	प्रथमा	ने
कर्म	द्वितीया	को
करण	तृतीया	से (द्वारा)
सम्प्रदान	चुतर्थी	को, के लिए
अपादान	पंचमी	से, अलग होने पर
संबंध	षष्ठी	का, के, की, रा, रे, री
अधिकरण	सप्तमी	में, पर
संबोधन	प्रथमा	हे! अहो! अरे!

अभ्यासप्रश्नाः

1. कारकविभक्त्योः भेदं वर्णयन्तु।
2. कारकस्य चिह्नानि बोधयन्तु।
3. षष्ठी–कारकं, कथम् मा?
4. कारकस्य कति प्रकाराः भवन्ति तथा प्रकारान् सोदाहरणं लिखन्तु?
5. कर्ताकारकतः अधिकरण कारक पर्यन्तं क्रमशः त्रयत्रयवाक्येषु निर्मियन्तु।
6. स्वकीयेन पाठ्यपुस्तकेन एकमनुच्छेदमालक्ष्य कारकचिन्हानि उद्धरन्तु?

गतिविधि

क्रमाकः	शब्दाः	कारकाणि

क्रिया

हिन्दी भाषा में शब्दों से पढ़ना, लिखना, खाना, हंसना आदि करना या होना पाया जाता है, उसे क्रिया कहते हैं। क्रिया के मूल को धातु कहते हैं। धातु के अर्थ से किसी व्यापार का ज्ञान होता है। इनको तिङ्न्त भी कहते हैं।

यथा– भू से 'होना' भवति

लिख–लिखना–लिखति

गम्–जाना–गच्छति

हस्–हंसना–हसति

क्रिया के भेद– क्रिया के तीन भेद हैं। यथा–

1. अकर्मक 2. सकर्मक 3. द्विकर्मक

अकर्मक क्रिया–जिस क्रिया का फल कर्ता पर ही रहता है उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं अथवा जिन क्रियाओं में कर्म की आवश्यकता नहीं होती है,उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

यथा– 1. छात्रः पठति

2. बालिका गच्छति

टीप– (अकर्मक क्रिया के वाक्य उच्चारण में 'क्या' किसको प्रश्न शेष नहीं रहता है।)

सकर्मक क्रिया–क्रिया का फल जहाँ कर्ता के अतिरिक्त किसी अन्य पर पड़ता है अथवा जिन क्रियाओं में कर्म विद्यमान रहता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

यथा–1.मोहनः फलं खादति।

2. कृष्णः पुस्तकं पठति।

टीप– सकर्मक क्रिया में 'क्या' 'किसको' प्रश्न शेष रहता है।

द्विकर्मक क्रिया–जिन क्रियाओं में द्विकर्मों की आवश्यकता पड़ती है, उन्हें द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।

यथा– 1. याचकः राजानं अन्नं याचति।

2. गुरुः छात्रं धर्मं भाषते।

टीप– एक प्रधान कर्म और दूसरा अप्रधान कर्म होता है।

अभ्यासप्रश्नाः

1. क्रिया किमुच्यते ? क्रियायाः प्रकारान् सोदाहरणं ददतु?
2. अकर्मक क्रियां सोदाहरणं बोधयन्तु तथा न्यूनात्यूनं पञ्चोदाहरणनि प्रदर्शयन्तु?
3. सकर्मक क्रियायाः परिभाषा सोदाहरणं ददतु।
4. द्विकर्मक क्रिया किमुच्यते उदाहरणत्रयं दीयन्ताम्।

पुरुष

जिस सर्वनाम के द्वारा वक्ता, श्रोता और अन्य का बोध हो वह पुरुष वाचक सर्वनाम कहलाता है। पुरुष वाचक सर्वनाम के तीन रूप होते हैं–

संस्कृत में तीन पुरुष होते हैं–

1. प्रथम पुरुष
2. मध्यम पुरुष
3. उत्तम पुरुष

1. प्रथम पुरुष– वक्ता या लेखक, श्रोता या पाठक जिस पुरुष के विषय में बात करता है उस व्यक्ति के लिए प्रयुक्त सर्वनाम प्रथम पुरुष कहलाता है–

'वह' 'वे दोनों' 'वे सब' के लिए प्रथम पुरुष का प्रयोग होता है।

यथा– 1. कृष्णः पुस्तकं पठति।
2. सः कुत्र निवसति।
3. माता फलं भक्षयति।
4. सः मातरं स्मरति।

2. मध्यम पुरुष– वक्ता या लेखक जिस व्यक्ति से अपनी बात कहता है उस व्यक्ति के लिए जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग होता है, वह मध्यम पुरुष कहलाता है।

यथा– 1. त्वं कुत्र निवससि।
2. त्वं अत्र पठसि।

टीप– मध्यम पुरुष में तू, तुम दो और तुम सब के लिए प्रयोग होता है।

3. उत्तम पुरुष– वक्ता या लेखक जिस सर्वनाम का प्रयोग अपने लिए करता है, वह उत्तम पुरुष कहलाता है। मैं, हम दो और हम सब के लिए उत्तम पुरुष का प्रयोग होता है।

यथा– 1. अहं गृहं गच्छामि।
2. आवां द्वौ शिक्षकौ।
3. अहम् अष्टम्यां कक्षायां पठामि।

अभ्यासप्रश्नाः

प्रथम मध्यम, उत्तम पुरुषेषु संस्कृत वाक्यानि निर्मियन्तु।

1. पुरुषः किमुच्यते, पुरुषाणां प्रकारान् वर्णयन्तु।
2. प्रथम पुरुषं कानि अपि प† चवाक्यानि लिखित्वा पतिपादयन्तु।
3. उत्तम, मध्यम पुरुषयोः भेदौउल्लेखयन्तु।
4. रामः विद्यालयं गच्छति, त्वं पुस्तकं पठसि अहं भोजनं करोमि इति वाक्येषु पुरूषाणां भेदान् कुर्वन्तु।
5. प्रथम मध्यम पुरुषयोः भेदौ वर्णयन्तु।

काल

क्रिया के जिस रुप से समय का ज्ञान होता है उसे काल कहते हैं। क्रिया के आधार पर कर्त्तृ वर्तमान, भूत एवं भविष्य का बोध करता है अतः समय के बोध के लिए वर्तमान काल के लिए लट्लकार, भूतकाल के लिए (लड़.लकार) एवं भविष्यकाल के लिए (लृटलकार) का प्रयोग किया जाता है।

1. वर्तमान काल– क्रिया की निरंतरता का बोध होता है अर्थात् कार्य का वर्तमान समय में होना पाया जाता है।

यथा– रामः खादति
त्वं कुत्र गच्छसि
अहं क्रीडामि

2. भूतकाल– जिसमें कार्य की समाप्ति की सूचना हो उसे भूतकाल कहते हैं अर्थात् जो हो चुका हो उसे व्यक्त करने के लिए भूतकाल का प्रयोग किया जाता है।

यथा– अहं गृहम् अगच्छम्
रामः सीताया सह वनं अगच्छत्
शालायाः कार्यं पूर्णमभवत्।

3. भविष्यत् काल–जहाँ कार्य का बाद में होना पाया जाता है वह भविष्यत् काल कहलाता है।

यथा– अहं भोजनं भक्षयिष्यामि
सः भोजनं भक्षयिष्यति
त्वं भोजनं भक्षयिष्यसि

अभ्यासप्रश्नाः

1. कालः इति शब्दस्य परिभाषा ददतु तथा प्रकारान् सोदाहरणनि प्रतिपादयन्तु।
2. वर्तमान कालमधिकृत्य प†चवाक्यानि लिखन्तु।
3. भविष्यकालस्य विषये प†चवाक्यानि निर्मियन्तु।
4. वर्तमान कालस्य वाक्यानि, भविष्यकाले परिवर्तनं कुर्वन्तु (केषाग्चित् प†चवाक्यानाम्)
5. वर्तमानकाले भूतकाले च भेदं कुर्वन्तु।
6. वर्तमान, भूत, भविष्य कालामालक्ष्य प†च–प†च वाक्यानि लिखन्तु।

वचन

जिससे किसी संख्या का बोध हो उसे वचन कहते हैं। अर्थात् संख्या को विनिर्दिष्ट करना वचन कहलाता है।

संस्कृत में वचन तीन होते हैं–

1. एकवचन 2. द्विवचन 3. बहुवचन

वचनों का प्रयोग

1. जाति वाचक अर्थ में प्रायः एकवचन का प्रयोग होता है। कभी–कभी बहुवचन का भी प्रयोग होता है।

   यथा– 1. सिंहः पशुरेव नान्यः (एकवचन)

   2. ब्राह्मणाः वेदाध्ययनं कुर्युः (बहुवचन)

2. द्वय, युग, युग्म, युगल में द्विवचन का प्रयोग करने पर भी एक वचन में ही प्रयुक्त होते हैं।

   यथा– 1. नेत्रद्वयम्, पदयुगम्, चरणयुगलम् हस्तयुग्मम् आदि

3. एक शेष द्वन्द्व समास से बने शब्द भी द्विवचन में होते हैं।

   यथा– माता–पिता = पितरौ

   भ्राता–भगिनी = भ्रातरौ

4. वर्ण, समुदाय, गुणत्रय, चतुष्टय आदि शब्द एकवचन में प्रयोग किये जाते हैं।

   यथा– छात्रगणः अध्यापक वर्गः गुणत्रयम आदि।

5. संस्कृत में कर, चरण, नेत्र, कर्म आदि सदा द्विवचन में प्रयोग किये जाते हैं।

   यथा– नेत्रे निमील्य। कर चरणौ च प्रक्षालयति।

6. संस्कृत में द्विव उभौ शब्द द्विवचनान्त होते हैं।

   यथा– द्वेनेत्रे, द्वौ नरौ, उभौ, रामकृष्णौ आदि।

7. संस्कृत में दम्पत्ति शब्द (पति–पत्नी) द्विवचन में आता है।

8. कति यति आदि का प्रयोग बहुवचन में होते हैं।

   यथा– कति छात्राः। यति शिक्षकाः

9. आदरार्थी शब्द बहुवचन में होते हैं।

   यथा– गुरुवः आगच्छन्ति।

अभ्यासप्रश्नाः

1. वचनं किमुच्यते। कति वचनस्य प्रकारान् उल्लेखयन्तु।
2. द्वय, युग–युग्म, युगल इति शब्दान् सरल संस्कृत वाक्येषु प्रयोगं कुर्वन्तु।
3. एक शेष द्वन्द्व समासं सोदाहरणं वर्णयन्तु।
4. वर्ण–समुदाय–गुणत्रय–चतुष्टय इत्यादीनां शब्दानां वाक्येषु प्रयोगं कुर्वन्तु।
5. द्वे नेत्रे, दौ नरौ, उभौ, कृष्णौ इति शब्दान् सरल–संस्कृत भाषायां उल्लेखयन्तु।
6. कति, यति, इति शब्दौ सरल संस्कृत वाक्येषु प्रयोगं कुर्वन्तु।
7. आदरार्थी शब्दान् सोदाहरणं वर्णयन्तु।

लिंX

लिX का अर्थ होता है 'चिह्न जिसके द्वारा यह पता चले कि अमुक संज्ञा स्त्री जाति के लिए एवं अमुक संज्ञा पुरुष जाति के लिए प्रयुक्त हुई है, उसे लिंX कहते हैं। ये पूर्व से ही निश्चित है।

लिंX के भेद–

संस्कृत भाषा में प्रत्येक अर्थ बोधक शब्द तीन लिंड़गों में ही सन्निहित होता है जिनके नाम इस प्रकार हैं–

अ. पु**ल्लिं**X

ब. स्त्री**लिं**X

स. नपुंसक लिX

(अ) संज्ञा के जिस रुप से पुरुष जाति का बोध होता है उसे **पुलिX** कहते हैं।

यथा– रामः, कृष्णः, मोहनः, महावीरः, कालिदासः, बुद्धः आदि।

1. कालिदासः कविकुलगुरुः कथ्यते।
2. रामः पुस्तकं पठति।

(ब) स्त्रीलिX– संज्ञा के जिस रुप से स्त्री जाति का बोध होता है उसे स्त्रीलिड़ग कहते हैं।

यथा– कन्या, शाला, बाला, लता, रमा आदि।

1. लता फलं भक्ष्यति।
2. रमा ग्रामं गच्छति।

(स) नपुंसक लिX–संज्ञा के जिस रुप से उभय लिंगों (पुल्लिड़ग एवं स्त्रीलिड़ग) का ज्ञान होता है, उसे नपुंसक लिङ्ग कहते हैं।

यथा– पुस्तकम्, ज्ञानम्, फलम्, वनम्

1. इदं मम पुस्तकम्।

अभ्यासप्रश्नाः

1. पुल्लिङ्ग शब्दानां सरल संस्कृते कानिचिद् प†चवाक्यानां निर्माणं कुर्वन्तु।
2. स्त्रीलिङ्ग शब्दानां सूचीं कल्पयन्तु तथा सरल संस्कृते कानिचिद् प†चवाक्यान् प्रदर्शन्तु।
3. उभय लिङ्गस्य परिभाषा एवं कयोश्चित् द्वयोः वाक्ययोः निर्माणं कुर्वन्तु।

वाच्य

संस्कृत में तीन वाच्य होते हैं–

1. कर्तृवाच्य
2. कर्मवाच्य
3. भाववाच्य

सकर्मक धातुओं का प्रयोग कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य में होता है।

कर्तृवाच्य – जिस क्रिया का संबंध कर्त्ता के साथ हो वह कर्तृवाच्य कहलाता है।

यथा– रामः ग्रन्थं लिखति।

कर्मवाच्य – जिस क्रिया का संबंध कर्म के साथ हो कर्मवाच्य कहलाता है।

यथा– रामेण ग्रंथः लिख्यते।

सकर्मक – क्रिया का फल कर्त्ता के अतिरिक्त अन्य पर पड़ता है।

कर्तृवाच्य– देवदत्तः ग्रामं गच्छति।

कर्मवाच्य– देवदत्तेन ग्रामः गम्यते।

अकर्मक – क्रिया का फल कर्त्ता पर ही रहता है।

कर्तृवाच्य– गोपालः पठति।

कर्मवाच्य– गोपालेन पठ्यते।

भाववाच्य– जिस क्रिया में भाव का बोध हो वहां भाववाच्य होता है।

यथा– रामेण पठ्यते।

तेन पठ्यते।

अभ्यासप्रश्नाः

1. कर्तृवाच्यम् कर्मवाच्य†चसोदाहरणं अवबोधयन्तु।
2. कर्मवाच्यभाववाच्य†च सोदाहरणं प्रदशर्यन्तु
3. सकर्मकाकर्मकयोः भेदः सोदाहरणं कुर्वन्तु।
4. कर्तृवाच्य कर्मवाच्य भाववाच्यानि सोदाहरणं बोधयन्तु।

अव्यय

अव्ययः अर्थात् न व्ययः

जो शब्द पुरुष, स्त्री और नपुंसक लिङग तथा प्रथमा, द्वितीया आदि सात विभक्तियों और एकवचन, द्विवचन, बहुवचन इन तीनों वचनों में एक ही रुप में रहे उसमें कुछ दूसरा विकार न हो वह अव्यय कहलाता है। इनका प्रयोग किसी वाक्य के साथ यथा योग्य अर्थ को बताने में सहायक होता है।

प्रकार–1. स्थान, वाचक, अव्यय

अत्र, यत्र, तत्र, इतः, कुतः, कुत्र, सर्वत्र इत्यादि

वाक्य–1. भवता कुत्र गम्यते।

2. विद्वांसः सर्वत्र मन्यन्ते।

2. **काल वाचक अव्यय–** इदानीम, अधुना, यदा, कदा, सर्वदा, यावत्, तावत्, यद्यपि, सदयः, ह्यः, श्वः।

वाक्य–1. ह्यः रविवासरः आसीत्।

2. अहं श्वः कार्यं करिष्यामि।

3. **प्रकार वाचक अव्यय–** कथम्, इत्थम्, कथमपि, यथा–तथा, सम्यक्।

वाक्य–अहं सम्यक् कार्य करोमि।

4. **समुच्चय वाचक अव्यय**

च, अपि, वा, प्रत्युत, यतः, यत्, हि, अतः

वाक्य– तत्र सीता अपि गच्छति।

5. **संबंध वाचक अव्यय**

विना, ऋते, कृते, प्रभृतिः, सह आदि

वाक्य–1. त्वां ऋते न गच्छति।

2. ज्ञानात् ऋते न मुक्तिः।

6. **परिमाण वाचक अव्यय**

यावत्, तावत्, इयत्, कियत्, ईषत् आदि।

वाक्य– ईषत्, जलम् दीयताम्

7. **निषेधवाचक अव्यय**

ना, नो, नहि, मा, अलम् इत्यादि

वाक्य–1. अलम् शङ्.कया

2. मा वद

3. हसनेन अलम्।

8. **स्वीकृति वाचक अव्यय**

आम, ओम, बाढम्

वाक्य– बाढम् चत्वारि वादनं बेला अस्ति।

9. **आश्चर्य वाचक अव्यय**

अहो, एवम्, या आदि।

वाक्य– अहो, सायं कालो अभवत्।

अभ्यासप्रश्नाः

1. अव्ययं किमुच्यते सोदाहरणं प्रतिपादयन्तु।
2. अत्र तत्र इतः कुतः इति अव्ययानां वाक्येषु प्रयोगं कुर्वन्तु।
3. कालवाचक अव्ययानां प†चवाक्यानि निर्माणं कुर्वन्तु।
4. संबंधवाचक अव्ययानां प†चवाक्यानि लिखन्तु।
5. परिमाणनिषेधवाचकाव्यययोः बोधयन्तु।
6. आश्चर्यवाचकाव्ययस्य केऽपि द्वे वाक्ये लिखन्तु।

उपसर्ग

उप+सर्ग दो शब्दों के मेल से बना है। उप का अर्थ है पूर्व और सर्ग का तात्पर्य है रखना। अर्थात् उपसर्ग सदैव धातु के पहले लगता है।

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।

प्रहाराहारसंहार विहार परिहारवत्।

अर्थात् उपसर्ग धातु के अर्थ को बलपूर्वक परिवर्तित कर देता है।

यथा— 'प्र' उपसर्ग हृ धातुः –प्रहार

हार–हारना, माला प्रहार–मारना (चोट पहुँचाना)

कई बार उपसर्ग लगाने पर भी लगभग वही अर्थ रहता है।

यथा— कृष (कर्ष) = खींचना

किंतु प्र उपसर्ग लगने पर प्रकर्ष अर्थात् जोर से खींचना।

संस्कृत भाषा में (22) द्वाविंशति उपसर्ग है। ये अव्यय के अंतर्गत आते हैं।

1. 'प्र' उपसर्ग प्र+भुक्तम् = प्रभुक्तम्

वाक्य—अनेन प्रभुक्तम् अन्नम्

प्र+युक्तः = प्रयुक्तः

भृत्यःप्रयुक्तः कर्माणि

2. 'परा' परा+हतः = पराहतः

1. पाषाणेन पराहतः जनाःक्रन्दन्ते।
2. सः पराजयते।

3. 'अप' उपसर्ग

1. वायुना अपगता वृष्टिः।
2. शत्रुं दृष्टवा अपवदति मोहनः।

4. 'सम' उपसर्ग

1. सम्भवति अग्निः काष्ठेषु।
2. भूषणैः समल३्कृता कन्या शोभते खलु सर्वदा।

5. 'अनु' उपसर्ग

1. गोप्यः गच्छन्ति अनु कृष्णम्।
2. मिष्ठान्नं भुक्त्वा अनुशेते बालः।

6. 'अव' उपसर्ग

1. शिशुः मातरम् अवलम्बते।
2. खलः सज्जनं अवहसति।

7. 'निस' उपसर्ग

1. ग³गा हिमालयात् निस्सरति।

8. 'दुर्' उपसर्ग

1. मा दुर्वचनं वद।
2. जनः धनं दुष्प्राप्नोति।

9. 'अभि' उपसर्ग

1. सः अभिनयति।

इसी भांति निम्नांकित उपसर्गों को भी वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

10. वि—लम्बः विलम्बः, विरोधः, विकारः
11. अधि—क्षिपति, अधिक्षिपति, अधिगच्छति
12. सु—शोभते, सुशोभते, सुलभः, सुकरः
13. उत्— उच्चरति, उतसृजति, उदघाटयति
14. अति—अतिपरिचयः, अतितरितः, अतिशयः
15. नि— निरुपयति, निमज्जति, निक्षिपति
16. प्रति—प्रतिभाषते, प्रतीक्षते, प्रतिभाति
17. परि—परिवर्तते, परिभवति, परिभ्रमति
18. अपि—अपिजीर्णः, अपिव्रतः, अपिधाव
19. उप—उपवसति, उपकरोति, उपविशति
20. अप—अपेक्षते, अपकरोति
21. दुर—दुराशा, दुर्गति, दुराग्रह

अभ्यासप्रश्नाः

1. उपसर्गः किमस्ति, सोदाहरणं वर्णयन्तु।
2. उपसर्गाणां वाक्येषु लिखन्तु। (केषुचिद् प† चवाक्येषु)
3. 'अनु' उपसर्गं वाक्येषु प्रयोगं कुर्वन्तु।
4. 'प्र' उपसर्गं वाक्येषु वर्णयन्तु।
5. 'परि' उपसर्ग प† चवाक्येषु लिखन्तु।
6. 'अधि' उपसर्गतः निर्मित शब्दानां प† चवाक्येषु बोधयन्तु।

कृदन्त

किसी धातु को संज्ञा वाचक शब्द या विशेषण आदि शब्द बनाने के लिए हम जिन प्रत्ययों का प्रयोग करते हैं उन्हें ''कृत्'' कहते है। ''कृत्'' प्रत्यय को धातु के पीछे जोड़ कर जो शब्द बनता है। उसे ''कृदन्त'' शब्द कहते है। जैसे – कृ के पीछे तुमुन, तव्य अनीय आदि ''कृत्'' प्रत्ययों के आने पर कर्तुम्, कर्तव्यम्, करणीयम् आदि कृदन्त शब्द बनते हैं।

मुख्य कृदन्त प्रत्यय

क्त (त)	शतृ (अत्)
क्तवतु (तवत्)	शानच् (आन्, मान)
क्त्वा (त्वा) तव्य	
तुमुन् (तुम)	अनीय
यत् (य)	

भूतकालिक कृदन्त

क्त और क्तवतु

क्त (त) प्रत्यय भूतकाल के अर्थ में कर्मवाच्य और भाववाच्य में आता है। प्रायः इस प्रत्यय का प्रयोग भूतकाल की क्रिया के रूप में तथा भाववाच्य संज्ञा के रूप में विशेषण के रूप में होतां है। जैसे – तेन पुस्तकं पठितम्। मया अश्वो हृष्टः।

क्तवतु (त्वत्) प्रत्यय कर्तृ वाच्य में भूतकाल की क्रिया के रूप में प्रयुक्त होता है। जैसे – सः पुस्तकं पठितवान्।

क्त्वा त्वा (प्रत्यय) (पूर्वकालिक कृदन्त) एक काम करके जब दूसरा काम किया जाता है। उस समय क्त्वा (त्वा) प्रत्यय पहली धातु के साथ लगता है। जैसेः श्याम खेत चला गया– श्यामः खादित्वा अगच्छत्। अन्य उदाहरण भू+क्त्वा = भूत्वा होकर, पा + क्त्वा = पीत्वा पीकर, दा + क्त्वा = दत्वा देकर।

निर्देश : कई धातुओं के साथ 'क्त्वा' से पहले 'इ' भी लग जाता है। जैसे लिख् + त्वा = लिखित्वा, पत् + त्वा = पतित्वा। पठ् + त्वा = पठित्वा।

विशेष नियम जब धातु से पूर्व कोई उपसर्ग (म, पर, अप, सम, अनु आदि) हो तो त्वा को 'ल्यप्' अर्थात् 'य' हो जाता है। इसका अर्थ भी प्रायः बदल जाता है। जैसे –

गम् + त्वा = गत्वा = आगत्य, आगम्य = आकर

नम + त्वा = नत्वा = प्रणम्य = नमस्कार कर

दा + त्वा = दत्वा = आदाय = लेकर

नी + त्वा= नीत्वा = आनीय = लाकर

तुमुन् (तुम) प्रत्यय (निमित्तार्थक कृदन्त) ''के लिए'' अर्थ में धातु के साथ ''तुमुन्'' लगाते हैं। जैसे– देव पढ़ने के लिए गया = देवः पठितुम् अगच्छत्।

इसी प्रकार गम् + तुमुन्–गन्तुम् – जाने के लिए। स्था + तुमुन् स्थातुम् = ठहरने के लिए। पा + तुमुन् = पातुम् = पीने के लिए। पठ् + तुमुन् = पठितुम् = पढ़ने के लिए।

(वर्तमानकालिक शतृ–शानच् (अत्–आन् या मान प्रत्यय) कृदन्त)

ये दोनों प्रत्यय वर्तमान काल के अर्थ में आते है और इनका प्रयोग ''करता हुआ'' 'खाते हुए' आदि अर्थों में किया जाता है। इनका प्रयोग कर्तृवाच्य में होता है। 'शत' का 'अत्' और 'शानच्' का 'आन्' अथवा 'मान्' शेष रहता है। परस्मैपदी धातुओं के शतृ और आत्मनेपदी धातुओं के साथ 'शानच्' (आन अथवा मान) जोड़ा जाता है।

प्रश्न 1. धातुः प्रत्यय†च लिखन्तु।

भूत्वा = धातु प्रत्यय

पठितुम् = ...

गच्छन् = ...

गन्तव्यम् = ...

भवेत् = ...

प्रश्न 2. कृदन्तस्य प्रकारान् वर्णयन्तु ।

प्रश्न 3. वर्तमानकालिक कृदन्तस्य प†चवाक्यानि लिखन्तु।

प्रश्न 4. निम्नाङित प्रत्ययतः प†च–प†च शब्दान् निर्मियंतु।

1. तव्यत्
2. ण्यत्
3. क्तवतु
4. तुमुन्
5. शानच

क

प्रश्न 5. निम्नांकित धातु प्रत्यययोः शब्द निर्माणं कुर्वन्तु।

1. पठ् – क्त = ...
2. पठ् – क्तवतु = ...
3. पठ् – क्वा = ...
4. पठ् – तुमुन = ...
5. पठ् – शत = ...
6. पठ् – शानच् = ...
7. पठ् – तव्यत् = ...
8. पठ् – अनीय = ...
9. पठ् – यत् = ...

प्रश्न 6. रिक्त स्थानं पूरयन्तु –

1. गम + क्त्वा ....
2. नम + क्त्वा ....
3. दा + ल्यप् ....
4. नी+ ल्यप् ....

इकाई–4 खण्ड (अ)

काव्य तत्व

काव्य तत्वों की सामान्य जानकारी

छन्द

छन्द का अर्थ– छन्द शब्द की विशेषता है– (1) आछ्लादन (2) आह्लादन। अच्छादन से आशय रस भाव या वर्ण्य विषय से है और आह्लादन से अभिप्राय मानव मन का मनोरंजन है। इस प्रकार शब्द तथा मात्रा के नियमों से युक्त अभिव्यक्ति को छन्द कहा जाता है। छन्द में लय गति आरोह–अवरोह होता है।

छन्द दो प्रकार के होते है– (1) मात्रिक छन्द (2) वर्णिक छन्द। जिन छन्दों में मात्राओं की गिनती की जाती है, मात्रिक छन्द कहलाते हैं और जिन छन्दों में अक्षरों की गिनती की जाती है उन्हें वार्णिक छन्द कहा जाता है। उदाहरणार्थ आर्या छन्द मात्रिक छन्द है तथा मन्दाक्रान्ता छन्द वार्णिक छन्द है।

छन्द के भेद– छन्द के निम्नलिखित तीन भेद हैं–

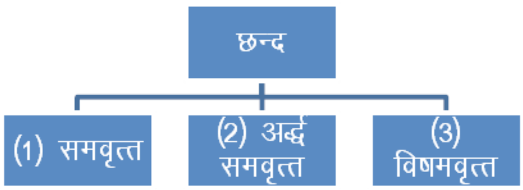

मात्रिक छन्द– आर्या– जिस छन्द के प्रथम चरण में बारह तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ हों, द्वितीय चरण में अठारह तथा चतुर्थ चरण में पन्द्रह मात्राएँ हों, वह आर्या छन्द कहलाता है, जैसे–

ऽ । । ऽऽ   । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ
आपरि तो षद् विदुषां न सा मन्ये प्रयोगविज्ञानम्।
।।   ।। ।। ऽ ऽ ।   ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ
बलवदपि शिक्षितानाम् आत्मन्यप्रत्ययं चेतः ।।

वर्णिक छन्द– अनुष्टुप्– अनुष्टुप् छन्द के प्रत्येक चरण का पंचम वर्ण लघु होता है, द्वितीय चरण तथा चतुर्थ चरण का सप्तम वर्ण भी लघु होता है। सम्पूर्ण चरणों का आठवां वर्ण सदैव दीर्घ होता है। इसके प्रत्येक पाद में आठ वर्ण होते है, जैसे–

। ऽ   । ऽ ।
वागर्थाविव   संपृक्तौ   वागर्थप्रतिपत्तये ।
। ऽ   । ऽ ।
जगतः   पितरौ   वन्दे   पार्वती   परमेश्वरौ ।।

इन्द्रवज्रा– इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः दो तगण, एक जगण तथा अन्त में दो गुरू होते हैं। जैसे–

ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जागौ गः

इस उदाहरण में क्रमशः ऽऽ। = तगण, ऽऽ। = तगण, ।ऽ। = जगण तथा अन्त में दो गुरू हैं, अतः यहाँ इन्द्रवज्रा वृत्त है।

अर्थो हि कन्या परकीय एव,
तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामं,
प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा ।। – शाकुन्तलम्

उदाहरण के संकेतों को देखने से स्पष्ट है कि प्रारम्भ में दो तगण, फिर एक जगण तथा अन्त में दो गुरू हैं, अतः यहाँ इन्द्रवज्रा छन्द है।

उपेन्द्रवज्रा– इसमें जगण, तगण, जगण तथा अन्त में दो गुरू होते है। इसके प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं। जैसे–

। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

त्वमेव माता च पिता त्वमेव ।

दोधक– इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः भगण भगण भगण तथा अन्त में दो गुरु होते है। इसमें छटवें और पांचवे वर्ण पर यति होती है जैसे या न ययौ प्रियमन्यव धूभ्यः अथवा देव सदांध ा कदम्बतलस्थ ।।

। । । । । ।

देव! सदोध ! कदम्बतलस्थ।

शालिनी– जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः एक मगण, दो तगण तथा दो गुरू होते हैं, उसे शालिनी वृत्त छन्द कहते हैं। इसके चौथे तथा सातवें वर्ण पर यति होता है, जैसे–

मगण तगण तगण गु. गु.

ऽऽऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

एको देवः केशवो वा शिवो वा
हयेकं मित्रं भूप तिर्वा यति र्वा ।
एको वासः पत्तने वा वने वा
हयेका नारी सुन्दरी वा दरी वा ।।

व्याख्या– लक्षण के अनुसार इस श्लोक में एक मगण, दो तगण तथा दो गुरू होते हैं। यह शालिनी छन्द का उदाहरण है।

वंशस्थ– इस छन्द के प्रत्येक चरण में बारह वर्ण होते हैं, जो क्रमशः एक जगण और एक तगण, फिर एक जगण एवं एक रगण होता है, जैसे–

जगण तगण जगण रगण

। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

श्रियः कुरूणामधिपस्य पालिनीं
प्रजासु वृतिं यमयुङ्क्त वेदितुम् ।
सः वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ
युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः ।। किरातार्जुनीयम्

व्याख्या– उपर्युक्त उदारहण में क्रमशः जगण, तगण, जगण तथा रगण हैं, जो कि संकेतों से स्पष्ट है, अतः वंशस्थ वृत्त है।

द्रुतविलम्बित– इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः एक नगण और दो मगण एवं एक रगण होता है। जैसे–

नगण भगण भगण रगण

।।। ऽ ।। ऽ । । ऽ । ऽ

नवपलाश पलाश वनं पुरः
स्फुटपरागपरागतपङ्गजम् ।
मृदुलतान्तलतान्तमलोकयत्
सः सुरभिं–सुरभिं सुमनोहरैः ।। – शिशुपालवधम्

व्याख्या– सानुस्वर तथा विसर्गी वर्ण दीर्घ होते हैं। उपर्युक्त, चिन्हों से युक्त इस पंक्ति में क्रमशः नगण, दो भगण तथा एक रगण है, अतःः गणों से युक्त यह श्लोक द्रुतविलम्बित छन्द कहा जा सकता है।

भुजंगप्रयात्– इस छन्द में क्रमशः चार यगण होते हैं,छह छह वर्णो के बाद यति होती है जैसे–

। ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

धनैर्निष्कुलीना कुलीना भवन्ति अथवा

वसन्ततिलका– इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण, भगण, दो जगण तथा अन्त में दो गुरू (ऽऽ) होते है, जैसे–(सदारात्मज ज्ञाति भृत्यो विहाय)

तगण भगण जगण जगण गु. गु.

ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

उल्लङ्घयन् मम समुज्ज्वलतः प्रतापं
कोपस्य नन्नकुलकानन धूमकेतो :।
सद्यः परात्मपरिमाण विवेकमूढः
कः शालभेन विधिना लभतां विनाशम्।।

व्याख्या– उपर्युक्त श्लोक की प्रथम पंक्ति में चिन्हों के आधार पर क्रमशः एक तगण (ऽऽ।), एक भगण (ऽ।।) दो जगण (।ऽ।) तथा अन्त में दो गुरू हैं, अतः इस श्लोक में वसन्ततिलका छन्द है।

मालिनी– छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः दो नगण, एक मगण तथा दो यगण होते हैं। आठ तथा सात पर यति होती है, जैसे–

नगण नगण मगण यगण यगण

। । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

सरसिजमनुबिद्धं शैवलेनापि रम्यं

मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।

इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी

किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।।

व्याख्या– इस श्लोक की प्रथम पंक्ति के ऊपर अंकित चिन्हों के आधार पर दो नगण, एक मगण तथा दो यगण हैं। अतः लक्षण के अनुसार यह 'मलिनी' छन्द है।

मन्दाक्रान्ता– छन्द में क्रमशः मगण, भगण तगण तगण तथा दो गुरू होते हैं। चार, छः और सात वर्णों पर यति होती है, जैसे–

मगण भगण नगण तगण तगण गु. गु.

ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

कश्चित्कान्ता विरह गुरूणा स्वाधिकारात् प्रमत्तः

शापेनास्तंगमित महिमा वर्षभोग्येण भर्तुः।

यक्षश्चक्रे जनक तनयास्नानपुण्योदकेषु

स्निग्धच्छायातरूषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु।।

व्याख्या– लक्षण में निर्दिष्ट लक्षणों के अनुसार इस उदाहरण में क्रमशः मगण, भगण, नगण तथा दो गुरू हैं। अतः यह वृत्त ''मन्दाक्रान्ता'' नामक छन्द है।

पुष्पिताग्रा– इस छन्द के प्रथम तथा तृतीय चरण में दो नगण, एक रगण तथा एक यगण होता है। सम चरण द्वितीय और चतुर्थ में एक नगण, दो जगण, एक रगण तथा एक गुरू होता है, जैसे–

नगण नगण मगण यगण

। । । । । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ

करकिसलयशोभया विभान्ती

नगण जगण जगण रगण गु.

। । । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ। ऽ ऽ

कुचफलभारविनम्रदेहयष्टि ।

स्मितरूचिरविलास पुष्पिताग्रा

व्रजयुवतिव्रततिर्हरेमुदेऽभूत ।।

अलंकार

व्याख्या– उपर्युक्त उदाहरण के प्रथम तथा द्वितीय चरण में चिन्हित संकेतों को देखने से पता चलता है कि यह पुष्पिताग्रा छन्द का उदाहरण है।

संस्कृत भाषा में रसात्मक पद्य में भी रस काव्य की आन्तरिक शोभा को बढ़ाने वाला एवं कविता को स्थिरता प्रदान करने वाला होता है। इतना होने पर भी हमें शरीर क बाह्य शोभा को बढ़ाने के लिए नाना प्रकार के प्रयत्न करने पड़ते हैं। वस्त्र आभूषणों आदि से हम अपने शरीर के बाह्य सौन्दर्य की वृद्धि किया करते हैं। ठीक उसी प्रकार संस्कृत भाषा की सुन्दरता बढ़ाने के लिए भी रस, छन्द आदि के अतिरिक्त अलंकारों की भी आवश्यकता होती है। अर्थात् अलंकारों के द्वारा संस्कृत भाषा की सुन्दरता अत्यधिक बढ़ती है।

काव्यत्व के व्यापक न होने के पर शब्दगत और अर्थगत सौन्दर्य में अतिशय वृद्धि करने वाले तथा रसादि के उपकारक शब्द और अर्थ के धर्म अलंकार कहलाते हैं। अलंकारों की अतिशय शोभा की जनकता अंगादि की तरह समझनी चाहिए। जिस प्रकार संसार में प्राणियों के शरीर में धारण किये हुए अंगादि शारीरिक शोभा को उत्पन्न करके शरीर का उत्कर्ष करते हुए 'अलंकार' कहे जाते हैं। उसी प्रकार शब्द और अर्थ में अतिशय शोभा के आधारक होने के कारण आत्मभूत रस के अतिशय उत्कर्ष उत्पन्न करने वाले धर्म "अलंकार" कहलाते है।

अलंकार शब्दगत, अर्थगत और उभयगत होने से तीन प्रकार के होते हैं। (1) शब्दालंकार (2) अर्थालंकार और (3) उभयालंकार। जहाँ शब्द का परिवर्तन करके उसके स्थान पर उसका पर्यायवाची दूसरे शब्द का अर्थ ग्रहण करने से वह अलंकार नहीं रहता है। वहाँ शब्दालंकार समझना चाहिए और जहाँ शब्द का परिवर्तन करके तथा उसके स्थान पर उस शब्द का पर्यायवाची दूसरा शब्द रख देने से उस अलंकार की क्षति नही होती है। वहाँ अर्थालंकार समझना चाहिए और जहाँ अंशतः शब्द परिवर्तन हो और अंशतः शब्द परिवर्तन न हो, वहाँ उभयालंकार समझना चाहिए।

शब्दालंकार :

शब्द और अर्थ मे से सर्वप्रथम शब्द के ही विषय होने से शब्दालंकार का वर्णन करना उचित है तथा प्राचीन आचार्यों ने शब्दार्थोभयालंकार को भी शब्दालंकार के अन्दर परिगणन किया है, अतः पहले इसी का निरूपण किया गया है। शब्दालंकार निम्नलिखित प्रकार के होते हैं–

(1) अनुप्रास अलंकार :

(2) यमक अलंकार :

(3) श्लेष अलंकार :

(4) भाषासम अलंकार :

(5) वक्रोक्ति अलंकार :

(6) चित्र अलंकार :

अनुप्रासोऽथ यमकं वक्रोक्ति स्तदनन्तरम् ।
भाषासमेन संयुक्ते श्लेषाचित्रे तथा स्मृते ।।

1. अनुप्रास अलंकार

जहाँ पर स्वर भिन्न होते हुए भी वर्णों का साम्य हो अथवा निरर्थक या सार्थक वर्णों की एक अथवा कई बार आवृत्ति हो, वहाँ पर अनुप्रास अलंकार होता है,

अनुप्रास अलंकार निम्नलिखित प्रकार के होते है–

(1) छेकानुप्रास अलंकार (2) वृत्यनुप्रास अलंकार (3) श्रुत्यानुप्रास अलंकार (4) अन्त्यनुप्रास अलंकार (5) लाटानुप्रास अलंकार।

1. छेकानुप्रास अलंकारः– जहाँ एक ही वर्ण की अथवा अनेक वर्ण की आवृत्ति केवल एक बार हो, वहाँ छेकानुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण – ''आदाय बकुलगन्धानन्धीकुर्वन पदे पदे भ्रमरान्।
अयमेति मन्दमन्दं कावेरीवारिपावनः पवनः।''

2. वृत्यानुप्रास अलंकार :– जहाँ शब्दों के आरम्भ में अथवा अन्त में एक ही वर्ण अथवा अनेक वर्णों की कई बार आवृत्ति कई बार होती है, तो वहाँ वृत्यनुप्रास अलंकार होता है। इस अलंकार में वर्णों का प्रयोग 4 प्रकार से होता है–

(1) एक ही वर्ण का शब्द के आरम्भ में कई बार प्रयोग।

(2) अनेक वर्णों का शब्द के आरम्भ में कई बार प्रयोग।

(3) एक ही वर्ण का शब्द के अन्त में कई बार प्रयोग।

(4) अनेक वर्णों का शब्द के आरम्भ में कई बार प्रयोग।

उदाहरण– '' उन्मीलन्मधुगन्धलुब्धमधुपव्याधूतचूताकुंर,
क्रीडत्कोकिलकाकलीकलकलै रूद्गीर्णकर्णज्वराः ।
नीयन्ते पथिकैः कथंकथमपि ध्यानावधानक्षण,
प्राप्तप्राणसमासमागमरसोल्लासैरमी वासराः ।। ''

2. जिस छन्द के प्रथम चरण में क्रमशः तीन भगण तथा दो गुरू होते हैं, चरण के अन्त में यति होता है, वह छन्द कहलाता है–

(अ) इन्द्रवज्रा (ब) उपेन्द्रवज्रा

(स) दोधक (द) शालिनी ।

वंशस्थ छन्द के प्रत्येक चरण में वर्ण होते हैं–

(अ) पन्द्रह (ब) बारह

(स) ग्यारह (द) दस ।

3. श्रुत्यानुप्रास अलंकार :– जहाँ एक स्थान से उच्चारित होने वाले वर्णों की समता हो, वहाँ श्रुत्यानुप्रास अलंकार होता है। श्रुति का अर्थ कान है। इस अलंकार का ज्ञान ध्यान से सुनने पर ही होता है।

उदाहरण – " दृशा दग्धं मनसिजं जीवयन्ति दृश्यैव याः ।
विरूपाक्षस्य जयिनीस्नाः स्तुमो वामलोचना ।। "

4. अन्त्यानुप्रास अलंकार :– छन्द के चरणों के अन्त में जहाँ स्वर सहित वर्णों की समानता होती है, अर्थात् तुक रहता है, वहाँ अन्त्यानुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण – "केशः काशस्तबक विकास कायः प्रकटितकरभविलासः ।
चक्षुर्दग्धवराटककल्पं त्यजति न चेतः काममनल्पम् ।।

5. लाटानुप्रास अलंकार :– जहाँ एक शब्द अथवा पद की पुनरावृत्ति हो और उनका अर्थ भी एक ही हो, परन्तु अन्वय–भेद से तात्पर्य में भिन्नता हो वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण – "पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननी जठरेशयनम् ।
इह संसारे खलु दुस्तारे कृपया पारे पाहि मुरारे ।। "

2. यमक अलंकार

यहाँ एक ही शब्द दो या दो से अधिक बार आवृत्ति हो परन्तु अर्थ में भिन्नता हो, वहाँ यमक अलंकार होता है।

उदाहरण – " नवपलाश–नवपलाशवनंपुरः स्फुटपराग–परागत–पंकजम् ।
मदुहलि–तान्त–लतान्तमलोकयत् स सुरभिं–सुरभिं सुमनोभरैः ।। "

3. श्लेष अलंकारः

जब एक ही शब्द केवल एक बार प्रयुक्त होता है और उसके दो या अधिक अर्थ निकलते है, तब वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण – मंचःक्रोशति किमहो प्रयासि नमां परावृत्य।
किं कातरत यैवं मुह्यैति मंचः किमांलपतिः।।

4. उपमा अलंकारः

समान धर्म, स्वभाव शोभा, गुण, दशा आदि के आधार पर जहाँ किसी वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु के साथ की जाती है वहाँ उपमा अलंकार होता है।

उदाहरण – "यदापमुपमानांशो लोकत सिद्धिमुच्छति ।
तदोपनैव येनेव शब्द साद्दश्यवाचकः ।।
यदापुनरयं लोकादसिद्धः कवि कल्पितः ।
तदोत्प्रेक्षैव व येनेव शब्द– सम्भावना परः ।। "

5. रूपक अलंकारः

उपमेय में उपमान के निषेध रहित आरोप को रूपक अलंकार कहते हैं।

उदाहरण – "लतामूले लीनो हरिण परिहीनो हिमकरः,
स्वयं हाराकार गलति जलधारा कुवलयातू।
धुनीते बन्धकं तिलकुसुम जन्माहिपवनो,
बर्हिद्वारे पुष्पं परिणमति कस्यामि कृतिनः।।"

6. उत्प्रेक्षा अलंकारः

जब उपमेय का उपमान से भिन्नता जानते हुए भी उसकी सम्भावना की जाती है, तब उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। जिस प्रकार से उपमा के लिए वाचक शब्द होते हैं, उसी प्रकार उत्प्रेक्षा के भी कुछ वाचक शब्द होते हैं।

उदाहरण – उरूः कुरंगक दृश्यः चंचल चेलांचलौ भाति।
सपत्ताक रुमकमयों विजय स्तम्भः स्मरस्येव ।।

रस

जिस प्रकार शरीर में से जीवात्मा को निकाल देने पर शरीर का कोई भी अस्तित्व नहीं रह जाता है, उसी प्रकार रस से रहित संस्कृत भाषा का कोई भी मूल्य नही रह जाता है। इसी कारण आचार्यों ने रस को काव्य की आत्मा माना है। जैसा कि साहित्यकार **विश्वनाथ जी** ने लिखा है " **वाक्यं रसात्मकं संस्कृतस्य काव्यम्।** "

रस की परिभाषा– सहृदय पुरूषों के हृदय में स्थित यही रति आदि स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के द्वारा पुष्ट होकर, (आस्वाद–योग्य होकर) रस के स्वरूप को धारण कर लिया करते हैं, अर्थात् 9 स्थायी भावों की पुष्टावस्था ही रस कहलाती है, और इनके पुष्ट होने के साधन विभाव, अनुभाव और संचारी भाव ही हैं।

संस्कृत भाषा में रस निम्नलिखित प्रकार के होते हैं–

1. श्रृंगार रस– मानव के हृदय में संस्कार रूप में विद्यमान रति स्थायी–भाव जब संस्कृत काव्य के द्वारा उपस्थित विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के द्वारा प्रकट होकर अनुभूति का विषय बन जाता है, उस समय जो आनन्द होता है उसे श्रृंगार रस कहते हैं। इस रस का क्षेत्र अन्य सभी रसों की अपेक्षा अधिक व्यापक तथा विस्तृत है। श्रृंगार रस दो प्रकार का होता है।

(अ) संयोग श्रृंगार रस– जब दो प्रेमी पात्रों अथवा नायक और नायिका के आनन्ददायक मिलन, वार्तालाप, दर्शन, स्पर्श आदि विविध कार्यों का वर्णन किया जाता है, तो वहाँ संयोग श्रृंगार रस होता है।

(।।) विप्रलम्भ श्रृंगार रस– जहाँ परस्पर दो प्रेमी अथवा अनुरक्त नायक–नायिका की वियोगावस्था का वर्णन किया जाता है, वहाँ वियोग अथवा विप्रलम्भ श्रृंगार रस होता है। इस वियोग के कई कारण होते है। इस प्रकार श्रृंगार–रस का क्षेत्र सर्वाधिक होने के कारण ही वह 'रसराज' कहलाता है।

2. हास्य रस– किसी व्यक्ति अथवा किसी पदार्थ की अनोखी तथा विकृत रूप, किसी विचित्र प्रकार की वेश–भूषा, बात–चीत, विचित्र प्रकार की चेष्टाएँ आदि देखकर, हृदय में विनोद अथवा हास्य का भाव उत्पन्न हुआ करता है। यही हास इसका स्थायी भाव है। जब यह विभावादिकों से पुष्ट हो जाता है, तब यह हास्य रस कहलाता है।

उदाहरण – हतो वा प्राप्स्यसिस्वर्गजित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ।
तस्मादुत्ति ठ कौन्तैय! युद्धाय कृत निश्चयः ।।

3. करूण रस– अपने किसी प्रिय व्यक्ति अथवा प्रिय वस्तु के विनाश, अप्रिय व्यक्ति अथवा अनिष्टकारक वस्तु की प्राप्ति तथा अपने प्रिय के प्राप्त होने का अभाव होने से ह्रदय को महान क्लेश होता है। हृदय में उत्पन्न होने वाले इस भाव को ही ''शोक'' कहते है। यही करूण रस का स्थायी भाव है। जब व्यक्ति शोक विभावकों के द्वारा पुष्ट होता है, तब यह करूण रस कहलाता है।

उदाहरण – सुख दुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापवाप्स्यसि ।।

4. वीर रस – दीनों की दुर्दशा, शत्रु का उत्कर्ष, धर्म की पतितावस्था को दूर करने के लिए जो तीव्र भाव हृदय में उत्पन्न होता है, उसे उत्साह शब्द से कहा जाता है, इसी उत्साह नामक भाव की पुष्टि जब विभावादिकों के द्वारा हो जाती है, हम उसे वीर रस नाम से पुकारे हैं।

उदाहरण – कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन् ।
या कर्मफलहेतुर्भूर्मा मे सड्गोऽतस्वकर्मणि ।।

5. रौद्र रस– जब किसी शत्रु–अहितकारी अथवा किसी अनिष्ट व्यक्ति के चेष्टाओं और कार्यों से अपन निरादर, अहित, बड़ों की निन्दा, उनकी लापरवाही इत्यादि के कारण हृदय में क्रोध की उत्पत्ति होती है। पाठक तथा श्रोता के हृदय में सुनने अथवा पढ़ने से इस क्रोध की अभिव्यक्ति हो जाती है। यही क्रोध जब विभावादिकों के द्वारा पुष्ट होता है, तब रौद्र रस का रूप धारण कर लेता है।

उदाहरण – आजात–मृत–मूर्खे शु मुताजातौ सुतो वरम् ।
यतस्तौ स्वल्पदुःखाय यावज्जीवं जड़ों देहेत् ।।

6. भयानक रस–जब हमारे समक्ष किसी भयप्रद वस्तु का वर्णन अथवा भय से भयभीत किसी व्यक्ति की चेष्टाओं का उल्लेख आता है, तो हमको ज्ञात है कि भय की स्थिरता कहाँ पर है? अर्थात् उस भय की स्थिरता भी किसी व्यक्ति होती है। यह भय की स्थिरता ही विभावादिकों से पुष्ट होकर भयानक रस का रूप धारण कर लेती है।

उदाहरण – दातुमर्हसि मद्वाक्याद् राज्यार्घ धष्तरा ट्रज।
अन्यथा सगरान्तां मां हरि यन्ति हि पाण्डवाः।।

7. वीभत्स रस – घृ णा नामक स्थायी भाव से वीभत्स रस की उत्पत्ति होती है। घृणा पैदा करने वाली वस्तुएँ यथा–पीव, हड्डी, माँस, चर्बी आदि होती हैं। सबके सड़ने की दुर्गन्ध आदि के वर्णन से हृदय में एक प्रकार की ग्लानि उत्पन्न हो जाती है। इसी ग्लानि अथवा घृणा नामक स्थायी भाव की जब विभावदिकों द्वारा पुष्टि की जाती है, तब यही घृणा वीभत्सः रस का रूप धारण कर लेती है।

उदाहरण – अज्ञान–निद्रा–शयितो भवता प्रतिबोधितः ।
सर्वप्राणिवद्यादेष विरतोऽद्य प्रभुत्यहम् ।।

8. अद्भुत रस – किसी विचित्र अथवा असाधारण वस्तु के एकाएक देख लेने से हृदय में एक प्रकार की उत्सुकता या कुतूहलपूर्ण आश्चर्य उत्पन्न होता है। यही स्थायी भाव आश्चर्य विभावादिकों से पुष्ट होकर अद्भुतः रस का रूप धारण कर लेता है।

उदाहरण – योऽयं स्वभावो लोकस्य सुखदुःख समन्वितः ।
सोडगाद्यभिनयोपेतो नाट्यमित्यभिधीयते ।।

9. शान्त रस – निर्वेद अथवा संसार के विषयों से अपने मन को हटा लेना उस ओर से उदासीन हो जाना आदि स्थायी भावों द्वारा शान्तःरस की उत्पत्ति होती है। संसार की असारता, संसार की वस्तुओं की क्षण भंगुरता तथा परमात्मा के रूप ज्ञान होने से चित्त को एक प्रकार की शान्ति मिलती है, जो कि संसार के नाना प्रकार के सुख के विषयों के सेवन से कभी भी नहीं मिल सकती। यही शान्ति पाठक श्रोता के हृदय में शान्तःरस की उपत्पत्ति करती है।

उदाहरण – सम्पदो महतामेव महतामेव चापदः ।
बर्धते क्षीयते चन्द्रो न तु तारागणः क्वाचित् ।।

10. वात्सल्य रस – उपयुर्क्त नव रसों को संस्कृत साहित्य के सभी आचार्यों ने स्वीकार किया है किन्तु हिन्दी के कुछ विद्वानों ने वात्सल्य रस को भी दशम रस माना है। उन्होंने संतति विषयक प्रेम को इस रस का स्थायी भाव माना है। छोटे–छोटे बच्चों का सौंन्दर्य, उनकी तोतली बोली, चेष्टाएं तथा उनके अन्य प्रकार के कार्यों को देखकर स्वभावतः ही मन उनकी ओर खींच जाता है। परिणाम स्वरूप उनके प्रति ह्रदय में स्नेह की उत्पति होती है। इस प्रेम रूपी स्थायी भाव से ही वात्सल्य रस की उत्पत्ति होती है। यद्यपि प्रेम विषयक स्थायी भाव होने के कारण यह रस भी श्रृंगार रस के अन्तर्गत आ जाता है किन्तु फिर भी कुछ विद्वानों ने इसे पृथक् माना है–
वात्सलय रस दो प्रकार का होता है –

1. संयोग वात्सल्य रस – जब बच्चों की ऐसी बातों का वर्णन होता है जो कि उनके माता–पिता के पास उपस्थित रहने के काल से संबंधित होती है तब वहां संयोग वात्सल्य रस होता है।

2. वियोग वात्सल्स रस – जब बच्चों के अपने माता–पिता से अलग हो जाने पर या उनके कारण माता–पिता की दशा का वर्णन होता है, तब वहां वियोग वात्सल्य रस होता है उदा. सूरदास की वात्सल्य भक्ति प्रसिद्ध है– उनका एक पद–
मैया मोर मैं नहीं माखन खायो
ग्वाल बाल सब बैर पड़े हैं बरबस मुख लिपटायो––
चन्द्रालोक श्रृंगाररस का उदा. – विप्रलंभ श्रृंगार – उत्तिष्ठ दूति यामो यामो यातस्तथापि नायातः।
यातः परमपि जीवंत् जीवितनाथः भवेत् तस्याः।।

रामायण करूणरस का उदा – या निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः।
यत् क्रौंच मिथुनादेक मवधीः काममोहितम्।। वा. रामा.

चन्द्रालोक वीर रस का उदा. – धर्मवीर
राज्यं च वसु देहश्च भार्या भ्रातृसुताश्च ये।
यच्च लोके ममायत्तं तद् धर्माय सदोद्यतम् ।

चन्द्रालोक रौद्र रस का उदा. – नवोच्छलित यौवन स्फुरदरवर्ष गर्व ज्वरे।
मदांयगुरू कार्मुकं गलित साध्वसं वृश्चति।
अयं पततु निर्दयं दलित दृपृ भूभृद् स्खलद
रूधिर घस्मरों मम परश्वधो भैरवः।।

चन्द्रालोक भयानक रस का उदा– घोरमम्भोधर ध्वानं निराम्य व्रज बालकाः।
मातुरं के निलीयन्ते सकम्प विकृत स्वराः।।

चन्द्रालोक वीभत्स रस का उदा. नरवैर्विदारितान्त्राणां शवानां पूयशोणितम्।
आनने वनुलिम्पन्ति दृष्टा वेताल योषितः।।

चन्द्रालोक अद्‌भुत रस का उदा. चराचर जगज्जाल सदनं वदनं तव।
गलद् गगन गाम्भीर्यं वीक्ष्यास्मि हृतचेतना।।

चन्द्रालोक शान्त रस का उदा. अहौ वा हारे वा कुसुम शयने वा हसदि वा
मणौ वा लोष्ठे वा वलवति रिपौवा सुहृदि वा।
तृणे वा स्त्रैणे वा मम सयदृशो यान्ति दिवसाः
कूचित दृष्याये शिव शिव शिवेति प्रलपतः।।

चन्द्रालोक हास्य रस का उदा. गुरोर्गिरः पंच दिनान्यधीत्य
वेदान्त शास्त्राणि दिनत्रयं च।
अमी समाध्राय च तर्क वादान्
समागताः कुक्कुट मिश्रपादाः।।

वात्सल्य रस – मैया मोरी मै नहीं माखन खायो

पर्यायवाची शब्द तथा विलोम शब्द

पर्यायवाची शब्द

पर्यायवाची का अर्थ– जो शब्द समान अर्थ देने वाले होते हैं, उन्हें समानार्थी (पर्यायवाची) शब्द कहते हैं, जैसे–

(1) अहंकारः – मानः, अभिमानः, गर्वः, मदः, दर्प ।

(2) अम्बरम्– नभः, गगनम्, शून्यम्, व्योमः, अन्तरिक्षम् ।

(3) अम तम्– सुधा, पीयूषम्, सोमः।

(4) अग्निः— अनलः, पावकः, दहनः, वह्निः, ज्वाला ।

(5) असुरः— निशिचरः, निशाचरः, दानवः, दैत्यः, दनुजः, राक्षसः ।

(6) अश्वः— घोटकः, हय / बाजी, तुरंगः, सैन्धवः, बाजी ।

(7) अक्षि— नेत्रम्, चक्षु, लोचनम्, नयनं, दशम।

(8) आलोकः— प्रकाशः, प्रभा, विभा, कान्तिः, द्युतिः ।

(9) इन्द्रः— देवेन्द्रः, देवपतिः, सुरपतिः, सुरेन्द्रः, सुरराजः, पुरन्दरः, मघवः ।

(10) कमलम्— अम्बुजं, नीरजं, वारिजं, पंकजम्, सरोजः, तोयजम्, जलजम् ।

(11) कोकिलः— पिकः, वसन्तदूतः, परभूतम् ।

(12) केशः— अलकम्, चिकुरम्, कचम्, मूर्धजः ।

(13) खगः— पक्षी, विहगः, द्विजः, शकुनिः, अण्डजः, नभचरः।

(14) क्रोधः— कोपः, रोषः, मन्युः, अमर्षः ।

(15) गणेशः— गजवदनः, गजाननः, लम्बोदरः, वियानकः, एकदन्तः, गणपतिः,मोदकप्रियः, विघ्नहरः।

(16) गजः— हस्ती, करी, दन्ती, नागः, द्विपः, कुंजरः, मतंगः ।

(17) गृहम्— सदनं, भवनं, निकेतनम्, आवासः, आलयः, गेहम् ।

(18) गंगा— भागीरथी, त्रिपथगा, सुरनदी, जाह्नवी, मन्दाकिनी, शिवप्रिया, पुण्यतोया, विष्णुपदी।

(19) चन्द्रः— शशिः, विधुः, मयंकः, इन्दुः, सुधाकरः, शशांकः ।

(20) चातकः— मेघजीवनः, सारंगः, क्रौचः, कंठछिद्रः, पपीहाः ।

(21) जलम् — नीर, वारिः, अम्बुः, तोयम्, सलिलम्, उदकम्।

(22) तडागः— सरोवरः, जलाशयः, सरः, कसारः ।

(23) तडितः— विद्युतः, सौदामिनी, दामिनी, चपला, चंचला।

(24) दिनम्— वासरः, दिवसः, अहः, दिवाः, वारः ।

(25) देवः— सुरः, अजरः, अमरः, विबुधः, निर्जरः, अमर्त्यः, वसुः।

(26) दिवाकरः— सूर्यः, दिनेशः, दिनमणिः, दिनकरः, भानुः, प्रभाकरः, मार्तण्डः, विभाकरः, आदित्यः।

(27) ध्वजः— पताका, निशानः, केतु, चिन्हं।

(28) नदी— सरित्, शैलजा, तटिनी, सरवती सागरप्रिया, तरंगिणी, सरसा, निर्झरिणी, जीवनप्रदा।

(29) पटः— वस्त्रम्, वसनम्, वासः, अम्बरम्, चौलम् ।

(30) पयः— दुग्धम्, स्तन्यम्, क्षीरम्, अम तम् ।

(31) पर्वत— गिरिः, अचलः, नगः, भूधरः, शैलः, मेरूः, धराधरः, आद्रिः ।

(32) पति— प्राणनाथः, प्राणप्रियः, स्वामिन्, भर्ताः, नाथः, अधिपः ।

(33) पत्नी— भार्या, वधू, गृहिणी, अर्धांगिनी, जाया, सहधर्मिणी ।

(34) पार्वती— उमा, गौरी, गिरिजा, भवानी, शैलजा, शिवप्रिया, अम्बिका, दक्षसुता रूद्राणी।

(35) पाणिः— हस्त, कर, भुजा, बाहुः ।

(36) पुष्पम्– कुसुमम्, सुमन, प्रसूनम्, पुहुपः, फलागम् ।
(37) पुत्री– तनया, आत्मजा, तनुजा, दुहितृ ।
(38) पुत्र– तनयः, आत्मजः, तनुजः, सुतः, औरसः, रक्तांशः ।
(39) पुरूषः– मनुजः, मानवः, मानुषः, नरः, व्यक्तिः ।
(40) पादपः– वृक्षः, तरू, विटपः, भूरूहः, छायादः ।
(41) पृथ्वी– धरा, मही भूः, वसुधा, वसुन्धरा, अचला, मेदिनी, रसा, धारिणी।
(42) विष्णु– माधव, चक्रपाणि, अच्युत, हरि, मुरारि, ऋषीकेश ।
(43) बाण– तीरः, शरः, शिली, नाराचः, सायकः, आशु ।
(44) वायु– अनिलः, पवनः, समीरः, मरूत्, वातः ।
(45) भ्रमरः– अलिः, मधुपः, मधुकर, शिलीमुख, सारं
(46) यमराजः– धर्मराजः, नरकाधिपतिः, सूर्यतनयः, प्राणहरः, अन्त
(47) लक्ष्मी– कमला, श्रीः, रमा, हरिप्रिया, इन्दिरा, समुद्रतनया ।
(48) रात्रि– निशा, राका, रजनी, यामिनी, विभावरी ।
(49) समुद्रः– सागर, रत्नाकर, जलधिः, पयोधि, सिन्धु नीरधि ।

विलोम शब्द

विपरीत अर्थ देने वाले शब्दों को विलोम शब्द कहा जाता है–

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
सम	विषम्	उत्कर्षः	अपकर्षः
इष्टः	अनिष्टः	उदारः	कृपणः
आदानम्	प्रदानम्	उत्थानम्	पतनम्
आयः	व्ययः	एकता	विविधता
आदिः	अन्तः	अनुकूलः	प्रतिकूलः
अनुरक्तः	विरक्तः	अथ	इति
अस्तः	उदयः	अल्पम्	बहुः
अधिकतम्	न्यूनतम्	अज्ञः	विज्ञः
उपयोगः	अनुपयोगः	उत्तीर्णः	अनुत्तीर्णः
क्रयः	विक्रयः	कीर्तिः	अपकीर्तिः
कुटिलः	सरलः	कृतज्ञः	कृतघ्नः
कटुः	मधुरः	कुपात्रम्	सुपात्रम्
मोचनम्	घातः	प्रतिघातः	गुणः
गुणः	दोषः	गुप्तः	प्रकटः
खण्डनम्	मण्डनम्	प्रसन्नः	अप्रसन्नः
उष्णम्	शीतम्	वीरः	भीरूः

उद्योगः	अनुद्योगः	चिरम्	शीघ्रम्
उन्नतिः	अवनतिः	चिरायुः	अल्पायुः
जयः	पराजयः	जीवनम्	मरणम्
तीक्ष्णः	कुंठितः	सुखम्	दुःखम्
दुर्गमः	सुगमः	दिवसः	रात्रिः
दुर्लभः	सुलभः	सज्जनः	दुष्टः
दूषितः	स्वच्छः, शुद्धः	प्रकाशः	तमः
धनी	निर्धनः	धर्मः	अधर्मः
दुष्चरित्रः	सच्चरित्रः	सज्जनः	दुर्जनः
न्यायः	अन्यायः	निशा	दिवा
निद्रा	जागृतिः	सगुणः	निर्गुणः
निजः	परः	स्तुतिः	निन्दाः
स्वतंत्रताः	परातंत्रताः	स्थावरः	जंगमः
संयोगः	वियोगः	संक्षेपः	विस्तारः
सुमतिः	कुमतिः	चरः	अचरः
शत्रुः	मित्रम्	श्रोता	वक्ता
हेयः	श्रद्धेयः	ह्रस्वः	दीर्घः
ज्ञानम्	अज्ञानम्	नवीनतम्	प्राचीनतम्
पुराणम्	नवीनम्	प्रवृत्तिः	निवृत्तिः
प्रलयः	सृष्टिः	मानः	अपमानः
मूर्खः	विद्वान्	योगी	भोगी
यशः	अपयशः	विधिः	निषेधः
विवादः	एक्यम्	विनाशः	निर्माणः, रक्षणम्
विधवा	सधवा	लोकः	परलोकः
लाभः	हानिः	लघुः	दीर्घः
स्वः	परः	स्वकीयः	परकीयः
सुगन्धः	दुर्गन्धः	संश्लेषणम्	विश्लेषणम्
संघटनम्	विघटनम्	साकारः	निराकारः
सद्गतिः	दुगर्तिः	स्वदेशः	विदेशः
सायंम्	प्रातः	हिंसा	अहिंसा
हासः	रोदनम्	क्षणिक	शाश्वत
हर्षः	शोकः, विषादः		

लोकोक्ति और मुहावरे

प्रचलित लोकोक्तियों और मुहावरों का अर्थ एवं प्रयोग ।

मुहावरे और लोकोक्ति–'मुहावरा' कुछ पदों का समूह होता है, जिसका शब्दार्थ या वाच्यार्थ न लेकर लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है। 'लोकोक्ति' 'मुहवारा' से मिलती–जुलती होती है। लोकोक्ति परा कथन या वाक्य होता है, जबकि मुहावरा अधूरा कथन या वाक्य होता है। लोकोक्ति का सम्बन्ध किसी घटना या प्रसंग से होता है, परन्तु मुहावरे के विषय में कोई प्रसंग होना आवश्यक नहीं है। लोकोक्ति कभी–कभी सूक्तियाँ एवं शाश्वत कथन भी हो सकती है, परन्तु मुहवारा अपूर्ण वाक्य होने के कारण सूक्ति नहीं हो सकते।

नीचे हम कुछ मुहावरे और लोकोक्ति अर्थ और प्रयोग सहित दे रहे हैं–

1. जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।

   अर्थ– माता और जन्म–भूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है ।

   प्रयोग– माता और जन्म–भूमि का हमें सम्मान करना चाहिए।

2. लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करष्यिति ?

   अर्थ– नेत्रों से रहित व्यक्ति के लिए शीशा (दर्पण) क्या कर सकता है?

   प्रयोग– अयोग्य व्यक्ति को मार्ग दर्शन देना व्यर्थ है।

3. जल बिन्दु निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः ।

   अर्थ– जल की एक–एक बूँद गिरने से घड़ा भर जाता है ।

   प्रयोग– थोड़े–थोड़े संग्रह करने से बहुत इकट्ठा होता है।

4. किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाक तीनाम् ।

   अर्थ– सुन्दर आकृति वालों के लिए कौन सी वस्तु आभूषण नहीं होती।

   प्रयोग– विद्वान को किसी अन्य के सहारे की आवश्यकता नहीं पड़ती।

5. केसरस्य कटुतापि नितान्त रम्यम्।

   अर्थ– केसर की कटुता भी आनन्दायक होती है।

   प्रयोग– नीति युक्त कठोर वचन भी हितकारी होती है।

6. आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः ।

   अर्थ– दुष्ट व्यक्तियों के साथ सीधा (सरल) व्यवहार कोई नीति नहीं है।

   प्रयोग– दुष्ट व्यक्ति के साथ दुष्टता का ही व्यवहार करना चाहिए।

7. निर्वाण दीपे किमुतैल दानम् ।

   अर्थ–दीपक बुझ जाने तेल डालने से क्या लाभ?

   प्रयोग– सहायता समय पर ही करनी चाहिए ।

8. मतिरेव बलाद गरीयसी ।

अर्थ– बुद्धि बल से बढ़कर है।

प्रयोग– शरीर से कमजोर व्यक्ति बुद्धि के बल से निर्बुद्धि बलवानों को परास्त कर देगा ।

9. यः क्रियावान् सः पण्डितः ।

अर्थ– जो क्रियाशील है वही पण्डित है ।

प्रयोग– क्रियाशील होना ही विद्वता का परिचायक है।

10. अति सर्वत्र वर्जयेत् ।

अर्थ– अति सब जगह वर्जित है।

प्रयोग– अति सभी प्रकार के कार्य की हानिकारक है।

इकई–4 खण्ड (ब)

मूल्यांकन

मूल्यांकन का अभिप्राय

शिक्षा में प्रारंभ से ही परीक्षा का क्रम किसी–न–किसी रूप मे चलता रहा है। परीक्षाओं द्वारा विद्यार्थियों के ज्ञान स्तर, बुद्धि–कौशल एवं कार्य–शक्ति की जाँच की जाती है। गत वर्षों में मनोवैज्ञानिकों और शिक्षा–शास्त्रियों का ध्यान परीक्षा प्रणाली के सुधार की ओर गया और परिणामतः मूल्यांकन का नया दृष्टिकोण सामने आया। मूल्यांकन में विद्यार्थियों की योग्यता का परीक्षण करने के साथ–साथ उनकी योग्यता का लेखा भी बनाया जाता है। अवनति के कारणों की जाँच की जाती है। परीक्षा विद्यार्थियों के योग्यता–स्तर को जाँचती है, परन्तु मूल्यांकन में ऐसी जाँच के साथ–साथ यह भी देखा जाता है कि शिक्षण सम्बन्धी उद्देश्य कहाँ तक पुरे हुए है। शिक्षकों को शिक्षण में कहाँ तक सफलता मिली है। विद्यार्थियों ने विषय को कहाँ तक ग्रहण किया है।

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि मूल्यांकन शिक्षण विधि को सुधारने और शिक्षा–स्तर को उन्नत करने में तथा शिक्षण कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। शिक्षण कार्य में दो प्रकार का मूल्यांकन किया जाता है– (1) आन्तरिक मूल्यांकन, (2) बाह्य मूल्यांकन।

1. आन्तरिक मूल्यांकन– आन्तरिक मूल्यांकन विद्यार्थी की दैनिक प्रगति, उसके द्वारा किये गये गृह–कार्य, विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों में लिये गये भाग तथा आवधिक परीक्षाओं के परिणाम पर आधारित होना चाहिए। इस प्रकार का मूल्यांकन अत्युत्तम है।

2. बाह्य मूल्यांकन– बाह्य मूल्यांकन विद्यालयों, शिक्षा बोर्डों तथा विश्वविद्यालयों द्वारा आयोजित परीक्षाओं के रूप में किया जाता है। परीक्षा में लिखित उत्तर अथवा किये गये कार्य के आधार पर अंक दिये जाते है।

वर्तमान संस्कृत मूल्यांकन प्रणाली

(1) वर्तमान संस्कृत परीक्षाओं से विद्यार्थियों की सही योग्यता की जाँच नहीं हो पाती। केवल पाँच–छः अथवा कुछ प्रश्नों के आधार पर विद्यार्थियों को उत्तीर्ण अथवा अनुत्तीर्ण घोषित कर दिया जाता है।

(2) वर्तमान संस्कृत परीक्षा प्रणाली में केवल लिखित कौशल परीक्षण हो पाता है।

(3) वर्तमान संस्कृत परीक्षाएँ रटने की प्रक्रिया को बढ़ावा देता है।

(4) वर्तमान संस्कृत परीक्षा प्रणाली में संयोग काम करता है। सारा वर्ष मेहनत से पढ़ने वाला विद्यार्थी अनुत्तीर्ण हो सकता है और कुछ चुन हुए प्रश्नों को रट लेने वाला विद्यार्थी अच्छे अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण हो जाता है।

(5) वर्तमान संस्कृत परीक्षा प्रणाली अविश्वसनीय है। एक परीक्षार्थी की उत्तर–पुस्तिका को दो परीक्षक यदि अलग–अलग जाँचे तो अंकों में पर्याप्त अन्तर होगा। हो सकता है एक परीक्षक उसे उत्तीर्ण करें और दूसरा अनुत्तीर्ण।

(6) **वर्तमान परीक्षा प्रश्न–**पत्रों के निर्माण में घिसी–पिटी प्रणाली को ही अपनाया जाता है। प्रश्न–पत्र निर्माता पिछले वर्षों में आये प्रश्नों को ही घुमा–फिराकर प्रश्न–पत्र बना देते हैं।

(7) **वर्तमान परीक्षा के प्रश्न–**पत्रों को हल करते समय विद्यार्थी नकल का प्रयोग करते हैं। इसके लिए प्रश्न–पत्रों का निर्माण कार्य भी किसी हद तक दोषी है। प्रश्न–पत्रों के निर्माता इस बात का ध्यान नहीं रखते कि प्रश्न–पत्र में ऐसे प्रबन्धात्मक प्रश्न बनाये जिनके उत्तर देने में कल्पना से काम लेना पड़े, नकल से नहीं ।

शिक्षा स्तर बहुत कुछ परीक्षा प्रणाली पर आधारित होता है। मूल्यांकन प्रणाली के दोषरहित रहने से शिक्षण प्रणाली अपने–आप सुधरेगी तथा फलस्वरूप शिक्षण स्तर भी उन्नत होगी। अतः संस्कृत में परीक्षा प्रणाली को निर्दोष बनाना होगा।

संस्कृत–परीक्षाण के प्रकार

परीक्षण की सामान्य विधियाँ तीन हैं– (1) प्रबन्धात्मक विधि, (2) वस्तुगत (वस्तुनिष्ठ) विधि तथा (3) मौखिक विधि। इन तीन विधियों का संस्कृत परीक्षा प्रणाली में प्रयोग किया जाता है। संस्कृत में निबन्धात्मक परीक्षा प्रणाली की रूपरेखा निम्नलिखित प्रकार होनी चाहिए–

1. निबन्धात्मक परीक्षा विधि– प्रचलित संस्कृत परीक्षा प्रणाली मुख्यतः निबन्धात्मक है। निबन्धात्मक परीक्षा प्रणाली में प्रश्नों के उत्तर लम्बे होते है। इस प्रकार की परीक्षा में परीक्षा विषय का पर्याप्त ज्ञान रखने पर भी भाषा–शैली के अपरिपक्व होने पर परीक्षा में अनुंत्तीर्ण हो जाता है। संस्कृत में निबन्धात्मक परीक्षाएँ निम्नांकित विषयों के मूल्यांकन के लिए आवश्यक हैं–

(1) अक्षर विन्यास, (2) लिखित अभिव्यक्ति, (3) पाठ्य–पुस्तक पर आधारित विषय–वस्तु का ज्ञान, (4) सार तथा भाव लेखन, (5) कथा तथा घटना वर्णन, (6) पत्र तथा निबन्ध रचना।

2. वस्तुगत (वस्तुनिष्ठ) परीक्षा विधि– वस्तुगत परीक्षा प्रणाली में छोटे–छोटे प्रश्न बनाए जाते हैं। प्रश्नों के उत्तर भी छोटे होते होते हैं। प्रश्नों के उत्तर एक जैसे होते हैं। उत्तर देने में समय कम लगता है। परीक्षा प्रश्नों को सारे पाठ्यक्रम में से चुना जा सकता है। इस परीक्षा का उपयोग संस्कृत शिक्षण में निम्नांकित विषयों के लिए किया जा सकता है–

(1) शब्दावली का ज्ञान, (2) शब्दावली का शुद्ध प्रयोग, (3) अक्षर विन्यास, (4) सैद्धान्तिक व्याकरण, (5) प्रयोगात्मक व्याकरण तथा (6) अलंकार तथा छन्द।

वस्तुगत परीक्षा प्रणाली के अन्तर्गत संस्कृत में निम्नांकित प्रकार के प्रश्न बनाए जा सकते हैं–

1. बहुविकल्पीय प्रश्न– इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर में शुद्ध शब्द के साथ अन्य कई शब्द दिये जाते हैं। इनमें से शुद्ध उत्तर चुनने को कहा जाता है, जैसे– शुद्ध उत्तर को को ठक में लिखें–

(अ) 'फल' शब्द का बहुवचन– फलाः, फलानि, फले ( )

2. स्मृति पर आधारित प्रश्न– इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर अपनी स्मृति के आधार पर देते है, जैसे– उत्तर कोष्ठक में लिखें–

(अ) 'लता' शब्द का प्रथमा विभक्ति में ( )

(ब) लिख्–लोट् लकार का रूप उत्तम पुरूष में ( )

3. प्रत्याभिज्ञान प्रश्न– ऐसे प्रश्नों में शुद्ध अशुद्ध रूप की पहचान की जाती है, जैसे– शुद्ध रूप के आगे (√) चिन्ह तथा अशुद्ध के आगे (×) चिन्ह लगाएँ।

(अ) नदी शब्द का तृतीय एकवचन में नद्या बनता है। ( )

(ब) विजयादशमी फाल्गुनमासे भवति। ( )

4. तुलनात्मक प्रश्न– इस प्रकार के प्रश्नों को मिश्रित शब्दों के दो समूह दिये जाते हैं, एक समूह के शब्दों को दूसरे समूह के शब्दों में अनुरूप क्रमबद्ध करना होगा, जैसे– द्वौ सैनिकाः (द्वौ बालकौ)

शूराः बालकौ (शूराः सैनिकाः)

5. रिक्त स्थानों की पूर्ति–कोष्ठकों में दिये गये शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करनी होती है, जैसे–

(अ) रामः राक्षसान् ....। (हन् धातु)

(ब) .... एतत् फलम् रोचते। (अस्मद्)

(स) भरतस्य ....नाम कैकेयी आसीत्। (मात)

6. सुव्यवस्थित अर्थात् क्रमबद्ध करना– इसके अन्तर्गत दिये हुए शब्दों को सुव्यवस्थित अर्थात् क्रमबद्ध करना होता है, जैसे– निम्नलिखित शब्दों को विभक्ति के अनुसार क्रमबद्ध करें–

(अ) सरित्, सरिति, सरितः, सरिते, सरितः, सरितम्, सरिता।

3. मौखिक परीक्षा विधि– मौखिक परीक्षाएँ मौखिक परीक्षण के लिए होती है। इनमें कार्य नहीं करना पड़ता। संस्कृत उच्चारण तथा ध्वनियों के परीक्षण के लिए मौखिक परीक्षाओं की आवश्यकता पड़ती है। विषय ग्रहण, शब्दार्थ, ज्ञान वाचन में कुशलता, स्मरण–क्षमता, सामान्य–ज्ञान तथा मौखिक अभिव्यक्ति की जाँच के लिए इनका उपयोग किया जा सकता है।

प्रत्येक कक्षा में परीक्षा के लिए मौखिक, वस्तुगत तथा प्रबन्धात्मक प्रश्नों के लिए अंक निर्धारित होने चाहिए। प्रारम्भिक स्तर पर मौखिक परीक्षण के अधिक और प्रबन्धात्मक परीक्षण के लिए अपेक्षतया कम अंक होने चाहिए। माध्यमिक स्तर पर प्रश्न–पत्रों में ज्यादातर प्रश्न वस्तुगत प्रश्न होने चाहिए। उच्च स्तर पर परीक्षा प्रश्न–पत्रों में वस्तुगत प्रश्न ही अधिक होने चाहिए।

हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद

(1) माता और मातृभूमि ये दोनों संसार में श्रेष्ठ हैं। बालक के प्रति माता का स्वाभविक प्रेम होता है। बालक के लिए वह सभी वस्तुओं को छोड़ सकती है। उसकी सदैव यह इच्छा रहती है कि मेरा बालक सुखी हो, गुणवान और विद्वान हो। बालक लिए वह अपने कष्टों को विषय में नहीं सोचती। वह सदा उसके सुखों के बारे में सोचती है। अतः पुत्र का भी माता पर असाधारण प्रेम होना स्वाभाविक है।

संस्कृत में अनुवाद– माता, मातृभूमिश्च द्वे ऐवैते संसारे श्रेष्ठे। बालकं प्रति मातुः स्वाभाविकः स्नेहः भवति। बालकस्य कश्ते सा सर्वमपि वस्तुजातं त्यक्तुं शक्नोति। तस्या सदैव एषा इच्छा भवति यन्मम् बालकः सदा सुखी गुणवान् विद्वान च भवतु। बालकस्य क ते सा निजं कष्टं नैवं चिन्तयति सा सदा तस्य सुखचिन्तामेव करोति। अतः पुत्रस्यापि मातुरूपरि असाधारणः स्नेहः स्वाभविकमेव वर्तते।

(2) माता तथा जन्मभूति स्वर्ग से भी श्रेष्ठ होती है। सब बालक अपना–अपना कार्य करते हैं। अच्छा राजा प्रजा की सेवा करता है। मैंने ऐसा काम कभी नहीं किया। बसन्त ऋतु का वर्णन किसने किया। इस कार्य को शीघ्र करों। बालो मत, अपना–अपना कार्य करो। आलस्य छोड़कर नित्य कर्मों को करो। मैं तेरा वचन पालन करूँगा।

संस्कृत में अनुवाद– जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। बालकाः स्व–स्व कार्य कुर्वन्ति। उत्तमः नृपः प्रजानाम् सेवां करोति। अहं एषः कदापि न अकुर्वम् ।बसन्त : ऋतोः वर्णनम् कः अकरोत। इदम् कार्यम् शीघ्रम् कुरू। मा वद स्व–स्व कार्य कुरू। आलस्य परित्यज्य नित्यकर्म कुरू। अहं तव वचन–पालनं करिष्यामि।

संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद

1. त्वं रात्रिन्दिवं किं करोषि। वयं कुत्सितानि कार्याणि कदापि न कुर्मः। गौतम सर्वासु विद्यासु विलक्षणोऽभवत्। सः विद्वानपि अतिदरिद्रतया भार्यया प्रेरितः भिक्षायै ग्रामान्तरम् अगच्छत्। दुर्योधनः विनष्टं रथिवाश्वरोहं वीक्ष्य सशोकं दीर्घम् अशोचत्।

हिन्दी में अनुवाद– तुम रात–दिन क्या करते हो। हम सब बुरे कर्मों को कभी नहीं करते हैं। गौतम सभी विद्याओं में प्रवीण थे। वह विद्वान भी बहुत दरिद्र स्त्री से प्रेरित होकर भिक्षा के लिए गाँव गया । दुर्योधन ने विन टता की ओर रथ रोककर बहुत देर तक शोकमग्न होकर सोचा।

संस्कृत अनुवाद के लिए महत्वपूर्ण क्रियाएँ

संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी
भू	– होना।	भवति	– होता है।
अनुभवति	– अनुभव करता है।	आविर्भवति	– होना है।
अभिभवति	– दबाता है।	तिरोभवति	– छिपता है।
उद्भवति	– उत्पन्न होता है।	प्रादुर्भवति	– उत्पन्न होता है।
पराभवति	– पराभव करता है।	सम्भवति	– हो सकता है।
परिभवति	– तिरस्कार करता है।	वद्	– बोलना।
वदति	– बोलता है।	गम्	– जाना।
अपवदति	– अपवाद करता है।	गच्छति	– जाता है।
अनुवदति	– अनुंवाद करता है।	आगच्छति	– आता है।
उपवदति	– प्रार्थना करता है।	अवगच्छति	– समझता है।
विवदते	– झगड़ता रहता है।	निर्गच्छति	– निकलता है।
विप्रदन्ते	– विरूद्ध बोलते है।	अधिगच्छति	– प्राप्त करता है।
प्रतिवदति	– जवाब देता है।	प्रतिगच्छति	– लौटता है।
संवदति	– बात करता है।	उद्गच्छति	– ऊपर जाता है।
संप्रदवदन्ते	– मिलकर बोलते है।	अपगच्छति	– दूर हटता है।
स्थ	– ठहरना, रूकना।	क	– करना।
तिष्ठति	– ठहरता है, बैठता है ।	करोति	– करता है।
प्रतिष्ठते	– प्रस्थान करता है।	अनुकरोति	– उपकार करता है।
उपतिष्ठते	– उपस्थान करता है।	विकुर्वते– विकार पैदा करता है।	
उतिष्ठते	– उठता है।	तिरस्करोति	– तिरस्कार करता है।
संतिष्ठते	– मरता है।	संस्करोति	– संस्कार करता है।
नी	– ले जाना।	अपाकरोति	– खण्डन करता है।
नयति	– ले जाता है, दूर करता है।	विनयति	– विनय करता है।
प्रत्युपकरोति	– प्रत्युपकार करता है।	विनपते	– गिनता है या खर्च करता है।
प्रकुरूते	– जबरदस्ती करता है।	अनुनयति	– मनाता है।

चर	– घुमना।	परिणयति	– विवाह करता है।
चरति	– घूमता है या खाता है।	अभिनयति	– अभिनय करता है।
विचरति	– विचरण करता है।	उपनयति	– पास लाता है।
उच्चरते	– उल्लंघन करता है।	अपनयति	– दूर करता है।
उच्चरति	– ऊपर जाता है।	आनयति	– लाता है।
आचरित	– आचरण करता है।	प्रणयति	– प्रेम करता है।
अनुचरति	– अनुसरण करता है।	हृ	– ले जाना चुराना।
संचरते	– भ्रमण करता है।	अपहरति	– चुराता है।
व्यभिचरित्	– व्याभिचर करता है।	अनुहरति	– नकल करता है।
परिचरित	– सेवा करता है।	परिहरति	– छोड़ता है।
लप्	– बोलना।	आहरति	– लाता है, खाता है।
लपति	– बोलता है।	व्याहरति	– व्यवहार करता है।
विलपति	– विलाप करता है।	प्रहरति	– मारता है। प्रहार करता है।
प्रलपति	– बकवास करता है।	विहरति	– विहार करता है।
आलपति	– बोलता है,अलाप करता है।	उपहरति	– उपहार देता है।
संलपति	– वार्तालाप करता है।	उपाहरति	– लाता है।
पत्	– गिरना।	उदाहरति	– उदाहरण देता है।
वितरति	– बाँटता है।	प्रत्युदाहरति	– दूसरा उदाहरण देता है।
उतरति	– जवाब देता है।		
उद्धदति	– निकालता है, उद्धार करता है।		
संतरति	– तैरता है।	पतति	– गिरता है।
क्रमते	– उत्साह करता है।	प्रणिपतति	– प्रणाम करता है।
उपक्रते	– आरम्भ करता है।	निपतति	– गिरता है।
विक्रमते	– आगे बढ़ता है।	प्रपतति	– गिरता है।
निष्क्रामति	– ऊपर जाता है।	रूह	– जगना।
आक्रमति	– ऊपर जाता है।	रोहति	– उगता है
उपक्रमति	– हटता है।	प्ररोहति	– उत्पन्न होता है।
अय्	– आना।	अधिरोहति	– चढ़ता है।
पलायते	– भागता है।	अवरोहति	– उतरता है।
व्ययते	– खर्च करता है।	आरोहति	– चढ़ता है, मिलता है

निरयते	–	निकलता है।	क्षिप्	–	फेंकना।
दुरयते	–	दुःखी होता है।	क्षिपति	–	फेंकता है।
निलयते	–	विलीन होता है।	निक्षिपति	–	नीचे फेंकना है।
असु	–	फेंकता है।	आक्षिपति	–	दोष लगाता है।
अस्यति	–	फेंकता है।	विक्षपति	–	विक्षिप्त होता है।
अपारयति	–	दूर करता है।	स	–	सरकना।
अध्यस्यति	–	आरोप करता है।	मरित	–	मर जाता है।
निरस्यति	–	हटाता है।	अनुसरित	–	अनुसरण करता है।
व्युदस्यति	–	निकलता है।	प्रसरति	–	फैलता है।
पारस्यति	–	संक्षिप्त करता है।	अवसरित	–	निकलता है।
समस्यति	–	परास्त करता है।	ईश्क्ष्	–	देखना।
विन्यस्यति	–	स्थापित करता है।	ईक्षते	–	देखता है।
पद्यते	–	जाता है।	उपेक्षते	–	लापरवाही करता है।
विपद्यते	–	मरता है।	प्रतीक्षते	–	प्रतीक्षा करता है।
आप	–	पाना	अन्वीक्षते	–	चिन्ता करता।
अप्नोति	–	प्राप्त करता है। या मनन करता है।			
अञ्ज	–	जाना या पूजा करना	प्रत्यञ्चति	–	अवनति पाता है।
प्राप्नोति	–	पाता है।			

सत्रगत कार्य (कोई – 5)

1. पाँच गद्य खण्ड का कण्ठस्थीकरण।
2. दो संस्कृत गद्य पाठों का संस्कृत में संक्षेपीकरण।
3. वर्णमाला का चार्ट निर्माण।
4. पठित 10–10 लोकोत्तियों व मुहावरें को छांटना।
5. संस्कृत के पांच कवियों के नाम लिखना।
6. गद्य, पद्य एवं रचना शिक्षण हेतु एक–एक पाठ योजना तैयार करना।
7. पाठयोजना शिक्षण हेतु सहायक सामग्रियों का निर्माण।
8. संस्कृत में किसी एक विषय पर व्यावहारिक संवाद संस्कृत में लिखना।
9. संस्कृत में किसी एक विषय पर संस्कृत में निबंध लिखना।
10. संस्कृत के व्यावहारिक शब्दों का संकलन (विद्यालय, घर, पशु,पक्षी, फल शाकाहारी)

इकाई – 5

संस्कृत की पाठ योजनाएँ

विद्यालय का नाम ....

दिनांक ....

छात्राध्यापक का नाम ....

कक्षा एवं वर्ग ....

विषय ....

समय ....

प्रकरण – उद्यानम्

सामान्य उद्देश्य

1. छात्रों में शुद्ध उच्चारण पूर्वक पाठ को समझने की योग्यता का विकास करना।
2. छात्रों को संस्कृत भाषा बोलने तथा लिखने का अभ्यास करना।
3. संस्कृत भाषा के शब्द तथा उसके व्यावहारिक ज्ञान का विकास करना।
4. संस्कृत के प्रति रूचि जागृति कर उनके चरित्र को उन्नत करना।

विशिष्ट उद्देश्य

बौद्धिक विकास– छात्रों को उद्यान की जानकारी देना। वहां के वृक्ष, लता, पुष्प आदि का ज्ञान कराना।

कौशल विकास – खेलने, कूदने, व्यायाम आदि का अभ्यास कराना।

ज्ञानार्जन– निम्बः, वट, अश्वत्थः आम्र, हण, मालाकार आदि संज्ञा शब्द तथा गम् क्रीड़ा, पठ्,सिच् आदि धातुओं का ज्ञान कराना।

प्रवृत्ति विकास– छात्रों में घमने फिरने की प्रवृत्ति जागृत करना।

सहायक सामग्री उद्यानस्य चित्रम्।

पूर्व–ज्ञान

छात्रों ने शहर तथा ग्राम में बगीचे देखे हैं।

प्रस्तावना

चित्र बतलाकर।

1. आप इस चित्र में क्या देख रहे हो? वृक्ष, पौधे, लता।
2. इसमें मनुष्य एवं बच्चे क्या कर रहे हैं ? घूम रहे हैं।
3. इस स्थान को क्या कहते हैं ? उद्यान

उद्देय कथन– आज हम उद्यान के विषय में अध्ययन करेंगे।

प्रस्तुतीकरण–छात्राध्यापक एक ही अन्विति में पाठ पढ़ायेगा।

आदर्श वाचन–छात्राध्यापक पाठ पढ़ेगा।

अनुकरण वाचन–उसके पश्चात् छात्र पाठ पढ़ेंगे।

व्याख्या

शब्द	अर्थ	विधि	श्यामपट्ट–सार
अश्वत्थः	पीपल	हिन्दी शब्द	
निम्बः	नीम	हिन्दी शब्द	
तष्णः	घास	वस्तु प्रदर्शन	
दोलः	झूला	चित्र में बतलाकर	
गम्	जाना	वाक्य प्रयोग	सः उद्यानं गच्छति।
प्रदूषणः	गंदगी	उदाहरण	

वायु, प्रदूषण, जल प्रदूषण एवं ध्वनि प्रदूषण।

आदर्श वाचन

छात्राध्यापक पुनः पाठ पढ़ेगा।

अनुकरण वाचन

छात्र बोध पूर्वक पुनः पाठ पढ़ेंगे।

विश्लेषणात्मक प्रश्न एवं श्यामपट कार्य

1. सायंकाले जनाः कुत्र गच्छन्ति?
   सायंकाले जनाः उद्यानं गच्छन्ति।
2. उद्याने बालकाः किं कुर्वन्ति?
   उद्याने बालकाः क्रीडन्ति।
3. उद्याने बालिकाः किं कुर्वन्ति?
   उद्याने बालिकाः दोलने आरोहत।
4. उद्याने जनाः किं अनुभवन्ति?
   उद्याने जनाः शन्ति अनुभवति।
5. सम्प्रति उद्यानस्य किम् उपयोगिताः?
   सम्प्रति उद्यानो वायु–प्रदूषणं दूरी करोति?

कक्षा कार्य

पाठ में आये द्वितीय और सप्तमी विभक्ति के रूपों को छाँटिए।

गृह–कार्य

पाठ के अंतिम गद्य– खण्ड का हिन्दी अनुवाद कीजिए।

पाठ योजना –2

विद्यालय का नाम	....
दिनांक	....
छात्राध्यापक का नाम	....
कक्षा एवं वर्ग	....
विषय	....
समय	....

प्रकरण – रामचरितः मानसम्

सामान्य उद्देश्य

1. छात्रों में शुद्ध उच्चारण पूर्वक पाठ को समझने की योग्यता का विकास करना।
2. छात्रों को संस्कृत भाषा के बोलने तथा लिखने का अभ्यास करना।
3. छात्रों में संस्कृत के प्रति रूचि जागृत कर उनके चरित्र को उन्नत कराना।

विशिष्ट उद्देश्य

बौद्धिक विकास– छात्रों को भगवान राम के जीवन का परिचय कराना।

ज्ञानार्जन– छात्रों को लङ लकार (भूतकाल) का ज्ञान कराना।

प्रवृत्ति विकास – छात्रों में जीवन को आदर्श बनाने की प्रवृत्ति जामत करना।

सहायक सामग्री

1. राम का चित्र
2. भारत का नक्शा।

पूर्व–ज्ञान

छात्रों ने रामलीला देखी है तथा वे राम के बारे में सामान्य जानकारी रखते हैं।

प्रस्तावना

चित्र बतलाकर

1. यह किसका चित्र है। भगवान राम का।
2. भगवान राम को लोग क्यों पूजते हैं। उनके आदर्श जीवन के कारण।
3. दशहरे पर रावण का दहन क्यों किया जाता है। रावण की असुरता के कारण

उद्देश्य कथन

आज हम राम के आदर्श जीवन के संबंध में पाठ रामचरितम् का अध्ययन करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

छात्राध्यापक दो अन्विति में पाठ पढ़ायेगा।

प्रथम अन्विति – सीतावनेषणाय– अवर्णयत्।

प्रथम अन्विति

अस्ति – कपटेन अह्रत।

आदर्श वाचन – छात्राध्यापक पहली अन्विति पढ़ेगा।

अनुकरण वाचन– उसके पश्चात् छात्र पहली अन्विति पढ़ेंगे।

व्याख्या

शब्द अर्थ विधि श्यामपट्ट कार्य

उत्तर–प्रदेशःपुराः (अव्यय)अनुजःविश्वामित्रचत्वारिनी (अनयत्) उत्तर प्रदेशपुराने समय मेंछोटा भाईएक राजर्षिचरले गया नक्शा बतलाकरहिन्दी पर्यायअनु+ जपौराणिक कथाहिन्दी पर्यायभूतकाल के प्रयोग द्वारा अयोध्या, मिथिला बरसाना।

द्वितीय अन्विति सीतावनेषणाम – अवर्णयत्।

आदर्श वाचन – छात्राध्यापक द्वितीय अन्विति पढ़ेगा।

अनुकरण वाचन– उसके पश्चात् छात्र दूसरी अन्विति पढ़ेंगे।

व्याख्या

शब्द अर्थ विधि श्यामपट्ट कार्य

वायुपुत्रसेतुत्यक्त्वाअगच्छताम् हनुमान पुल छोड़कर वे दोनों गये पौराणिक कथाउदाहरण द्वारात्वय + क्त्वाभूतकाल के प्रयोग

विचार विश्लेषणात्मक प्रश्न एवं श्यामपट्ट कार्य

1. दशरथस्य कति पुत्राः?
   दशरथस्य चत्वारि पुत्राः।
2. जनकः स्वसुतां सीतां कस्मै अयच्छत्?
   जनकः स्वसुतां रामाय अयच्छत्।
3. राम किमर्थ वनं अगच्छत् ?
   पितुः आज्ञया रामः वनं अगच्छत्।
4. कः सीता कपटेन अहरत् ?
   रावणः सीता कपटेन अहरत्।

कक्षा कार्य

पाठ में आयी भूतकाल की क्रियाओं को छांटिए।

गृह–कार्य

पाठ के प्रथम गद्यांश का हिन्दी अनुवाद कीजिए।

पाठ योजना –3

विद्यालय का नाम ....

दिनांक ....

छात्राध्यापक का नाम ....

कक्षा एवं वर्ग ....

विषय ....

समय ....

प्रकरण– "नीति लोका"

सामान्य उद्देश्य

1. छात्रों को आरोह अवरोह क्रम से भाव सहित कविता का सस्वर पाठ का अभ्यास कराना।
2. छात्रों को काव्यगत सौंदर्य और रस की अनुभूति कराना।
3. छात्रों की कल्पना, विचार और तर्कशक्ति का विकास करना।
4. छात्रों का संस्कृत काव्य के प्रति अनुराग उत्पन्न करना।

विशिष्ट उद्देश्य

ज्ञानात्मक – समय का सदुपयोग, नम्रता, परिश्रम, मितव्यता, परोपकार तथा प्रिय वचन के महत्व का ज्ञान कराना।

कौशल विकास– अविद्या में नञ् तत्पुरूष तथा चिन्तयेत् में विधि लिंग का प्रयोग समझाना।

अभिरूचि – छात्रों में संस्कृत के नीति श्लोकों के प्रति रूचि उत्पन्न करना।

प्रवृत्ति– छात्रों में सदगुणों को अपनाने के प्रति प्रवृत्ति जाग्रत करना।

सहायक सामग्री

(रोल अप बोर्ड पर लिखे नीति श्लोक)

पूर्व–ज्ञान

छात्र संस्कृत पद्य के बारे में सामान्य जानकारी रखते हैं।

प्रस्तावना

कागा काको धन हरे, कोयल किसको देय
मीठी शब्द चुनाय के, जग अपना कर लेय।

प्रश्न– इस दोहे के केन्द्रीय विचार क्या हैं? (मीठा बोलना)

उद्देश्य कथन

इसी प्रकार के उपदेशात्मक कुछ संस्कृत नीति लोकों का आज हम अध्ययन करेंगे।

आदर्श वाचन

छात्राध्यापक द्वारा आरोह–अवरोह के साथ पाठ पढ़ा जायेगा।

अनुकरण वाचन

तत्पश्चात् छात्रों द्वारा पाठ पढ़वाया जायेगा।

व्याख्यात्मक भाषा कार्य

भाषा बोध प्रश्न

1. विद्या कथं चिन्तनीया।
   क्षणशः विद्या चिन्तनीया।
2. अभिवादन शीलस्य कानि वर्धन्ते।
   अभिवादन शीलस्य आयु, विद्या, यशो, बलम् वर्धन्ते।
3. प्रिय वाक्येन के तुष्यन्ति।
   प्रिय वाक्येन जन्तवः तुष्यन्ति।

शब्द	अर्थ	विधि
क्षणशः कणशः	एक क्षण एक–एक कण से	शः का अर्थ बतल
कुतः	कहां	हिन्दी पर्याय
सुबद्धि	अच्छे	सुबुद्धि, कुबुद्धि
अल्पतरः	कम	हिन्दी पर्याय

सौंदर्यानुभूति

1. क्षणशः कणशः अत्र किं नाद सौंदर्यम्? – अत्र अनुप्रासः
2. सुख प्राप्तयर्थ किं कर्त्तव्यम्? – आलस्य त्यागः
3. परिहता कुत्र परिहर्तव्या? दरिद्रता बचने परिहर्तव्या।

कक्षा कार्य

किसी एक श्लोक को कंठस्थ कर सुनाओ।

गृह–कार्य

उक्त श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद करो।

पाठ योजना – 4

विद्यालय का नाम	....
दिनांक	....
छात्राध्यापक का नाम	....
कक्षा एवं वर्ग	....
विषय	....
समय	....

प्रकरण – ''श्रमार्जित लक्ष्मीः''

सामान्य उद्देश्य

1. छात्रों में शुद्ध उच्चारणपूर्वक पाठ को समझने की योग्यता का विकास करना।
2. छात्रों को संस्कृत भाषा बोलने तथा लिखने का अभ्यास करना।
3. संस्कृत के प्रति रूचि जाग्रत कर उनके चरित्र को उन्नत करना।

विशिष्ट उद्देश्य

1. बौद्धिक विकास – छात्रों को गुरूनानक के उपदेशों से परिचित कराना।
2. ज्ञानार्जन – छात्रों को नये शब्द जैसे नामधेय, तक्षक, गौरवान्वित, क्षमार्जित आदि का ज्ञान देना।

सहायक सामग्री

गुरूनानक का चित्र।

पूर्वज्ञान

छात्र सिक्ख धर्म के प्रवर्तक गुरूनानक के बारे में सामान्य जानकारी रखते हैं।

प्रस्तावना

1.	हिन्दुओं के पूजा करने के स्थान को क्या कहते हैं?	मंदिर
2.	सिक्खों के पूजा करने के स्थान को क्या कहते हैं?	गुरूद्वारा
3.	सिक्ख धर्म के संस्थापक कौन थे?	समस्या

उद्देश्य कथन –''आज हम सिक्ख धर्म के संस्थापक 'गुरूनानक देव' के जीवन की एक घटना श्रमार्जित लक्ष्मी के विषय में अध्ययन करेंगे।''

प्रस्तुतीकरण

छात्राध्यापक गुरू नानकदेव का चित्र छात्रों के सामने टांगेगा।

आदर्श वाचन– अध्यापक द्वारा आरोह–अवरोह के साथ पाठ पढ़ा जायेगा।

अनुकरण वाचन –तत्पश्चात् छात्रों द्वारा पाठ पढ़ा जायेगा।

व्याख्या

शब्द	अर्थ	विधि	श्यामपट्ट कार्य
पंजाबः	एक प्रांत	नक्शे द्वारा	
नामधेयः	नाम का	हिन्दी पर्याय	
तक्षक	सुधार, बढ़ई	हिन्दी पर्याय	
कुटीरः	झोपड़ी	,, ,,	
सेटिका	रोटी	,, ,,	
गौरवान्वित	गौरव से युक्त	गौरव+ आन्वित	

आदर्श वाचन– शिक्षक द्वारा दूसरी वार पाठ पढ़ा जायेगा।

अनुकरण पाठ– छात्र बोधपूर्वक पुनः पाठ पढ़ेंगे।

विचार विश्लेषणात्मक प्रश्न एवं श्यामपट्ट कार्य

1. गुरू नानक देवः कुत्र समुत्पन्नः?
   गुरू नानक देवः पंजाब प्रान्ते समुत्पन्नः।
2. तस्य शिष्यस्य किम् नामः?
   तस्य शिष्यस्य नामः मरदानाः।
3. तौ कुत्र अगच्छताम् ?
   तौ एकम् ग्रामम् अगच्छताम्।
4. नानकः किं स्वीकृतवान्?
   नानकः रोटिकाः स्वीकृतवान्।

कक्षा कार्य

निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

नामधेय, श्रमिक, रोटिका, शिष्यतम, गुरूकृपा

गृह–कार्य

अन्विति के प्रथम गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

पाठ योजना – 5

विद्यालय का नाम ....

दिनांक ....

छात्राध्यापक का नाम ....

कक्षा एवं वर्ग ....

विषय ....

समय ....

प्रकरण– "ग्राम्य जीवनम्"

सामान्य उद्देश्य

1. छात्रों में शुद्ध उच्चारणपूर्वक पाठ को समझने की योग्यता का विकास करना।
2. छात्रों को संस्कृत भाषा बोलने तथा लिखने का अभ्यास करना।
3. संस्कृत के प्रति रूचि जागृत कर छात्रों के चरित्र को उन्नत करना।

विशिष्ट उद्देश्य

बौद्धिक विकास– छात्रों को भारत के ग्रामीण जीवन का ज्ञान कराना।

कौशल विकास– छात्रों को ग्रामों का प्रत्यक्ष अवलोकन करने का अवसर देना।

ज्ञानार्जन– छात्रों को नये संज्ञा शब्द– विहंग, धेनूः, महिषी, बलीवर्द तथा अव्यय परितः प्रायः का ज्ञान कराना।

प्रवृत्ति विकास– छात्रों को ग्रामीण जीवन के प्रति आकर्षित करना।

सहायक सामग्री

ग्राम का चित्र

पूर्वज्ञान

छात्रों ने भारत के विभिन्न गांव देखे हैं।

प्रस्तावना

चित्र बतलाकर शिक्षक प्रश्न पूछेगा।

1. भारत के अधिकतर लोग शहर में रहते हैं या ग्राम में।
2. ग्राम के लोग अधिकतर क्या करते हैं? कृषि

उद्देश्य कथन

आज हम भारत के ग्राम्यः जीवनम् के बारे में अध्ययन करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

शिक्षक एक ही अन्विति में पाठ पढ़ायेगा।

आदर्श वाचन– शिक्षक द्वारा आरोह–अवरोह के साथ पाठ पढ़ा जायेगा।

अनुकरण वाचन– छात्रों द्वारा पाठ जायेगा।

व्याख्या

शब्द	अर्थ	विधि	श्यामपट्ट कार्य
प्रदूषणः चतुष्पादः संकल्पः आधारितः कुलया महिषी	बिगड़ना, गंदगी चौपाया, चार पांव वाला निश्चय आश्रित, निर्भर नहर भैंस	उदाहरण जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण हिन्द पर्याय हिन्दी पर्याय हिन्दी पर्याय चित्र द्वारा	

आदर्श पाठ–

शिक्षक द्वारा दूसरी बार पाठ पढ़ा जायेगा।

अनुकरण– छात्र बोधपूर्वक पुनः पाठ पढ़ेंगे।

विचार विश्लेषणात्मक प्रश्न एवं श्यामपट्ट कार्य

1. ग्रामे के वसन्ति?
   ग्रामे क भाकाः वसन्ति।
2. ग्रामे के पशवः सन्ति?
   ग्रामे धेन्वाः महिषः बलीवर्दा च सन्ति।
3. क भाकः किम् कुर्वन्ति?
   क भाकः धान्यानि उत्पादयन्ति।
4. शासनं ग्रामाणाम् उन्नतये किम् करोति?
   शासनं ग्रामाणाम् उन्नतये शुद्ध बीजानि उर्वरकाणि च वितरति।

कक्षा कार्य

मति शब्द के रूप लिखिए

गृह–कार्य

पाठ के अंतिम दो पृष्ठ खण्डों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

पाठ योजना – 6

विद्यालय का नाम	....
दिनांक	....
छात्राध्यापक का नाम	....
कक्षा एवं वर्ग	....
विषय	....
समय	....

प्रकरण – ''अल्प संचयम्''

सामान्य उद्देश्य

1. छात्रों को आरोह अवरोह पूर्वक भाव सहित कविता सस्वर पाठ का अभ्यास करना।
2. छात्रों को काव्यगत सौंदर्य और इसकी अनुभूति करना।
3. छात्रों की कल्पना, विचार और तर्कशक्ति का विकास करना।
4. छात्रों का संस्कृत के प्रति अनुराग उत्पन्न करना।

विशिष्ट उद्देश्य

1. ज्ञानात्मक– छात्रों को संचायिका योजना का ज्ञान देना।
2. कौशलात्मक– छात्रों को बचत योजना की कार्य प्रणाली समझाना।
3. अभिरूच्यात्मक– संस्कृत श्लोक पाठ के प्रति अभिरूचि जागृति करना।
4. प्रवृत्ति– छात्रों को अल्प बचत के लिए प्रेरित करना।

सहायक सामग्री

संचायिका की पास बुक की रसीद तथा किताब एवं अन्य प्रारूप।

पूर्व–ज्ञान

छात्र घर पर बचत की रकम गुल्लक में रखते हैं।

प्रस्तावना

1. आप अपनी रकम घर पर किसमें जमा करते हैं।
2. क्या बचत के लिए आपके विद्यालय में कोई योजना है। समस्या

उद्देश्य कथन

छात्र अपने बचत की रकम अपने विद्यालयों में जमा करा सकते हैं। इस योजना को संचायिका कहा जाता है।

अल्प बचत के महत्व पर आज हम अल्प संचयम् की कविता का अध्ययन करेंगे।

आदर्श वाचन – तत्पश्चात् छात्रों द्वारा कविता पाठ किया जायेगा।

व्याख्यात्मक भाषा कार्य

शब्द	अर्थ	विधि	श्यामपट्ट कार्य
पर्ण	एक सिक्का	सिक्का बतलाकर	
कर्ण	धान एक एक बीज	कण बतलाकर	
अल्प संचयम्	थोड़ी–थोड़ी बचत	हिन्दी पर्याय	
नीड	घौंसला	हिन्दी पर्याय	
रज्जु	रस्सी	रस्सी बतलाकर	
तन्तु	धागा	हिन्दी पर्याय	
उपल	पत्थर	हिन्दी पर्याय	
स्वावलम्बित	अपनी शक्ति पर निर्भर	हिन्दी पर्याय	
अनुशासनम्	रहना नियम पूर्वक रहना	हिन्दी पर्याय	

बोध प्रश्न

1. एकैकबिन्दुसंचयात् घटः कीदृशः जायते?
   एकैक–बिन्दु–संचयात् घटःपूर्णः जायते।
2. संचयात् कस्य वृद्धिः भवति?
   संचयात् धनवृद्धिः भवति।
3. संचयात् राष्ट्रस्यापि किं भवति?
   संचयात् राष्ट्रस्य मंगलम् भवति।

सौंदर्यानुभूति

1. पठ, कण–अत्र किं नाद सौंदर्यम? अत्र अनुप्रास।
2. राष्ट्रीयम् अल्पः संचयम् केन कर्त्तव्यम्?
   सर्वजनैः राष्ट्रीय अल्प संचयं कर्त्तव्यम।
3. विद्यालये अल्प संचयस्य काः योजनाः सन्ति?
   विद्यालये अल्प संचयस्य संचयिका योजना अस्ति।

कक्षा कार्य

छात्र संचायिका में अपना खाता खुलवायेंगे।

गृह–कार्य

छात्र अल्प संचयम् कविता को याद करेंगे।

पाठ योजना – 7

विद्यालय का नाम ....

दिनांक ....

छात्राध्यापक का नाम ....

कक्षा एवं वर्ग ....

विषय ....

समय ....

प्रकरण–''राष्ट्र चिह्नानि''

समस्या उद्देश्य

1. छात्रों में शुद्ध उच्चारणपूर्वक पाठ को समझने की योग्यता का विकास करना।
2. छात्रों को संस्कृत भाषा बोलने तथा लिखने का अभ्यास करना।
3. संस्कृत भाषा के शब्द भण्डार तथा उनके व्यावहारिक विकास का ज्ञान करना।
4. छात्रों की संस्कृत के प्रति रूचि जाग्रत कर उनके चरित्र को उन्नत करना।

विशिष्ट उद्देश्य

1. बौद्धिक विकास– छात्रों को राष्ट्रीय चिह्मों से परिचित कराना।
2. कौशल विकास– छात्रों को राष्ट्रगान का सस्वर अभ्यास कराना।
3. ज्ञानार्जन – छात्रों को राष्ट्र मृदा के क्षेत्र का ज्ञान कराना।
4. प्रवृत्ति विकास– छात्रों को देश प्रेम सिखाना।

सहायक सामग्री

1. राष्ट्रध्वज तथा राष्ट्र पक्षी, राष्ट्र पशु, राष्ट्र पुष्प तथा राष्ट्र मृदा एवं उनके चित्र।
2. भारत का नक्शा।

पूर्वज्ञान

छात्र राष्ट्र गीत तथा राष्ट्र भाषा के विषय में सामान्य प्रश्न पूछेगा।

प्रस्तावना

छात्राध्यापक राष्ट्रध्वज बतलाते हुए निम्नलिखित प्रश्न पूछेगा–

1. भारत का राष्ट्रध्वज कैसा है?
2. भारत की राष्ट्रभाषा कौन–सी है?
3. भारत का राष्ट्रगीत कौन सा है?

उद्देश्य कथना – आज हम राष्ट्र के विविध चिह्म राष्ट्रीय चिह्म के बारे में अध्ययन करेंगे।

प्रस्तुतीकरण – पाठ एक ही अन्विति में पढ़ाया जायेगा।

आदर्श वाचन– शिक्षक आरोह–अवरोह के साथ पाठ पढ़ेगा।

अनुकरण वाचन– तत्पश्चात् छात्रों द्वारा पाठ पढ़ा जायेगा।

व्याख्या

शब्द	अर्थ	विधि	श्यामपट्ट कार्य
शैली	ढंग, तरीका	हिन्दी पर्याय	
मुद्रा, चिह्म	सिक्का	हिन्दी पर्याय	
समृद्धि	विकास	हिन्दी पर्याय	
अराः	पहिये के आरे	चित्र बताकर	
प्रतिष्ठता	सम्मानित	हिन्दी पर्याय	
परिमार्जिता	मंजी हुई	मार्जन, मांजना	
वह	पंख	चित्र बताकर	
घ्राण	सूंघना	हिन्दी पर्याय	
सारनाथ	बनारस के पास एक स्थान	नक्शे में बतलाकर	

आदर्श वाचन– शिक्षक द्वारा दूसरी बार पाठ पढ़ा जायेगा।

अनुकरण वाचन– छात्र बोधपूर्वक पुनः पाठ पढ़ेंगे।

विचार विश्लेषणात्मक प्रश्न एवं श्यामपट्ट काय

1. अस्माकं देशस्य राष्ट्रध्वजे कतिरंगाः सन्ति?
   राष्ट्रध्वजे त्रयः रंगाः सन्ति।
2. जनगणमन इति गीतस्य प्रणेता कः अस्ति?
   राष्ट्रगीतस्य प्रणेता कविवर रविन्द्रनाथःटैगौरः अस्ति।
3. अस्माकं राष्ट्रभाषा का अस्ति?
   अस्माकं राष्ट्रभाषा हिन्दी अस्ति।
4. अस्माकं राष्ट्रपक्षी कः अस्ति?
   मयूरः अस्माकं राष्ट्रपक्षी अस्ति।
5. अस्माकं राष्ट्रीयः पशुः कः अस्ति?
   व्याघ्रः राष्ट्रीयः पशुः अस्ति।
6. अस्माकं राष्ट्र मुद्रा कृत ग्रहीता?
   अस्माकं राष्ट्र मुद्रा अशोक स्तम्भात् गृहीता।
7. अस्माकम् राष्ट्रीयपुष्पं किं अस्ति?
   कमलम् अस्माकं राष्ट्रीयपुष्पम् अस्ति।

कक्षा कार्य

राष्ट्र चिह्मनि पाठ के दूसरे पद्ययांश का हिन्दी अनुवाद कीजिए।

गृहकार्य

राष्ट्र चिह्म की सूची वाले प्रतीकों को कण्ठस्थ कीजिए।

पाठ योजना – 8

विद्यालय का नाम ....

दिनांक ....

छात्राध्यापक का नाम ....

कक्षा एवं वर्ग ....

विषय ....

समय ....

प्रकरण – ''रक्षतद् भारतम्''

समस्या उद्देश्य

1. छात्रों को आरोह–अवरोह क्रम से भाव सहित कविता के सस्वर पाठ का अभ्यास कराना।
2. छात्रों को काव्यगत सौंदर्य और रस की अनुभूति कराना।
3. छात्रों की कल्पना, विचार और तर्क शक्ति का विकास करना।
4. छात्रों में संस्कृत काव्य के प्रति अनुराग उत्पन्न करना।

विशिष्ट उद्देश्य

1. ज्ञानात्मक– भारत की सांस्कृतिक एकता का परिचय कराना।
2. कौशलात्मक– भारत के नक्शे में नदियों का स्थान बतलाना।
3. अभिरूच्यात्मक– भारत की एकता के प्रति रूचि उत्पन्न कराना।
4. प्रवृत्ति– संस्कृत पद्य को लयपूर्वक पढ़ने की रूचि उत्पन्न करना।

सहायक सामग्री

भारत का नक्शा।

पूर्वज्ञान

छात्र भारत के प्राकृतिक स्थल एवं संस्कृति का ज्ञान रखते हैं।

उद्देश्य कथन

आज हम भारत की संस्कृति के विषय में कविवर श्रीनिवास रथ की कविता रक्षतद् भारतम् का अध्ययन करेंगे।

आदर्शवाचन– छात्राध्यापक लयपूर्वक कविता का पाठ पढ़ेगा।

अनुकरण पाठ– तत्पश्चात् छात्र कविता का पाठ पढ़ेंगे।

व्याख्यात्मक भाषा कार्य

भावबोध प्रश्न

1. भारते कः प्रसिद्ध गिरिः?
   भारते हिमगिरिः प्रसिद्धः।
2. भारते काः प्रसिद्धा नद्याः?
   भारते गंगा, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी इति प्रसिद्धाः नद्याः।
3. भारते कानि प्रसिद्धनगराणि?
   भारते वृन्दावन, द्वारिका कांचीपुरम् इति प्रसिद्धानि नगराणि।
4. लोकतन्त्रोदये भारतीयाः कीदृशाः सन्ति?
   लोकतन्त्रोदये भारतीयाः संगताः सन्ति।

सौंदर्यानभूति

1. मदाकिनी, नर्मदा, वाहिनी अत्र किं नाद सौंदर्यः।
1. अत्र अनुप्रासः अलंकारः।
2. दीपावल्या उपमा किम् दत्ता।
2. नीराजना दीपावल्याः उपमा दत्ता।
3. का अस्माकं देववाणी।
3. संस्कृता वाक् अस्माकं देववाणी।

कक्षा कार्य

इस कविता का कोई एक पद्यांश याद कर सुनाओ।

गृहकार्य

इस कविता का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

शब्द	अर्थ	विधि
हिमाद्रि	हिम युक्त पर्वत हिमालय	व्याख्या
विन्ध्याहवी	विन्ध्याचल का जंगल	व्याख्या
रासलीलालयः	रास का स्थान	लीला+आलयः
नीराजना	आरती	उदाहरण
वेदवाक्	वेदवाणी	हिन्दी पर्याय
भासुरा	चमकने वाली	हिन्दी पर्याय
विश्वशम्भरा	विश्व का भरण करने वाली	व्याख्या
ऋज, अजु, साम, अथर्व	चारों वेद	व्याख्या
भेद भाव	भेद करने वाले	व्याख्या

पाठ योजना – 9

विद्यालय का नाम ....

दिनांक ....

छात्राध्यापक का नाम ....

कक्षा एवं वर्ग ....

विषय ....

समय ....

प्रकरण – ''सन्धि (दीर्घ सन्धि)'

सामान्य उद्देश्य

1. छात्रों को संस्कृत भाषा की ध्वनि का ज्ञान कराना।
2. उन्हें विविध शब्दों के रूपों के बारे में ज्ञान कराना।
3. शुद्ध वाक्य रचना, लेखन का ज्ञान कराना।
4. विद्यार्थियों की तर्कशक्ति का विकास करना।
5. उन्हें व्याकरण का व्यावहारिक ज्ञान देना।
6. विभिन्न शब्दों की व्युत्पति से शब्द भण्डार बढ़ाना।

विशिष्ट उद्देश्य

1. ज्ञानात्मक– छात्रों को दीर्घ सन्धि का ज्ञान कराना।
2. कौशलात्मक – छात्रों में सन्धियुक्त पदों को लिखने एवं समझने का कौशल उत्पन्न करना।
3. अभिरूच्यात्मक – सन्धियुक्त पदों से भाषा में लालित्य उत्पन्न होता है। अतएव सन्धियुक्त पदों के प्रयोग के प्रति अभिरूचि जागृत करना।
4. अनुभूति– सन्धि युक्त भाषा के सौंदर्य का अनुभव कराना।

पूर्वज्ञान

छात्र दीर्घ सन्धियुक्त पदो ंके बारे में सामान्य जानकारी रखते हैं।

सहायक सामग्री

रोलअप बोर्ड पर लिखे दीर्घ सन्धि के पद।

प्रस्तावना

	प्रश्न	**उत्तर**
1.		विद्यालयः शब्द में कौन से दो शब्द हैं?
		1. विद्या + आलयः
2.		रवीन्द्रः शब्द में कौन से दो शब्द हैं?
		2. रवि + इन्द्रः

3. शम्भूद्भवः शब्द में कौन से दो शब्द हैं?

3. शम्भू + उद्भवः

4. पितृणम् शब्द में कौन से दो शब्द हैं?

4. पितृ + ऋणम्

5. इन शब्दों में कौन सी सन्दि है।

5. समस्या

उद्देश्य कथन– आज हम दीर्घ सन्धि के बारे में अध्ययन करेंगे।

छात्राध्यापक एवं छात्र कियाएँ

	प्रश्न	श्यामपट्ट कार्य
1.	'हिमालय' शब्द का सन्धि विच्छेद कीजिए?	हिम + आलय
2.	इसमें पूर्व पद का अंतिम वर्ण क्या है?	अ
3.	इसमें उत्तर पद आलय का प्रथम वर्ण क्या है?	आ
4.	दोनों वर्णों पर कौन सा वर्ण हुआ है?	आ
5.	रवीन्द्र शब्द का सन्धि विच्छेद कीजिए?	रवि+इन्द्र
6.	इसमें पूर्व पर रवि का अंतिम वर्ण क्या है?	इ
7.	इसमें उत्तर पद इन्द्र का प्रथम वर्ण क्या है?	इ
8.	दोनों वर्णों के स्थान पर कौन सा वर्ण हुआ?	इ
9.	अश्रुद भवति शब्द का सन्धि–विच्छेद कीजिए।	अश्रु + उद्भवति
10.	इसमें पूर्व पद अश्रु का अंतिम वर्ण क्या है?	
11.	इसमें अर पद ऋणम् का प्रथम वर्ण क्या है ?	ऋ
12.	दोनों वर्णों के स्थान पर कौन सा वर्ण हुआ ?	ऋ

नियम

जब अ या आ के बाद आ जाता है, तो दोनों के स्थान पर 'आ' हो जाता

जब इ या ई के बाद ई या ई आता है तो, दोनों के स्थान पर 'ई' हो जाता

इस सन्धि को दीर्घ सन्धि कहते हैं।

पुनरावृत्ति

छात्राध्यापक कुछ अन्य शब्दों का सन्धि–विच्छेद करके बतलायेगा।

दीपावलिः, रत्नाकरः, जिलाधीशः, प्रधानाध्यापकः आदि।

निरीक्षण

शिक्षक छात्रों को श्यामपट्ट पर लिखे सन्धि शब्दों को अपनी अभ्यास लिखने को कहेगा। छात्रों के नकल करते समय उनका निरीक्षण भी करेगा।

गृहकार्य

छात्र अपनी पाठ्यपुस्तक के किसी भी पाठ में दीर्घ सन्धि के उदाहरण ढूंढकर विच्छेद अपनी गृह कार्य की पुस्तक में करके लावेंगे।

बालकेन्द्रित पाठ योजना

पाठदाता	कक्षा
अनुक्रमांक	कालखण्ड
विषय	समय
प्रकरण	औसत आयु
शाला का नाम	दिनांक

प्रवेशीय दक्षता

अपेक्षित दक्षता

समस्या का प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य कथन

व्यूहरचना–

अधि	शिक्षक कार्य
प्रश्न	उत्तर

मूल्यांकन कार्य–

गृह कार्य–

पाठदाता के हस्ताक्षर पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर

–– 0 ––

बालकेन्द्रित पाठ योजना–1 (गद्य)

पाठदाता	कक्षा
अनुक्रमांक	कालखण्ड
विषय	समय
प्रकरण छत्तीसगढ़ी लोकगीतानि	औसत आयु
शाला का नाम	दिनांक

प्रवेशीय दक्षता–(1) छात्र संस्कृत के स्वर व व्यंजन को सामान्य रूप से जानते हैं।

(2) छात्र संस्कृत के परिवेशीय शब्दों को जानते हैं।

(3) छात्र सामान्य रूप से संस्कृत के विसर्ग व अनुस्वार चिह्नों को जानते हैं।

(4) छात्र सामान्यतः ह्रस्व एवं दीर्घ स्वरों के उच्चारण के बारे में जानते हैं।

अपेक्षित दक्षताएँ– (1) छात्र लोकगीतों की विविधता को जान सकेंगे।
(2) छात्र लोकगीतों के छिपे मान्यताओं का बोध कर सकेंगे।
(3) छात्र विविध ऋतु गीतों के बारे मे जान सकेंगे।
(4) छात्र लोकगीतों के माध्यम से छत्तीसगढ़ की संस्कृति का बोध कर पायेंगे।

समस्या का प्रस्तुतीकरण

(1) छत्तीसगढ़ मुख्य लोकभाषा किमस्ति–(छत्तीसगढ़ी मुख्या लोकभाषा)

(2) विवाहावसरे कानि कानि लोकगीतानि प्रचलितानि–(चूलमाटी, ... भाँवर विदा गीता. .... प्रचलितानि)

(3) देव्याः गीतं केन गीतेनख्यातम्–(जसगीतेन, ख्याातम्)

उद्देश्यकथन–अद्य वयं छत्तीसगठस्य लोकगीतानि इति पाठं पठिष्यामः।

व्यूह रचना

पाठ्य वस्तु अधि.......... प्रतिफल

अस्मांक (1) छात्र लोक गीतों की विविधताओं के बारे में जानेंगे।

छत्तीसगस्य गीतन्ते (2)छात्र लोकगीतों में संस्कार गीत, धार्मिक गीत, ऋतु गीत का बोध करेंगे। सोहर, विवाह सधौरी गीत, चूलमाटी, ...गीत, भाँवर गीत, विदा गीत की जानकारी प्राप्त करेंगे।

शिक्षण कार्य–(1)शिक्षक छात्रों को अनुच्छेद पढ़कर सुनायेंगे।
(2)शिक्षक छात्रों का विविध संस्कार गीतों से अवगत करायेंगे।
(3) व्याकरण के गठिन शब्दों से अवगत करायेंगे।

लोकगीतेषु–लोक गीतों में(सप्तमी बहु बचन)
अस्मिन् राज्ये–इस राज्य में
प्रचलन्ति–प्रचलित है
संस्काराणाम्–संस्कारों का
इत्युच्यते–इति+उच्यते–ऐसा कहा जाता है। (यण स्वर संधि)

प्रश्न 1.–छत्तीसगढ़ गीतानां परम्परा कासु भाषासु?–लोक भाषासु
प्रश्न 2.–सधौरी गीतं कदा गीयते?–सीमन्त संस्कारावसरे
प्रश्न 3.–लोक गीतेषु कानि–कानि गीतानि प्रसिद्धिानि?–चूलमाटी, ..., जेवनार–भाँवर, विदा गीत............प्रसिद्धानि।

मूल्यांकन कार्य–(1) रिक्त स्थानं पूरयतु–
(अ) गीतेषु .... च प्रमुखे स्तः।
(ब) संस्कार गीतं धार्मिकोत्सवगीतं ऋतु गीतानिच ....।
(स) जनैः एतानि गीतानि .... गीयन्ते।

गृह कार्य–

संस्कृत भाषायां अनुवादो कर्त्तव्यः–

(1) लोक गीतों में विविधता है।

(2) लोकगीत, लोकभाषा में अवलम्बित है।

(3) गीतों में विवाह और सोहर गीत प्रमुख है।

पाठदाता के हस्ताक्षर | पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर

— 0 —

बालकेन्द्रित पाठ योजना–2 (पद्य/श्लोक)

पाठदाता	कक्षा
अनुक्रमांक	कालखण्ड
विषय	समय
प्रकरण	औसत आयु
शाला का नाम	दिनांक

प्रवेशीय दक्षता–

(1) छात्र स्वर और व्यंजन के विषय में सामान्य ज्ञान रखते हैं।

(2) छात्र ह्रस्व एवं दीर्घ स्वरों के उच्चारण के बारे में जानते हैं।

(3) छात्र सुभाषित वचनों के विषय में सामान्य रूप से ज्ञान रखते हैं।

(4) छात्र आचार संबंधित बातों को जानते हैं।

अपेक्षित दक्षताएँ–

(1) छात्र यति गति वलय के अनुसार श्लोकों का उच्चारण कर सकंगे।

(2) छात्र काव्यगत सौन्दर्य की अनुभूति कर सकेंगे।

(3) छात्र श्लोकों में निहित भावों को आचरित कर सकेंगे।

(4) छात्र व्याकरणगत विधाओं का बोध कर सकेंगे।

समस्या का प्रस्तुतीकरण–

(1) वयं रामनवमीं कदा मन्यामहे? (भगवतः रामस्य जन्मदिवसः)

(2) जन्माष्टयाः मान्यतायाः किं कारणम्? (श्रीकृष्णस्य जन्मदिवसः)

(3) महाभारतस्य युद्धं कस्य मध्ये अभवत्? (कौरवः पाण्डवश्च मध्ये)

(4) अर्जुनः को आसीत्? (पावडव कृष्णयोः सखा आसीत

(5) भगवान् कृष्णः अर्जुन किं उपदिशति? (गीतां उपदिशति)

उद्देश्यकथन–अद्य वयं गीता .... इति पाठं पठिष्यामः।

व्यूह रचना

पाठ्य वस्तु	अधि................. प्रतिफल
नहि ज्ञानेन	(1) छात्र ज्ञान जैसा पवित्र कुछ भी नहीं है। इसका बोध करेंगे।
	(2) ज्ञान की तुलना पवित्रता से की है। छात्र इसका ज्ञान प्राप्त करेंगे
	(3) उस ज्ञान को शुद्ध अन्तःकरण से आत्मा में प्राप्त किया जा सकता है
ईश्वरः सर्वभूतानां	(4) शरीर के यन्त्र वत आरूढ़ ईश्वर सभी के हृदय में स्थित है।
	(5) छात्र व्यक्तिगत सौन्दर्यानुभूति करेंगे।

शिक्षक कार्य–

(1) शिक्षक गीतों के श्लोकों का लय, गति, यति के अनुसार सस्वर वाचन करेंगे।

(2) शिक्षक, छात्रों को सौन्दर्यानुभूति का बोध करायेंगे।

(3) व्याकरणगत कठिन अवधारणाओं को स्प   ट करेंगे।

सदृशम्–के समान

इह–संसार

विन्दति–पा लेता है

सर्मभूतानाम्–सभी प्राणियों में

प्रश्न 1.–एतयोः श्लोकयोः वक्ता कोडस्ति (कृष्णः)

प्रश्न 2.–एतयोः श्लोकयोः कः कथयति (कृष्णः)

प्रश्न 3.–सः कं कथयति (अर्जुनम्)

प्रश्न 4.–किं समं .... पवित्रम् नास्ति

मूल्यांकन–

कीदृशः

(1) ईश्वरः स्थितः

(2) सर्वभूतानां हृद्देशे को तिष्ठति

(3) कृष्णः कं उपदिशति

गृह कार्य–

(1) न हि ज्ञानेन सद्दशं ....

(2) ईश्वरः सर्वभूतानां ....

एतयोः श्लोकयोः

लयसहितं सस्वरवाचनं कुर्यात्

पाठदाता के हस्ताक्षर   पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर

पाठदाता के हस्ताक्षर   पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर

बालकेन्द्रित पाठ योजना–3 (दीर्घ संधि)

पाठदाता	कक्षा
अनुक्रमांक	कालखण्ड
विषय	समय
प्रकरण दीर्घ संधि	औसत आयु
शाला का नाम	दिनांक

प्रवेशीय दक्षता–

(1) छात्र अ + अ से बने दीर्घ आ के बारे में सामान्य जानकारी रखते हैं।

(2) छात्र, इ + इ से बने दीर्घ ई के बारे में सामान्य जानकारी रखते हैं।

(3) छात्र उ + उ से बने दीर्घ ऊ के बारे में सामान्य जानकारी रखते हैं।

(4) छात्र ऋ + ऋ से बने दीर्घ ॠ के बारे में सामान्य जानकारी रखते हैं।

अपेक्षित दक्षताएँ–

(1) छात्रों को दीर्घ संधि का ज्ञान कराना।

(2) संधियुक्त पदों को लिखने व समझने की योग्यता विकसित करना।

(3) संधियुक्त भाषा सौन्दर्य का अनुभव करना।

(4) संधियुक्त भाषा में लालित्य उत्पन्न करना।

समस्या का प्रस्तुतीकरण–

(1) शिवालयः इति शब्दे कौ द्वौ शब्दौ स्तः (शिव+आलयः)

(2) कवीन्द्रः इति शब्दे कौ द्वौ शब्दौ स्तः (कवि+इन्द्रः)

(3) सूक्तिः इत्यस्मिन कौ द्वौ शब्दौ स्तः (सु+उक्तिः)

उद्देश्यकथन–अद्य वयं दीर्घ संधिः इति पाठं पठि यामः।

व्यूह रचना

पाठ्य वस्तु अधि..................... प्रतिफल

दीर्घ स्वर संधि

(1) छात्र उच्चारण मे जब परस्पर वर्ण आपनी पृथक मात्रा को छोड़कर विकृत रूप धारण करते है, इसका बोध करेंगे।

(2) छात्र अ+अ के संधि से बनने वाले शब्दों को जानेंगे।

(3) छात्र इ+इ के संधि से बनने वाले शब्दों का बोध करेंगे।

(4) छात्र उ+उ के संधि से निर्मित शब्दों को जानेंगे।

(5) छत्र ऋ+ऋ के संधि से बने शब्दों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

(4) छात्र उ+उ के संधि से निर्मित शब्दों को जानेंगे।(5) छत्र ऋ+ऋ के संधि से बने शब्दों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

शिक्षक कार्य–

(1) शिक्षक छात्रों को संधि की परिभाषा बताते हुए संधि के नियमों का करायेंगे। अकः सवर्ण दीर्घः

(2) जब अ के बाद अ या आ आता है तो दोनों के स्थान पर आ हो जाता है यथा–विद्या+आलयः

(3) जब इ या ई के बाद इ या ई आता है तो दोनों के स्थान पर ई हो जाता है। यथा–गिरि+ईश

(4) जब उ या ऊ के बाद उ या ऊ आता है तो दोनों के स्थान पर ऊ हो जाता है। यथा–भानु–उदयः

(5) जब ऋ या ऋ के बाद ऋ या ऋ आता है तो दोनों के स्थान पर ऋ हो जाता है। इस संधि को दीर्घ संधि कहते है। पितृ+ऋणम

प्रश्न 1.–विद्यालयः इति शब्दस्य संधि विग्रहं करोतु। (विद्या+आलयः)

प्रश्न 2.–भानूदयः इति शब्दस्य संधि विग्रहं कुर्यात्। (भानु+उदय)

प्रश्न 3.–श्री+ईशः इति शब्दस्य संधिं करोतु। (श्रीशः)

प्रश्न 4.–मातृणम् इति शब्दस्य संधिं करोतु।

मूल्यांकन–

अधोलिखित रिक्त स्थानस्य पूरयतु–

(1) मुनि + ... मुनीद्रः

(2) .... + उत्सवः – वधूत्सवः

(3) .... + ... – हिमालयः

गृह कार्य–

छात्र अपनी माठ्य पुस्तक में निहित दीर्घ संधि के 10 उदाहरण, विग्रह कर लायेंगे। (छात्राः स्वकीये पाठ्य पुस्तके निहित् संधि मालक्ष्य दशउदाहरणं आनयन्तु)

पाठदाता के हस्ताक्षर   पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर

इकाई–6
संस्कृत निबंधाः
1. परोपकारः

परेषाम् उपकारः परोपकारः कथ्यते। यः पुरुषः स्वार्थं त्यक्त्वा परकार्यं करोति, सः धन्यः। सर्वाप्रकृतिः उपदिशति परोपकारम्। नद्यः जलानि प्रयच्छन्ति, वृक्षाणि फलानि पुष्पाणि पत्राणि च यच्छन्ति। अस्मिन् संसारे सर्वे पदार्थाः परोपकारे निरताः सन्ति। अस्मिन् संसारे मनुष्य एव कर्तव्याकर्तव्यविचारयितुं समर्थोऽस्ति। परस्परसाहाय्यं बिना मानवजीवनं पुष्पहीनं पादप इव महत्वहीनं भविष्यति। शास्त्रेषु परोपकारस्य बहुमहत्वं वर्णितमस्ति। परोपकारेण मानवसमाजं मानवाणां शान्तिः सुखं च वर्धते। परोपकारसदृशः अन्यत् तपो न विद्यते। परोपकारः मानवस्य श्रेष्ठतमो धर्मः अस्ति।

परोपकारे मानवः स्वसुखम् त्यक्त्वा अन्यत् मानवस्य दुःखं हरति। आत्मपीडया यदि अन्यमानवस्य पीडा हरति तेन सुखतरं किम्। एतत् परोपकारगुणस्य महात्म्यं यत् मानवेषु समाजसेवा भावना, देशभक्ति भावना, दीनोद्धरण भावना, सहानुभूतिर्गुणोदयश्च वर्धते। यो परोपकारं करोति न केवलं सः अपितु उपकृत व्यक्तिरपि सुखी भवति। परोपकारी पुरुषस्य मानसो पवित्रः सदयः, सरसः च जायते। सत्पुरुषाः स्वकीयं दुःखं विस्मृत्य परोपकारकरणे प्रसन्नाः भवन्ति यथा हि–

श्रोत्रम् श्रुतनैव न कुण्डलेन, दानेन पाणिर्न तु कंकणेन।
विभाति कायः खलु सज्जनानां परोपकारेण न तु चन्दनेन।।

परोपकारस्य भावना प्रकृत्याः अनुकरणीया। वृक्षाः आदान भावना रहिता फलानि ददति, नद्यश्च सलिलम् प्रवहन्ति। गावश्च महिषश्च अमृतोपमं दुग्धं ददति।

परोपकारभावनायैव महाराज शिबिः कपोतस्य रक्षार्थं स्वहस्ताभ्यां निजमांसमुत्कृत्य श्येनाय प्रायच्छत्। महाराजो दधीचिः सुराणां हिताय स्वकीयानि अस्थीनि अददात् महात्मागान्धिनोऽपि देशसेवायै विविधानि कष्टानि अनुभवति स्म। सज्जनानाम् परोपकारैव आभूषणमस्ति यथा–

पिबन्ति नद्यः स्वमेव नाम्भः स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः।
ना खादन्ति सस्यं खलु वारिवाहा, परोपकाराय सतां विभूतयः।।

2. सत्सङ्.गतिः

सज्जनानां संगतिः सत्सङ्.गतिः कथ्यते। ये मानवाः स्वहानिलाभयोः चिन्तां न कृत्वा परेषां हितं कुर्वन्ति ते सज्जनाः कथ्यते। सज्जनानां संसर्गेण मनुष्यः सज्जनः भवन्ति। दुर्जनानां संगेण मनुष्यः दुर्जन भवति। सतां संगेन् दुष्टाः अपि जनाः सज्जनाः भवन्ति। यदि कोऽपि जनः श्रेष्ठः भवतुमिच्छति तदा सः सत्सङ्.गतिः कुर्यात्। कीटोऽपि पुष्पसाहचर्येण देवानां शिरसि आरोहति, सत्सङ्.गेण इन्द्रियाणां वशः भवति। लौहमपि काष्ठसंगात् जलेषु तरति। लोके सत्सङ्.गतिः कल्पलता इव अस्ति। सत्सङ्.गतिः जडतां हरति। सत्सङ्.गतिः मानोन्नतिं दिशति केनापि कविना उक्तं–

जाड्यं धियो हरति सिंचति वाचि सत्यम्।
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम्।
सत्सङ्.गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्।।

संसारे सर्वेजनाः सुखम् इच्छन्ति। सुखस्य प्राप्तुं विद्या, धनं सत्सङ्.गतिः अनेके उपायाः सन्ति। तेषु सर्वेषु सत्सङ्.गतिः प्रधानतम् अस्ति। सत्सङ्.गतिःप्रभावेण् मानवः यथार्थः मानवः भवति। किमपि एतादृशं कार्यम् न अस्ति यत् सत्संगत्याः साध्यं न भवति। विद्योत्तमा संगेन् कालिदासः महाकविः संजातः। बाल्मीकिः अपि सत्सङ्.गतिः प्रभावेण आदिकविः महर्षिं च अभवत्।

3. विद्या

यया जना विदन्ति जानन्ति वा सा विद्या। विद्या सर्वेषां धनानां श्रेष्ठं धनमस्ति। उच्यते च ''विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।'' एतयैव मनुष्यो, मनुष्यो भवति अन्यथा ''विद्याविहीनः पशुः।'' इदं चौराश्चोरयितुं बान्धवाश्चविभाजियतुं न शक्नुवन्ति। कथ्यते च 'न चौरहार्य न च भ्रातृभाज्यम्।' व्यये कृते इदं धनं वध ति एव।

विद्वान् सर्वत्र पूज्यते विदेश–गमने विद्या परमसहायिका भवति। यस्य विद्या नास्ति सः नेत्रयुक्तोऽपि अन्धो एव विद्या बलेन जनाः विविधानाविष्कारान् कर्त्तुं समर्थाः भवन्ति। विद्यायाः बहूनि अङ्.गानि। नहि कोऽपि सर्वेषु विषयेषु पारङ्ग.तः भवितुं शक्नोति।
परमेकस्मिन् विषये निष्णातो भवितुं अर्हति। अतः प्रमादं त्यक्त्वा विद्याध्ययने तत्पराः भवेयुर्यतः विद्यास्माकं परोपकारिणी उक्तं च–

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुङ्.क्ते,
कान्तेव चाभिरमयत्यपनीय खेदम्।
लक्ष्मी तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिम्।
किं किं साधयति, कल्पलतेव विद्या।।

4. संस्कृत–भाषायाः महत्वम्

परिष्कृता शुद्धा दोषरहिता भाषा, संस्कृत भाषा इति कथ्यते। संसारे सर्वासु भाषासु एका संस्कृत भाषा एव अतिप्राचीना अस्ति। एषा च अनेक–भाषाणाम् जननी पोषिका च अस्ति। अन्याश्च भाषा प्राकृत अपभ्रंशा वा कथ्यन्ते यादृशं साहित्यं अस्यां प्राप्यते न तादृशं अन्यासु भाषासु विद्यते। साहित्यस्य दृष्टया एषा समृद्धाः अस्ति। संस्कृतभाषा सर्वासां भारतीय–भाषाणाम् जननी पोषिका च अस्ति। प्राचीनकाले सर्वे–जनाः संस्कृतमेव वदन्ति स्म। तस्मिन् काले एषा लोकभाषा आसीत्। विश्व–साहित्ये ऋग्वेदः प्राचीनोऽस्ति। नास्ति विश्व साहित्ये ततः प्राचीनः कोऽपिग्रन्थः। स च संस्कृत भाषायामेव अस्ति। सम्पूर्णं भारतवर्षं अनया एव सूत्रे निबद्धम्। संस्कृतस्य साहित्यम् अति विशालम्

अस्ति। अस्मिन् खण्डकाव्य–महाकाव्य–गीतिकाव्य–नाटक दर्शन–आयुर्वेदादयः सर्वे विद्यन्ते। बाल्मीकि–कालिदास–अश्वघोषाद्यः ऐतेषां प्रसिद्धाः कवयः सन्ति। संस्कृतस्य दर्शनशास्त्रम् अद्यापि जगति अद्वितीयम् स्थानं अर्हति। अस्य व्याकरणम् विज्ञानं आश्चर्यजनकमस्ति। भारतस्य यत्र सांस्कृतिकम् महत्वम् अस्ति तत्रापि अस्यामेव भाषायाम् सुरक्षितमस्ति। अस्माकं पूर्वजानां विचाराणि अस्यामेव भाषायां सन्तिः, अतः अस्माभिः अस्याः प्रचारः कर्त्तव्यः।

5. अस्माकं विद्यालयः

अस्माकं विद्यालयः रायपुरनगरे स्थितोऽस्ति। अस्माकं विद्यालये त्रिशतं छात्राः सन्ति। मम कक्षायां त्रिंशत् छात्राः पठन्ति। अस्माकं विद्यालये पञ्चविंशति अध्यापकाः सन्ति। तेऽस्मान् पुत्रवत् स्निह्यन्ति। अहं प्रातः उत्थाय दन्तधावनं कुर्चिकिया मुखं मार्जयित्वा पाठं पठामि। स्नानोपरान्ते भोजनं कृत्वा, पुस्तकं नीत्वा च विद्यालयं गच्छामि। तत्र प्रार्थनां कृत्वा कक्षायां प्रविशामि। अस्माकं विद्यालयस्य शिक्षकाः स्वविषये प्रवीणाः सन्ति। तेऽस्मान् स्वविषयान् अध्यापयन्ति। संस्कृत विषयः मह्यं अतीव रोचते। मम विद्यालये अध्ययनान्तरं क्रीडाऽपि भवति। वयं निर्धारित समये क्रीडाङ्गणे गत्वा विविधाः क्रीडाः खेलामः। क्रीडाशिक्षकः अस्माकं मार्गदर्शनं करोति। अस्माकं विद्यालये एकः पुस्तकालयः अस्ति। तत्र गत्वा वयं विविधानि पुस्तकानि पठित्वा ज्ञानलाभाः कुर्मः। विद्यालये शोभनं उद्यानमपि अस्ति। उद्याने विविधानि पुष्पाणि विकसन्ति तान् दृष्टवा वयं आह्लादं अनुभवामः। मम विद्यालये वार्षिकोत्सवस्यापि आयोजनंभवति। विविधैः सांस्कृतिककार्यक्रमैः अस्माकं मनांसि रञ्जयति। मे विद्यालयः मेऽतीवप्रियः

6.अनुशासनम्

पूर्वनिश्चितानां नियमानां ज्येष्ठानाम् आज्ञायाः पालनमेव अनुशासनं इति कथ्यते। अस्माकम् प्रत्येके कार्ये अनुशासनस्य महत्वं अनुभूयते। अनुशासनमेव मानव–जीवनस्य आधारशिला अस्ति। यदि विश्वे किंचिदपि अद्वितीयं धनमस्ति तदस्ति केवलं अनुशासनम्। अनुशासनम् रहितः पुरुषः अतीवोन्नतं स्थानं लब्ध्वा अपि निर्गन्धम् पुष्पमिव त्याज्यम् भवति। अनुशासन विहीनः व्यक्ति प्राणरहितशरीरमिव कस्मैऽपि न रोचते। सः समाजे कुष्ठरोगः भवति। शिक्षायाः मनुष्यस्य उन्नतिः भवति। परम् अनुशासनम् बिना शिक्षायाः महत्वं नास्ति। यदि वणिक व्यापारे उच्छृखलतायाः आचरणं करिष्यति सदा सः व्यापारे कदापि लाभम् न प्राप्स्यति। यदि सैनिकाः स्वाधिकारीणाम् आदेशान् न पालयेयुः तर्हि देशस्य स्वतन्त्र्यम् अपि नश्यते। अनेन सिद्धयति यत् जीवनस्य प्रत्येक क्षेत्रे अनुशासनस्य महती आवश्यकता वर्तते। अनुशासनस्य पालनस्य भवना बाल्यादेव प्रवर्तते। बाल्यकाले बालकानां स्वभावः कोमलः भवति। अस्मादेव कारणात् विद्वद्भिः बाल्ये अनुशासनस्य महत्वं उपदिष्टम्। शिक्षायाः उद्देश्यं जीवनस्य सर्वविधिमुन्नतीकरणं अस्ति। सा उन्नतिः अनुशासनं बिना विद्यार्थिनः स्वगुरुणाम् आज्ञायाः पालनम् न करिष्यति, स्वपाठं न स्मरष्यति परिज्ञाने शिक्षणकाले ते किमपि न ज्ञास्यन्ति। अतएव सत्यमुक्तम्–''अनुशासनं शिक्षाया'ः मुख्यं लक्ष्यम्''।

7. ग्राम्य–जीवनम्

भारतः ग्राम्याणां देशः अस्ति। भारतस्य मूलसंस्कृतिः सभ्यता च ग्रामेषु एव दृश्यते। ग्राम्य–जीवनम् स्वाभाविकं सरलम् च अस्ति। तत्र कृत्रिमतायाः नामापि न दृश्यते। ग्रामाणां निवासिनः प्रायेण कृषकाः सन्ति। कृषि एव तेषाम् जीविकायाः मूलाधारः। ते उदारतायाः सरलतायाश्च अवताराः भवन्ति। प्रातरेव उत्थाय गो सेवां कुर्वन्ति ततः क्षेत्राणि गच्छन्ति। तत्र सायं यावत् घोर–श्रमं कुर्वन्ति। रात्रौ ते गोष्ठीषु गीतानिगीत्वा विविधान् कथान् कृत्वा च स्वमनोरंजन कुर्वन्ति। ते स्वच्छवायौ श्वसन्ति, निर्मले प्रकाशे संचरन्ति, शुद्धं जलं पिबन्ति च। तेषां वस्त्राणि अपि साधारणानि भवन्ति। ते अहर्निशं घोरं परिश्रमं कृत्वा अन्येभ्यः वस्त्रं भोजनादिकं यच्छन्ति किन्तु स्वयं अर्धबुभुक्षिता अर्धनग्नाश्च सन्तिः स्वभाग्ये संतोषम् अनुभवन्ति। अशिक्षा, ऋणाधिक्यं, सामाजिककुरीतयः, कलहश्च कृषकस्य दुर्दशायाः प्रध ाानकारणानि सन्ति। शिक्षायाः प्रसारेण आर्थिक सहायता द्वारा ग्राम्य जीवनम् सुखकरं भविष्यति। अस्माकं वर्तमान–शासनेतद् विषये महत्प्रयतितम्। शिक्षाप्रचारेण उन्नतबीजोर्वरक आदि प्रयोगेण ध ानसाहाय्येन यन्त्र–प्रयोगेण च ग्रामाणाम् दशा उत्तरोत्तरम् उन्नतिपथम् गच्छति। अशास्यते यत् शीघ्रमेव सा श्रेष्ठा भविष्यति।

8. पुस्तकम्

एतद् मम पुस्तकम् अस्ति। एतद् तव पुस्तकम् अस्ति। रामस्य अपि पुस्तकम् अस्ति। एतानि सर्वाणि पुस्तकानि सन्ति। मम पुस्तके चित्राणि सन्ति। एतानि चित्राणि रम्याणि सन्ति। रमणीयं चित्रं मम चित्तं आनन्दयति। सचित्र पुस्तकं मम प्रियम्। तव पुस्तकेऽपि चित्राणि सन्ति, किन्तु रामस्य पुस्तके एकम् अपि चित्रं न अस्ति। अहं पाठशालां गच्छामि पुस्तकं नयामि च। अध्यापकः प्रथमं पुस्तकम् उद्घाटयति वाचयति च। पश्चात् अहं पुस्तकं उद्घाटयामि पाठं वाचयामि च। वयं सर्वे पुस्तकानि उद्घाटयामः पाठान् पठामश्च। पुस्तकैः विविधज्ञानं लभ्यते। पुस्तकपठनेन ज्ञानलाभः भवति। ''संस्कृत व्याकरणानुवाद'' पुस्तकम् अतिप्रियम्। पुस्तकानि अस्माकं मित्राणि। एतेषां सङ्.गतिरतीवा लाभप्रदा। एतेषु वयं बाल्मीकि–कालिदास–शंकराचार्यादीनां महात्मनां साक्षात्दर्शनं कुर्मः। अतोऽस्माभिः पुस्तकानि रक्षणीयानि। तेषु यत्र कुत्रचित् न लेखनीयम्। स्वगृहे च स्वल्पः पुस्तकालयो निर्मातव्यः।

9. महाकवि कालिदासः

कालिदासो भारतस्य श्रेष्ठतमः कवि। सः न केवलं भारतस्य प्रत्युत विश्वस्य श्रेष्ठतमः कविः। अतएव सः कविकुलगुरुरिति कथ्यते। तेन विरचिताः सप्त ग्रन्थाः अतीवप्रसिद्धाः। तेषु द्वे महाकाव्ये–रघुवंशम्–कुमारसम्भवं च द्वेखण्डकाव्ये ऋतुसंहारं मेघदूतं च। त्रीणि नाटकानि मालविकाग्निमित्रं विक्रमोर्वशीयम् अभिज्ञान शाकुंलतम् च। एषु मेघदूतस्य शाकुन्तलस्य च प्रचारो विदेशेषु अपि वर्तते। विश्वस्य सर्वास्वपि प्रमुखाभाषासु कालिदासस्य ग्रन्थाः सानुवादाः लभ्यन्ते। जर्मन देशीयः गेटेनाम कविस्तु शाकुन्तलं पठित्वाऽऽनन्देनऽनृत्यत्। कालिदास–नाटकानि अद्यापि न केवले भारते प्रत्युत विश्वस्य प्रसिद्धेषु नगरेषु अभिनीयन्ते।

कालिदासस्य जन्म कदा जातमिति न विदितम्। ख्रीष्टाब्दस्य चतुर्थशताब्द्यां सः जातं इति बहवो मन्यन्ते। केचन विक्रमस्य प्रथमशताब्द्यां जातं इति स्वीकुर्वन्ति। परं तस्य निवासः मध्यप्रदेशे–उज्जयिन्यामभवत् इति निश्चितम्। उज्जयिन्यां प्रतिवर्षे कालिदासमहोत्सवो भवति।

कालिदासस्य उपमाः अतीव प्रसिद्धाः। कथितश्च–''उपमा कालिदासस्य'' इति। सः भारतस्य अति मनोरमं वर्णनम् अकरोत्। तेन तुल्यः कोऽपि कविः न अद्यावधि अजायत्। अतएव उक्तम्

एकोऽपि जीयते हन्त कालिदासो न केनचित्।

10. दीपावलिः

जीवनसंग्रामे रतानां जनानां खेदनिवारणाय देशे–देश उत्सवाः भवन्ति। उत्सवानां अभावे जनजीवनं नीरसं जायते। भारतवर्षे–अपि बहवः उत्सवाः भवन्ति। तेषु उत्सवेषु मुख्यं दीपावली, रक्षाबन्धनं, विजयदशमी, होलिका च सन्ति। दीपमालिका कार्तिकमासस्य कृष्णपक्षे अमावस्यायां तिथौ भवति। मनुष्याः गृहाणि सुधया अवलिम्पन्ति, प्राङ्ग.णं च गोमयेन लिम्पन्ति। तेन मशकानां विनाशः भवति। जनाः रात्रौ तेलैः वर्तिकाभिः च पूर्णानि दीपान् प्रज्वालयन्ति। ते लक्ष्म्याः देव्याः पूजनं मन्त्रैः नैवेद्येन, पुष्पैः च कुर्वन्ति। दीपैः नगरं प्रकाशितम् भवति। बालाः मोदन्ते मिष्टान्नं च भक्षयन्ति। एवं जनाः धनदायादेव्याः अभिनन्दनं कुर्वन्ति।

दीपावली समये वणिजोऽपि स्वआपणान् बहुविधं सज्जयन्ति। विद्युद् दीपकानां प्रकाशः आपणेषु नितरां शोभते। नानाविधानि वस्तूनि क्रयविक्रयाय प्रसारितानि भवन्ति। बालाः बहुप्रकारकैः क्रीडनकैः मनोविनोदयन्ति। अस्मिन् पर्वणि बालकाः नानाविधानिस्फोटकानि स्फोटयन्ति। अयं नात्युष्णो नास्त्यतिशीतो भवति। तेन मोदन्तेऽस्मिन् महोत्सवे नरः नार्यश्च।